हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची • शुक्रवार • 24.01.2025 • वर्ष : 15 • अंक : 183 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

छत्तीसगढ़ में पिछले 13 महीनों में नक्सलियों से दस बड़ी मुठभेड़, शीर्ष कैडर्स सहित 240 नक्सली मारे गए

एजेंसी

जगदलपुर : छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित इलाकों में 1 जनवरी 2024 से 20 जनवरी 2025 तक 13 महीनों में अब तक सुरक्षाबलों से मुठभेड़ में 240 नक्सली मारे गए हैं। इनमें 25 लाख से एक करोड़ तक के इनामी नक्सली और उनके शीर्ष कैडर्स शामिल हैं जबकि आंध्र प्रदेश, ओडिशा, तेलंगाना और महाराष्ट्र में मारे गएनक्सलियों की संख्या इनके अतिरिक्त है। बस्तर आईजी सुंदरराज पी. ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि बस्तर संभाग के सुकमा, बीजापुर और नारायणपुर जिले आबूझमाड़ में सर्वाधिक नक्सल प्रभावित जिले हैं जहां पर सुरक्षाबलों बड़े अभियान चलाए हैं। पिछले 13 महीनों में छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों की नक्सलियों की दस बड़ी मुठभेड़ हुईं। इनमें अब तक सीसीएम, एससीएम, डीकेएसजेडसी कैडर के नक्सली मारे जा चुके हैं। इन पर 25 लाख से लेकर 1 करोड़ तक का इनाम घोषित था। हाल ही में मारे गये कुख्यात नक्सली नेता एक करोड़ का इनामी नक्सली जयराम उर्फ चलपती सहित रामचन्द्र उर्फ कार्तिक उर्फ दसरू उर्फ जीवन पद (एस.सी.एम.) ओडिशा स्टेट कमेटी सदस्य, सचिव पश्चिम ब्यूरो मारा गया है। बीजापुर जिले के जंगल में तेलंगाना सीमा पर 16 जनवरी को हुई मुठभेड़ में 50 लाख रुपये के इनामी नक्सली दामोदर को भी मुठभेड़ में ढेर कर दिया गया है। इसी तरह रणधीर, नीति उर्फ निर्मला, जोगन्ना, दसरू, रूपेश, शंकर राव जैसे डीकेएसजेडसी (दंडरारण्य स्पेशल जोनल कमेटी), टीएससी कैडर के नक्सली मारे गए हैं। ये सभी 25-25 लाख रुपये के इनामी नक्सली थे। बीते 4 अक्टूबर 2024 को थुलथुली में हुई सबसे बड़ी मुठभेड़ में एक साथ 38 नक्सली मारे गये थे।

13 महीने में ये हुईं 10 बड़ी मुठभेड़- वर्ष 20-21 जनवरी 2025, गरियाबंद में 16 नक्सली मारे गये। -16 जनवरी 2025, बीजापुर जिले पुजारी कांकेर मुठभेड़, 18 नक्सली ढेर। -22 नवंबर 2024, सुकमा जिले में 10 नक्सली ढेर। -04 अक्टूबर 2024, थुलथुली मुठभेड़, 38 नक्सली ढेर।-3 सितंबर 2024, दंतेवाड़ा में 9 नक्सली ढेर। -15 जून 2024, अबूझमाड़ में 8 नक्सली ढेर। -23 मई 2024, अबूझमाड़ के रेकावाया में 8 नक्सली ढेर। -10 मई 2024, बीजापुर के पामेड़ इलाके में 12 नक्सली ढेर। -29 अप्रैल 2024,नारायणपुर में 10 नक्सली ढेर।-16 अप्रैल 2024, कांकेर में 29 नक्सली ढेर। -02 अप्रैल 2024, बीजापुर के कोरचोली में 13 नक्सली मारे गये हैं।

इन दस मुठभेड़ में छोटे-बड़े कैडर के 171 नक्सली मारे गए। इस तरह इन 13 महीनों में कुल 240 नक्सली मारे जा चुके हैं। इसमें कई बड़े कैडर्स के नक्सली भी शामिल हैं। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का दावा है कि पूरे देश से 31 मार्च 2026 तक बस्तर से नक्सलवाद का खात्मा कर दिया जाएगा। शाह के नक्सलवाद के खात्मे के लिए तय किए गये लक्ष्य को प्राप्त करने में केंद्र की सरकार एवं राज्य के सरकारों के बीच योजनाबद्ध तरीके से सटीक रणनीति का क्रियान्वयन शुरू है। सुरक्षाबलों के संयुक्त अभीयान में उनके गढ़ में ही घेरने की नई बदली हुई रणनीति में जिलों के साथ ही अब 2 राज्यों की सीमा पर भी अपनाई जा रही है। छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में सफलता का सबसे बड़ा कारण संयुक्त अभियान है। इसे इस तरह समझा जा सकता है कि पुलिस को अगर सूचना मिलती है कि दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा सीमा पर किसी इलाके में नक्सलियों का जमावड़ा है तो तीनों जिलों की फोर्स को अभियान पर रवाना किया जा रहा है। बीजापुर की टीम के साथ मुठभेड़ होती है और नक्सली दंतेवाड़ा की तरफ भागते हैं तो यहां दंतेवाड़ा की फोर्स घेरकर मार रही है। ऐसे ही सुकमा की तरफ भागते हैं तो सुकमा में मोर्चा संभालकर बैठे जवान उनको मुठभेड़ में ढेर कर रहे हैं। यह रणनीति छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और ओडिशा की सीमा पर भी अपनाई जा रही है। सुरक्षाबलों के संयुक्तअभियान से नक्सलियों को बार-बार एक जगह से दूसरे ठिकाने के लिए भागना पड़ रहा है, इससे सुरक्षाबलों को नक्सलियों के ठिकाने आसानी से मिल रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि दंतेवाड़ा जिले से नक्सलियों का लगभग सफाया हो गया है। यहां दरभा डिवीजन, कटेकल्याण एरिया कमेटी, मलांगेर और इंद्रावती एरिया कमेटी के नक्सली सक्रिय थे। यहां डीवीसीएम, एसीएम जैसे बड़े कैडर्स के कई नक्सली मुठभेड़ में मारे गए, तो कइयों ने आत्मसमर्पण कर दिया। वर्तमान में यहां नक्सलियों की स्मॉल एक्शन टीम और मिलिशिया कैडर के नक्सलियों की सक्रियता थोड़ी बहुत दिखती रहती है। वहीं बीजापुर, सुकमा और नारायणपुर में आज भी जवानों के लिए नक्सली चुनौती बने हुए हैं। इन इलाकों में नए कैंप भी स्थापित किए गए हैं। इन जिलों से ओडिशा, महाराष्ट्र, तेलंगाना की सीमा लगती है।

एक नजर

रिश्वत लेते अंचल निरीक्षक रंगे हाथ गिरफ्तार

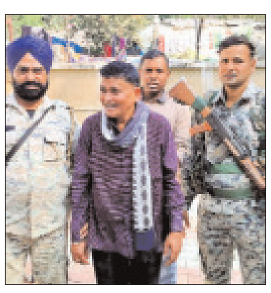

लातेहार : जिले के बरवाडीह अंचल में पदस्थापित अंचल निरीक्षक सुरेश राम को एसीबी की टीम ने गुरुवार को 20 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। सुरेश राम एक महिला से जमीन के मोटेशन के लिए रिश्वत ले रहे थे। इसी मामले में सुरेश राम को निगरानी की टीम ने गिरफ्तार कर लिया। एसीबी के एसपी अंजनी अंजन ने बताया कि बरवाडीह की एक महिला ने एसीबी पलामू की टीम से शिकायत की थी कि उन्होंने 30 डिसमिल जमीन खरीदी थी। इस जमीन के मोटेशन के लिए अंचल निरीक्षक सुरेश राम के द्वारा उनसे एक लाख रुपये रिश्वत मांग रहा है। एडवांस में 20 हजार रुपये मांग रहा है। शिकायत के बाद एसीबी की एक टीम बनी और पूरे मामले की अपने स्तर से छानबीन की जब मामला पूरी तरह सत्य पाया गया तो एसीबी की टीम ने आरोपी सुरेश राम को रंगे हाथ गिरफ्तार करने की योजना बनाई। गुरुवार को एसीबी की टीम ने महिला को केमिकल लगे पैसे देकर सुरेश राम के पास भेजा। आरोपी ने जैसे ही पैसे अपने हाथ में लिए वैसे ही एसीबी की टीम ने उन्हें रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया।

प्रधानमंत्री ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की

कंफर्ट जोन से बचें, श्रेष्ठता, दक्षता पर फोकस करें युवा : नरेन्द्र मोदी

एजेंसी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती 'पराक्रम दिवस' पर कटक में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि के लिए नेताजी सुभाष के जीवन से हमें निरंतर प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि नेताजी सुभाष कंफर्ट जोन के बंधन में नहीं बंधे इसी प्रकार हमें भी विकसित भारत के लिए अपना कंफर्ट जोन छोड़ना होगा। प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम के लिए जारी एक वीडियो संदेश में कहा कि आज जब हमारा देश विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि में जुटा है, तब नेताजी सुभाष के जीवन से हमें निरंतर प्रेरणा मिलती है। नेताजी के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य 'आजाद हिंद' था। उन्होंने अपने संकल्प की सिद्धि के लिए अपने फैसले को एक ही कसौटी पर परखा 'आजाद हिंद'। नेताजी एक समृद्ध परिवार में जन्में। उन्होंने सिविल सर्विसेज की परीक्षा पास की। वो चाहते तो अंग्रेजी शासन में एक वरिष्ठ अधिकारी बनकर आराम की जिंदगी जीते लेकिन उन्होंने आजादी के लिए कष्टों को चुना, चुनौतियों को चुना, देश-विदेश में भटकना पसंद किया। उन्होंने कहा कि नेताजी सुभाष कंफर्ट जोन के बंधन में नहीं बंधे।

इसी तरह आज हम सभी को विकसित भारत के निर्माण के लिए अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलना है। हमें खुद को विश्व स्तर पर सर्वश्रेष्ठ बनाना है, उत्कृष्टता को चुनना ही है, क्षमता पर फोकस करना है। नेताजी ने देश की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद फौज बनाई। इसमें देश के हर क्षेत्र, हर वर्ग के वीर-वीरांगनाएं शामिल थे। सबकी भाषाएं अलग-अलग थी, लेकिन भावना एक थी- देश की आजादी। यही एकजुटता आज विकसित भारत के लिए भी बहुत बड़ी सीख है। तब स्वराज के लिए हमें एक होना था, आज विकसित भारत के लिए हमें एक रहना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर पूरा देश श्रद्धापूर्वक उन्हें याद कर रहा है। इस वर्ष के पराक्रम दिवस का भव्य उत्सव नेताजी की जन्मभूमि पर हो रहा है।

सीएम हेमन्त ने नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अर्पित की श्रद्धांजलि

रांची : नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस उद्यान, रांची में स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर इसकी तस्वीर भी साझा की है। इसके साथ उन्होंने कहा, 'महान स्वतंत्रता जननायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर शत-शत नमन।'

खरगे-राहुल-प्रियंका ने जयंती पर किया नेताजी को नमन

नयी दिल्ली : कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी तथा पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने महान स्वतंत्रता सेनानी और आजाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होने कहा, 'जय हिंद' एवं 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' जैसे ओजस्वी नारों के माध्यम से देशवासियों में देशप्रेम और क्रांति की लहर का संचार करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष एवं हमारे प्रेरणास्रोत, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर कोटि-कोटि नमन। मातृभूमि के प्रति उनका प्रेम, समर्पण व सांप्रदायिकता के खिलाफ उनका कड़ा विरोध, हम सभी को सदा राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करता है।

मुख्यमंत्री से केंद्रीय सरना समिति का प्रतिनिधिमंडल मिला, सौंपा ज्ञापन

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से गुरुवार को मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में केंद्रीय सरना समिति भारत के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को सरना आदिवासी समाज की समस्याओं एवं मांगों से संबंधित एक ज्ञापन सौंपकर उसके निदान की दिशा में उचित पहल करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य हित में सरकार सभी वर्ग तथा समुदाय के विकास एवं कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में समाज के हर वर्ग के लोगों को सशक्त और आगे बढ़ाने का कार्य हो रहा है, क्योंकि बिना समाज को मजबूत किए राज्य को मजबूत नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरना आदिवासी समाज की आस्था, परंपरा एवं संस्कृति को संरक्षित करने के साथ उनके अधिकार को देने के लिए हमारी सरकार ठोस कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री से भेंट करने वालों में केंद्रीय सरना समिति, भारत के अध्यक्ष नारायण उरांव, अमर उरांव, राजू मंडल, शिवा कच्छप, प्रदीप तिर्की, सोनू मुंडा, झरी मुंडा, राजेश तिर्की, हेमंत गाड़ी, चिंतामणि सांगा प्रमुख रूप से शामिल थे।

नयी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर दिखेगी झारखंड की झांकी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : 26 जनवरी को नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड के अवसर पर कर्तव्य पथ पर झारखंड की झांकी भी दिखेगी। इसमें झारखंड की समृद्ध संस्कृति, यहां का पारंपरिक नृत्य, शिक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति के बढ़ते कदम आदि को प्रदर्शित किया जाएगा। गणतंत्र दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए झारखंड समेत 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की झांकियों का चयन किया गया है। इस वर्ष झारखंड की झांकी में दिवंगत रतन टाटा को श्रद्धांजलि देने के साथ ही झारखंड की समृद्ध संस्कृति, यहां का पारंपरिक नृत्य, शिक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति के बढ़ते कदम आदि को प्रदर्शित किया जाएगा।

रक्षा मंत्रालय ने रद किया एलएंडटी का टेंडर अब जर्मनी की कंपनी बनाएगी छह पनडुब्बियां

एजेंसी

नयी दिल्ली : रक्षा मंत्रालय ने छह पनडुब्बियों के लिए भारतीय कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) का 70 हजार करोड़ रुपये का टेंडर रद कर दिया है। स्पेनिश कंपनी नवांतिया के साथ साझेदारी में एलएंडटी का प्रस्ताव खारिज होने के बाद अब जर्मनी की कंपनी के सहयोग से मुंबई की मझगांव डॉकयार्ड लिमिटेड प्रोजेक्ट 75 इंडिया के तहत यह पनडुब्बियां बनाएगी। चीनी नौसेना के तेजी से आधुनिकीकरण की पृष्ठभूमि में भारत अपने समुद्री क्षेत्र में चीन और पाकिस्तान से मुकाबला करने को वांछित क्षमताएं विकसित कर रहा है। इसीलिए सरकार ने परमाणु और पारंपरिक दोनों तरह की कई पनडुब्बी परियोजनाओं को मंजूरी दी है।

दरअसल, भारतीय नौसेना प्रोजेक्ट 75 इंडिया के तहत तीन सप्ताह तक पानी के नीचे रहने की क्षमता वाली छह उन्नत पनडुब्बियां खरीदना चाहती है। इसके लिए एलएंडटी और उसकी साझेदार कंपनी ने एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) की कार्यप्रणाली को भारतीय नौसेना की टीम के सामने प्रदर्शित किया था, लेकिन नौसेना ने निविदा दस्तावेज में अपनी आवश्यकताओं के लिए उच्च स्टेल्थ सुविधाओं वाली प्रणाली की मांग की थी। भारतीय नौसेना एक समुद्र-सिद्ध एआईपी प्रणाली चाहती है, जो सुरक्षित और विश्वसनीय हो।

पनडुब्बियों में उच्च स्टेल्थ सुविधाएं होनी चाहिए, जो उन्हें लंबे समय तक पानी के नीचे रहने की अनुमति दे सकें। रक्षा मंत्रालय के अनुसार इस सौदे के लिए जर्मनी की कंपनी थिसेनक्रुप मरीन सिस्टम्स (टीकेएमएस) और स्पेनिश कंपनी नवांतिया प्रतिस्पर्धा में थीं। पनडुब्बी अनुबंध के लिए जर्मन कंपनी के साथ मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) और स्पेनिश कंपनी के साथ लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) भारतीय साझेदार के रूप में थीं। जर्मनी की कंपनी टीकेएमएस नौसेना के जहाजों, पनडुब्बियों और सतह के जहाजों के लिए प्रौद्योगिकी और सेवाएं उपलब्ध कराती है। रक्षा मंत्रालय ने पाया है कि छह पनडुब्बियों का ऑर्डर हासिल करने के लिए लार्सन एंड टुब्रो का 70 हजार करोड़ रुपये का टेंडर अनुपालन योग्य नहीं है तथा नवांतिया ने पी75आई के लिए समुद्र में प्रमाणित एआईपी का प्रदर्शन नहीं किया है। भारतीय कंपनी एलएंडटी का 70 हजार करोड़ रुपये का टेंडर रद्द होने के बाद अब सरकारी स्वामित्व वाली मझगांव डॉकयार्ड लिमिटेड अपनी साझेदार जर्मन कंपनी थिसेनक्रुप मरीन सिस्टम्स के साथ छह पनडुब्बियां बनाने की दौड़ में एकमात्र विक्रेता रह गई है। अब रक्षा मंत्रालय परियोजना में प्रक्रियाओं के अनुसार आगे बढ़कर सभी स्तरों पर प्रक्रिया की जांच कर रहा है।

संबंधित अधिकारियों को शिपयार्ड के बीच परियोजना को समान रूप से विभाजित करने के सुझाव भी दिए गए हैं। भारतीय नौसेना के लिए छह डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों के निर्माण का यह सौदा भारत के प्रोजेक्ट-75आई के तहत किया गया है।

बिहार : बेतिया के डीईओ के यहां से दो करोड़ बरामद, किए गए निलंबित

एजेंसी

पटना : बिहार में बेतिया के जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) रजनीकांत प्रवीण के यहां राज्य की विशेष निगरानी ईकाई (एसयूवी) ने छापा मारा। वहां नोटों को ढेर मिला। उनके बेतिया स्थित घर से करीब दो करोड़ रुपए नकद बरामद किए हैं। वहीं अन्य चल व अचल संपत्ति की जानकारी भी मिली है। इसके बाद शिक्षा विभाग ने तत्काल प्रभाव से डीईओ निलंबित कर दिया। एसवीयू के मुताबिक डीईओ रजनीकांत प्रवीण की करोड़ो की आय से अधिक अवैध संपत्ति का पता चला था। इसके बाद केस दर्ज कर गुरूवार को डीआईओ के बेतिया स्थित आवास समेत चार ठिकानों पर छापेमारी की गई।

छापेमारी में दो करोड़ रुपए नकद बरामद किए गए।साथ ही अन्य स्थानों पर भी उनकी चल व अचल संपत्ति होने का पता चला है। टीमें अभी अवैध संपत्तियों का ब्यौरा खंगाल रही हैं।

उधर छापे की खबर मिलते ही बिहार सरकार एक्शन में आ गई। आनन-फानन में डीईओ रजनीकांत प्रवीण को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया।शिक्षा विभाग के निदेशक प्रशासन सुबोध चौधरी ने बताया कि रजनीकांत प्रवीण को आय से अधिक संपत्ति, गंभीर भ्रष्टाचार एवं घोर कदाचार के मामले के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। निलंबन के दौरान वह मुख्यालय स्थित क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, पूर्णिया प्रमंडल के कार्यालय से अटैच रहेंगे। इस दौरान उन्हें जीवन निर्वाह भत्ता देय होगा। प्रवीण के खिलाफ बिहार सरकारी सेवक नियमावली, 2005 के प्रावधानों के तहत विभागीय कार्रवाई अलग से शुरू की जाएगी।

हजारीबाग में एनएच के कई होटलों में चल रहा है देह व्यापार का धंधा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग जिलान्तर्गत अवैध खनिज तस्करों, मादक पदार्थों की तस्करी, उग्रवादी गतिविधियों एवं देह व्यापार का रोकथाम एवं संलिप्त अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी हेतु लगातार सघन अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में सूचना मिल रही थी कि मुफसिल थानान्तर्गत मुफसिल थानान्तर्गत ग्राम चानों में रॉची-पटना हाईवे किनारे स्थित द किंग रिजॉर्ट होटल संचालक के द्वारा अवैध रूप से देह व्यापार का धंधा किया जा रहा है। जिसकी सूचना हजारीबाग पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह को दी गई। मामले को लेकर पुलिस अधीक्षक हजारीबाग के द्वारा सूचना का सत्यापण एवं आवश्यक

▸ द किंग रिजॉर्ट में हुआ छापामारी चार युवक तीन युवती गिरफ्तार

कारवाई हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर हजारीबाग के नेतृत्व तथा अंचलाधिकारी सदर अंचल मयंक भूषण की उपस्थिति में मुफसिल थाना प्रभारी एवं थाना के पदाधिकारी एवं सशस्त्र बल को शामिल कर छापामारी दल का गठन कर दिनांक 22.01.205 को देर रात्रि द किंग रिजॉर्ट होटल में छापामारी कर देह व्यापार में संलिप्त तीन युवतियों एवं होटल मैनेजर समेत कुल चार युवकों को गिरफ्तार किया गया। होटल के संचालक भागने में सफल रहे जिनकी

गिरफ्तारी हेतु लगातार छापामारी की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्तों में साहेल खान उम्र 25 वर्ष पे० फरीद खान सा० हॉस्पीटल कॉलोनी थाना भुरकुंडा जिला रामगढ़, गौतम कुमार उम्र 30 वर्ष पे० स्व० रामेश्वर कोयरी सा० सोंडाडीह थाना भुरकुंडा जिला रामगढ़, बिकी सिंह उम्र 26 वर्ष पे० सचिदानंद सिंह सा० रेलवे कॉलोनी थाना बरही जिला हजारीबाग, त्रिभुवन प्रसाद उम्र 26 वर्ष पे० स्व मथुरा साव सा० बंधगाँवा थाना चौपारण जिला हजारीबाग, एवं कुल तीन (03) युवतियों को गिरफ्तार किया गया छापामारी के दौरान कंडोम का पैकेट-दो पीस, सिगरेट का दो पैकेट, बीयर का खाली केन दो पीस, फर्जी आधार कार्ड, होटल का आगंतुक रजिस्टर,अभियुक्त बिकी सिंह उम्र 26 वर्ष पे० सचिदानंद सिंह का ओपो कंपनी का काले रंग का एंड्रोयड मोबाईल, अभियुक्त बिकी सिंह उम्र 26 वर्ष पे० और आसमानी रंग का एंड्रोयड मोबाईल, अभियुक्त बिकी सिंह का सफेद रंग का टाटा टियागो कंपनी का कार जिसका रजि०नं०-जेएच02एजेड 4016 जप्त किया गया छापामारी दल में अमित आनंद, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर हजारीबाग, कुमार मयंक भूषण अंचलाधिकारी सदर अंचल हजारीबाग, पुअनि कुणाल किशोर थाना प्रभारी मुफसिल थाना, सअनि संजय यादव मुफसिल थाना, सअनि साकेश कुमार सिंह, महिला आरक्षी-603 सुनीता कुमारी एवं थाना सशस्त्र बल शामिल थे।

एक नजर

साइबर अपराध के मामले में सीबीआई ने की छापेमारी

हजारीबाग : केंद्रीय जांच ब्यूरो की टीम ने गुरुवार को हजारीबाग जिले के ईचाक थाना क्षेत्र स्थित सिरसी गांव में छापेमारी की। टीम ने गांव के राजू प्रसाद कुशवाहा के घर पर कार्रवाई करते हुए कई अहम दस्तावेज जब्त किए। सूत्रों के मुताबिक यह मामला साइबर अपराध से जुड़ा हुआ है। इस छापेमारी के दौरान सीबीआई की टीम ने कई पहलुओं की गहन जांच की। बताया जा रहा है कि यह टीम पटना से विशेष रूप से सिरसी गांव पहुंची थी। सीबीआई के अधिकारियों ने राजू प्रसाद कुशवाहा के घर की तलाशी लेकर कई दस्तावेज अपने साथ ले लिए। हालांकि, इस कार्रवाई को लेकर अधिकारियों ने ज्यादा जानकारी साझा नहीं की। स्थानीय लोगों के अनुसार टीम ने गांव में कई घंटों तक जांच-पड़ताल की। गौरतलब है कि साइबर अपराध से जुड़े मामलों में सीबीआई लगातार सक्रियता दिखा रही है। सिरसी गांव में हुई इस कार्रवाई को भी इसी कड़ी का हिस्सा माना जा रहा है। स्थानीय पुलिस ने भी इस कार्रवाई में सीबीआई टीम का सहयोग किया।

बरही चौक और बिलौतिया मोड़ पर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की मांग

बरही : बरही चौक और बिलौतिया मोड़ पर ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने हजारीबाग पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह से मुलाकात की। इस दौरान विधायक मनोज यादव ने इन क्षेत्रों में लगातार बढ़ती ट्रैफिक समस्या और जाम की स्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की। विधायक ने पुलिस अधीक्षक से अनुरोध किया कि इन दोनों स्थानों पर नियमित रूप से ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की जाए, ताकि जनता को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि बरही चौक और बिलौतिया मोड़ पर जाम की समस्या से न केवल स्थानीय लोग परेशान हैं, बल्कि इससे गुजरने वाले यात्रियों को भी भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस बैठक में हजारीबाग जिले के ट्रैफिक इंचार्ज मनोज कुमार सिंह और बरही अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार विमल भी उपस्थित रहे। इन अधिकारियों ने भी क्षेत्र की ट्रैफिक समस्याओं पर चर्चा की और समाधान के लिए संभावित कदम उठाने पर सहमति व्यक्त की। विधायक मनोज कुमार यादव के इस प्रयास की लोग सराहना केर रहे है। लोग आशा कर रहे हैं कि यह कदम बरही क्षेत्र की ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर बनाने में मील का पत्थर साबित होगा।

संविधान बचाने का काम कर रही है भाजपा : शशांक

चतरा : भाजपा युवा मोर्चा के जरिये गुरुवार को ऱ्हमारा संविधान हमारा अभिमान विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हेरूआ में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजयुमो जिलाध्यक्ष सौरभ सुमन ने की। कार्यक्रम में युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शशांक राज ने युवाओं को संबोधन किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने संविधान को हटाने का नहीं बल्कि बचाने का काम किया है। आज बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को सम्मान भारतीय जनता पार्टी के कारण हो रहा है। भाजपा बाबा साहब को भारत रत्न प्रदान किया गया और भारतीय संसद में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन और उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जायेगा : संदीप कुशवाहा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव बी.एम. मेमोरियल स्कूल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य कैलाश कुमार व संचालन आनन्द कुमार पासवान ने किया। इस दौरान शिक्षकों व विद्यार्थियों ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के तस्वीर पर पुष्प अर्पित का श्रद्धांजलि दिया। इस दौरान निदेशक संदीप कुशवाहा ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस अमर रहे का नारा देते हुए कहा की उन्होंने तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा जैसे प्रेरणादायक नारे दिया था। वहीं इतिहास के शिक्षक ऋषभ अग्रवाल ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे, बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। मौके पर मुख्य रूप से उपनिदेशक पिंटू कुशवाहा दिनकर, प्राचार्य कैलाश कुमार, उप प्राचार्या पूनम कुमारी, विद्यालय शिक्षा चेयरमैन रंजीत कुमार, वरिष्ठ शिक्षक ब्रह्मदेव सिंह चौहान,आनंद कुमार पासवान, आशीष कुमार, महेंद्र कुमार, सुमित कुमार, सोनू कुमार, मुकेश कुमार, ऋषभ अग्रवाल, राजेश कुमार रवि, विकाश कुमार ठाकुर, सुभाष कुमार, मनीषा कुमारी,एरिका टोप्पो, देवंती देवी, अंजली मिश्रा, अफसाना परवीन, स्नेहा कुमारी, गंगा भारती, आर्या कुमारी, सुमन कुमारी, सरिता बा, ओम कुमार, सहित छात्र-छात्राएं उपस्थित थें।

संगम पब्लिक स्कूल में सुभाष चंद्र बोस की जयंती मनाई गई

बड़कागांव : बड़कागांव ठाकुर मोहल्ला स्थित संगम पब्लिक स्कूल प्रांगण में सुभाष चंद्र बोस जयंती मनाई गई। उपस्थित लोगों में सुभाष चंद्र बोस की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया। विद्यालय के प्राचार्य प्रवेज आलम ने कहा कि देश की आजादी में सुभाष चंद्र बोस की योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने नारा दिया था कि तुम हमें खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा। जिसके कारण देश की आजादी के लिए आंदोलन में लाखों लोग शामिल हुए थे। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे । जिन्होंने ब्रिटिश राज्य के खिलाफ आजादी के लिए संघर्ष किया था।

रेन्बो स्कूल में मनाई गई नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती

बरही : शिवपुर गडलाही स्थित रेन्बो स्कूल में गुरुवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती बड़े ही उत्साह और देशभक्ति के माहौल में मनाई गई। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक सिकंदर प्रसाद कुशवाहा सहित स्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने नेताजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम की शुरूआत नेताजी की तस्वीर पर पुष्प अर्पण के साथ हुई। इसके बाद स्कूल के छात्रों ने सुभाष चंद्र बोस के जीवन और उनके योगदान पर आधारित भाषण, कविताएं और देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। छात्रों ने उनके तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा जैसे प्रेरणादायक नारे को याद करते हुए उनके साहस और नेतृत्व की प्रशंसा की। इस मौके पर निदेशक सिकंदर प्रसाद कुशवाहा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे, बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण आज भी हमें प्रेरणा देते हैं।

झारखंड विधिक सेवा प्राधिकार के तहत डोर-टू-डोर विधिक जागरूकता अभियान जारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही/चौपारण : झारखंड विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, हजारीबाग के बैनर तले 90 दिवसीय डोर-टू-डोर विधिक जागरूकता अभियान विभिन्न प्रखंडों में जोर-शोर से चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत चौपारण प्रखंड के सिंघरावां मोड़ क्षेत्र में पारा लीगल वॉलंटियर्स (पीएलवी) द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव के आदेशानुसार कानूनी जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। अभियान के दौरान घर-घर जाकर लोगों को बाल उत्पीड़न, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, साइबर अपराध और विधिक अधिकारों से जुड़ी अहम जानकारियां दी गईं। लोगों को बताया गया कि वे जिला विधिक सेवा प्राधिकार, हजारीबाग के कार्यालय में पहुंचकर अपने छोटे-मोटे विवादों को

आपसी समझौते के जरिए निपटा सकते हैं। यह सुविधा सिविल कोर्ट स्थित न्याय सदन भवन में निःशुल्क और त्वरित न्याय प्रक्रिया के तहत उपलब्ध है। आवश्यकता पड़ने पर निःशुल्क अधिवक्ता की भी व्यवस्था की जाती है। इसके अलावा, लोगों को यह जानकारी दी गई कि वे घर बैठे टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर 15100 के जरिए निःशुल्क कानूनी सलाह ले सकते हैं। साइबर अपराध से बचाव के लिए साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 की जानकारी भी दी गई। कार्यक्रम के दौरान मौजूद पारा लीगल वॉलंटियर्स पंकज कुमार, हरेंद्र कुमार राणा, नीरज कुमार पासवान और सुनील कुमार वर्मा ने नागरिकों को यह भी सुझाव दिया कि वे किसी अनजान व्यक्ति को अपना ओटीपी साझा न करें, क्योंकि यह साइबर अपराधों का मुख्य कारण बन सकता है। यह अभियान जिले के अन्य प्रखंडों में भी जारी है और लोगों को विधिक अधिकारों और न्यायिक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मनीष जायसवाल को मिली दिल्ली चुनाव में बड़ी जिम्मेवारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल को दिल्ली विधानसभा चुनाव -2025 में एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारी सौंपी। उन्हें दिल्ली के दो विधानसभा क्षेत्र पटेल नगर और राजौरी गार्डन विधानसभा क्षेत्र का राजनीतिक प्रबंधन का जिम्मे सौंपा है। चुनाव के दरम्यान ये दोनों विधानसभा क्षेत्र में सांसद मनीष जायसवाल की गतिविधि दिखेगी। सांसद मनीष जायसवाल अपने कुशल राजनीतिक चुनाव प्रबंधन, क्षमता और विद्वता का पिछले बिहार विधानसभा चुनाव, छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव, कर्नाटक विधानसभा और झारखंड विधानसभा चुनाव में संगठन द्वारा दिए गए दायित्व का बखूबी निर्वहन कर प्रदर्शित कर चुके हैं। बीते झारखंड विधानसभा चुनाव में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के पांच में से चार विधानसभा और

हजारीबाग जिले के सभी पांचों विधानसभा सीटों पर एनडीए की प्रचंड जीत सुनिश्चित कराने में उनका अहम योगदान रहा था । सांसद मनीष जायसवाल को दिल्ली विधानसभा चुनाव में बड़ी जिम्मेवारी मिलने पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ता और यहां की जनता बेहद उत्साहित हैं और अपने सांसद को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कर रहें हैं साथ ही विश्वास जाता रहें हैं कि वे दिल्ली विधानसभा चुनाव में संगठन के पक्ष में उत्कृष्ट कार्य करेंगे और पार्टी को जीत दिलाने में मदद पहुंचाएंगे ।

जनता की सेवा ही हमारा मुख्य उद्देश्य है, हर समस्या का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा : प्रदीप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने अपने कार्यालय सभागार में एक व्यापक जनता दरबार का आयोजन किया, जिसमें विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न प्रखंडों से बड़ी संख्या में नागरिक शामिल हुए। यह आयोजन विधायक की जनसमस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और तत्परता को दर्शाता है। जनता दरबार में पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य, नाली और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं से संबंधित समस्याएं प्रमुखता से सामने आईं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लोग इन समस्याओं को लेकर काफी चिंतित थे और उन्होंने विधायक से समाधान की गुहार लगाई, जिसमें कई क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता नहीं

होने की शिकायतें सामने आईं। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली कटौती और लो वोल्टेज की समस्या लोगों ने रखी। स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टर और दवाओं की कमी पर चर्चा हुई। विद्यालयों में शिक्षकों की कमी और बुनियादी ढांचे की समस्याएं लोगों ने उठाईं। कई स्थानों पर सड़कों की खराब स्थिति और नाली जाम की शिकायतें आईं। विधायक प्रदीप प्रसाद ने सभी समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों से तत्काल वार्ता की और त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया। उन्होंने कहा की जनता की समस्याओं का समाधान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मैं व्यक्तिगत रूप से इन मामलों की निगरानी करूंगा और यह सुनिश्चित करूंगा कि सभी समस्याओं का समाधान शीघ्र हो। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध ढंग से काम पूरा करने के निर्देश दिए और जनता को भरोसा दिलाया कि सभी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाएगा। प्रदीप प्रसाद ने कहा की यह जनता दरबार जनता की समस्याओं को समझने और उन्हें हल करने का एक मंच है। मैं जनता से आग्रह करता हूं कि वे अपनी समस्याओं को खुलकर हमारे सामने रखें। हमारे दरवाजे हमेशा जनता के लिए खुले हैं। दरबार में उपस्थित लोगों ने विधायक के इस प्रयास की सराहना की और कहा कि इस तरह के आयोजन से जनता को अपनी समस्याएं सीधे तौर पर रखने का अवसर मिलता है। विधायक ने अंत में आश्वासन दिया कि वह हजारीबाग को विकास के हर मानक पर खड़ा करेंगे और जनता की आकांक्षाओं पर खरा उतरेंगे।

संक्षिप्त खबरें

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा सुभाषचंद्र बोस ने बुलंद किया था : शैलेन्द्र कुमार

हजारीबाग : जिला कांग्रेस कार्यालय कृष्ण बल्लभ आश्रम में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 127 वीं जयंती उनके चित्र पर माल्यार्पण कर मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने कहा कि देश की स्वाधीनता के लिए जिसे जो मार्ग सूझा, उसने वही अपनाया। सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस के चोटी के नेताओं में से थे। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा बुलंद कर उनमें स्फूर्ति भरी। चलो दिल्ली का लक्ष्य रखा और भारत की सीमा तक आजाद हिन्द फौज की सफलता गूंज उठी और अंग्रेजी सत्ता कांप उठी । प्रचंड जनसमर्थन आजाद हिन्द फौज के पक्ष में देखकर परकीय सत्ता को भी पुनर्विचार के लिए बाध्य होना पड़ा। देश की आजादी के क्षण इस कुशल नेतृत्व के कारण और भी निकट आ गए। नेताजी स्वाधीन भारत में सशरीर नही आ सके तो किया हुआ, देश का बच्चा बच्चा उनके ' जय हिन्द ' के घोष से उनकी स्मृति आज भी हृदय में ताजा लिए हुए है । कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष आबिद अंसारी महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत वरिष्ठ कांग्रेसी अशोक देव जिला उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता निसार खान, राजू चौरसिया, नरेश गुप्ता, साजिद अली खान, कजरु साव, सलीम रजा, ललितेश्वर प्रसाद चौधरी, दिलीप कुमार रवि, कृष्णा किशोर प्रसाद, गुड्डु सिंह, परवेज अहमद, सदरूल होदा, लखराज सिंह, कृष्णदेव प्रसाद सिंह, लाल बिहारी सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, मुगेश्वर प्रसाद चौधरी, रियाजउद्दिन अंसारी, भैया असीम कुमार, राशिद खान, उदय पाण्डेय, सैयद अशरफ अली, बाबू खान, कौशल कुमार सिंह के अतिरिक्त कई कांग्रेसी उपस्थित थे।

सड़क सुरक्षा माह अंतर्गत सद्भावना फुटबॉल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

हजारीबाग : बड़कागांव में जिला परिवहन विभाग, जिला खेल विभाग तथा प्रखंड कार्यालय, बड़कागांव, दाड़ी, कटकमदाग तथा केरेडारी के सहभागिता से बड़कागांव में सद्भावना फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य सड़क सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देना था जिसमें पहला मैच बड़कागांव और दाड़ी के बीच खेला गया। जिसमें बड़कागांव 2 गोल से विजय हुआ इसी प्रकार दूसरा मैच कटकमदाग तथा केरेडारी के बीच आयोजित हुआ जिसमें केरेडारी एक गोल से विजय हुआ। खेल के उपरांत बड़कागांव तथा केरेडारी को विजय ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया खेल के पश्चात सभी खिलाड़ियों को सड़क सुरक्षा संबंधी शपथ दिलाई गई। ज्ञात हो कि सड़क सुरक्षा माह 2025 अंतर्गत जिले में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें से विभिन्न प्रखंडों में फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन भी एक है अब तक 12 प्रखंडों के बीच फुटबाल मैच का खेल चुकी है तथा सदर, पद्मा,इचाक तथा कटकमसांडी के बीच मैच खेला जाना है। यह मैच जिले में लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से आकर्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही है।

मुखिया नीलम मिंज ने बुजुर्ग लोगों के बीच किया कंबल वितरण

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के अती सुदरवर्ती पंचायत आंगो अंतर्गत ग्राम उरेज गांव में ग्राम पंचायत आंगों की मुखिया नीलम मिंज ने अपने हाथों बुजुर्गों के बीच कंबल का वितरण किया। इस दरमियान मुखिया नीलम मिंज कहा कि सरकार की अच्छी पहल है की समय पर असहाय बुजुर्ग लोगों को कंबल मुहैया कराया गया। सभी बुजुर्ग महिला पुरुष कंबल पाकर काफी खुश थे। मौके पर मुख्य रूप से समाजसेवी सह वार्ड सदस्य प्रतिनिधि रमन गंझू, शिवनाथ गंझू, गोवर्धन गंझू, जयनंदन गंझू सहित कई लोग उपस्थित थे।

दौडवा कुण्डवा में एकीकृत जलीय कृषि प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ

हजारीबाग : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (सीआईएफई) के केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (सीआईएफई), मुंबई के सतत प्रयासों के तहत हजारीबाग जिले के दौडवा कुण्डवा गांव में 70 मत्स्य कृषकों के लिए तीन दिवसीय एकीकृत मल्टी ट्राफिक जलीय कृषि मॉडल पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन बरही अनुमंडल पदाधिकारी जोहन टुडू द्वारा किया गया,जिन्होंने प्रशिक्षण मैनुअल का भी अनावरण किया। यह उल्लेखनीय है कि सीआईएफई , मुंबई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रेम कुमार पूर्व में भी हजारीबाग में किसानों के साथ विभिन्न उन्नत मत्स्य पालन तकनीकों पर कार्यशालाएं आयोजित कर चुके हैं। पिछली यात्राओं में उन्होंने किसानों को आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों, जल प्रबंधन और सहायक जल कृषि प्रणालियों पर मार्गदर्शन दिया था, जिसका सकारात्मक प्रभाव आज किसानों की बढ़ती उत्पादन क्षमता में देखा जा सकता है। अनुमंडल पदाधिकारी, बरही ने इस मौके पर कहा कि एक ही जलाशय में मत्स्य पालन के अलावा एकीकृत कार्यक्रम चलाकर कृषक अपने आय में बढ़ोत्तरी कर सकते है। डॉ. प्रेम कुमार ने इस अवसर पर कहा, सीआईएफई, मुंबई हजारीबाग के मत्स्य कृषकों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए सदैव तत्पर है। हमारा लक्ष्य किसानों को केवल मछली पालन तक सीमित नहीं रखना है, बल्कि उन्हें मोती पालन और सिंघाड़ा उत्पादन जैसे विकल्पों से जोड़कर उनकी आय के नए द्वार खोलना है।

एक नजर

बाबूलाल मरांडी ने सरकार को कानून व्यवस्था पर घेरा

रांची : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने प्रदेश की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े करते हुए हेमंत सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने गुरुवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि रांची के नामकुम प्रखंड स्थित हाहाप पंचायत के मुखिया नन्हे कच्छप पर हमला प्रदेश की कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है। मरांडी ने कहा कि जनप्रतिनिधियों के ऊपर बढ़ते जानलेवा हमले प्रदेश की कानून व्यवस्था का हाल बयां कर रहे हैं। कुछ माह पहले ही धुर्वा में पूर्व वार्ड पार्षद की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बावजूद सरकार और पुलिस विभाग ने अपनी कार्यशैली में सुधार नहीं किया।

बदमाशों ने पंचायत मुखिया को मारी गोली, घायल

रांची : नामकुम थाना क्षेत्र में बदमाशों ने गुरुवार को एक पंचायत मुखिया को गोली मारकर घायल कर दिया। गंभीर रूप से घायल मुखिया को रांची के मेडिका अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। जानकारी के अनुसार, गुरुवार सुबह बाइक सवार दो बदमाशों ने नामकुम के हाहाप पंचायत के मुखिया नन्हे कच्छप को अरविंद टेक्सटाइल के पास गोली मारकर फरार हो गए। ग्रामीण एसपी सुमित कुमार अग्रवाल ने बताया कि बदमाशों को गिरफ्तार करने के लिए छापेमारी की जा रही है। पूरे मामले की जांच पड़ताल चल रही है। थाना प्रभारी ब्रह्मदेव प्रसाद ने बताया कि मुखिया का अपने गांव में ही जमीन बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा था। बंटवारे के विवाद को लेकर ही मुखिया पर फायरिंग की गई है। गोली मारने वाले बदमाशों की पहचान भी हो गई है। जल्द ही गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

2049 लोग फरियाद लेकर पहुंचे जन शिकायत समाधान कैंप

रांची : झारखंड पुलिस के जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में कुल 2049 फरियादियों ने अपनी फरियाद पुलिस अधिकारियों को सुनायी। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के निर्देश पर डीजीपी अनुराग गुप्ता की देखरेख में बुधवार को राज्य के सभी जिलों में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान राज्य के 24 जिलों में कुल 83 केंद्र बनाये गये थे। इनमें रांची में 292, खूंटी में 28, सिमडेगा में 30, लोहरदगा में 42, गुमला में 104, रामगढ़ में 41, हजारीबाग में 76, चतरा में 47, कोडरमा में 71, गिरिडीह 99, बोकारो में 69, धनबाद में 219, लातेहार में 178, पलामू में 87, गढ़वा में 141, दुमका में 58, जामताड़ा में 56, पाकुड़ में 26, साहेबगंज में 156, देवघर में 18, गोड्डा में 69, चाईबासा में 21, जमशेदपुर में 60, सरायकेला में 63 फरियादें मिली हैं।

डीसी ने गरीबों के बीच किया कंबल वितरण

रांची : उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने बुधवार देर रात रांची के प्रमुख चौक-चौराहों की सड़कों पर ठंड में गुजर बसर कर रहे जरूरतमद लोगों को कंबल का वितरण किया। कंबल का वितरण अल्बर्ट एक्का चौक, काली मंदिर चौक, डेली मार्केट पार्किंग, दुर्गा मंदिर रातू रोड की सड़कों पर किया गया। जिला प्रशासन के जरिये सभी प्रमुख चौक-चौराहों एवं रांची जिला के सभी प्रखंडों पर अलाव की व्यवस्था की गई है।

दक्षिण पूर्व रेलवे, निविदा

ई-निविदा सूचना संख्या: एसटी-पीआरओजे-केजीपी-एडब्ल्यूएच-5 ईआई दिनांक: 19.12.2024 के लिए शुद्धिपत्र-1। उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार अभियंता/परियोजना/दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर-721301 द्वारा पूर्व में प्रकाशित, उपर्युक्त ई-निविदा सूचना संख्या में निम्नलिखित परिवर्तन नीचे प्रस्तुत है। ई-निविदा बंद करने की मौजूदा तिथि और समय 20.01.2025 को 13.00 बजे था, जिसे अब संशोधित कर ई-निविदा बंद करने की तिथि और समय 03.02.2025 को 15.00 बजे कर दिया गया है। अन्य सभी नियम और शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी। शुद्धिपत्र-1 के साथ ई-निविदा सूचना का विवरण www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। (PR-1049/C)

होल्डिंग टैक्स नहीं जमा करनेवालों पर नगर निगम सख्त, होटलों को दिया नोटिस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची नगर निगम ने संपत्ति कर, व्यापार लाइसेंस और जल कर के भुगतान सुनिश्चित करने के लिए आवासीय और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर सघन निरीक्षण अभियान शुरू किया है। नगर निगम ने वार्ड 15 के स्टेशन रोड क्षेत्र में कई प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया है। निरीक्षण दल ने राजधानी के कई होटलों का दौरा किया, जिसमें से 4 होटलों ने 2016 से अब तक अपना 15-अंकों का होल्डिंग नंबर प्राप्त नहीं किया था, जबकि उन्हें आत्म-मूल्यांकन के लिए पहले ही नोटिस जारी किए जा चुके थे। नगर निगम टीम ने इन संपत्तियों का माप लिया, दंडात्मक नोटिस जारी किए, और बकाया भुगतान के लिए मांग पत्र बनाए। एक होटल में 2 मंजिलों को व्यावसायिक उपयोग में पाया गया, जबकि उन्हें आवासीय होल्डिंग के तहत पंजीकृत किया गया था। टीम ने संपत्ति का माप लिया और व्यावसायिक उपयोग को ध्यान में रखते हुए संशोधित मांग पत्र जारी किया। एक अन्य होटल, जिसने अगस्त 2024 में अपना संचालन शुरू किया था, ने संपत्ति कर का आत्म-मूल्यांकन नहीं कराया था। नगर निगम टीम ने वहां भी संपत्ति का माप लिया और कर अनुपालन के लिए मांग पत्र जारी किया। सहायक प्रशासक चंद्रदीप कुमार ने कहा, हम सभी नागरिकों से अनुरोध करते हैं कि समय पर कर भुगतान करें और अपनी संपत्तियों का पंजीकरण सुनिश्चित करें। आवासीय संपत्तियों का व्यावसायिक उपयोग कर रहे मालिकों को व्यावसायिक होल्डिंग में स्विच करना होगा, अन्यथा दंड का सामना करना पड़ेगा। झारखंड नगरपालिका अधिनियम, 2011 के तहत गैर-अनुपालन पर कड़ी कानूनी कार्रवाई जैसे जब्ती की जाएगी।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर होगा राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन : के रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने बताया है कि 25 जनवरी को रांची के आर्यभट्ट सभागार में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन होगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल संतोष गंगवार को सम्मिलित होना का आमंत्रित दिया गया है। इस दौरान लोकसभा चुनाव 2024 और झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 में बेहतर प्रदर्शन करने वाले पदाधिकारियों और कर्मियों को राज्यपाल सम्मानित करेंगे। इसे लेकर गुरुवार को के रवि कुमार ने आर्यभट्ट सभागार में आयोजित होने वाले कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। कार्यक्रम के सफल संचालन का दिया निर्देश बताया जा रहा है कि इस कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए व्यवस्था को दुरुस्त रखने के लिए के रवि कुमार ने पदाधिकारियों को निर्देश दिये हैं। इसके साथ ही कुमार ने कहा कि कार्यक्रम में अन्य जिलों के उपायुक्त, पदाधिकारी और बीएलओ भी शामिल होंगे। मिली जानकारी के अनुसार, निर्वाचन में बेहतर प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया जाएगा। कुमार ने बताया कि इन सभी के आने-जाने और ठहरने की व्यवस्था को पूरा कर लिया जाए। इसके साथ ही कार्यक्रम में कॉलेज और एनएसएस के बच्चे, नए मतदाता, वृद्ध मतदाता और दिव्यांग मतदाता आदि भी मौजूद रहेंगे। कुमार ने पदाधिकारियों को सभी आगंतुकों के लिए पेयजल, शौचालय और भोजन आदि की व्यवस्था का विशेष ध्यान रखने को कहा है। इस दौरान रांची डीसी मंजूनाथ भजंत्री, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देव दास दत्ता, रांची जिले के उप निर्वाचन पदाधिकारी विवेक कुमार सुमन, रांची यूनिवर्सिटी के पदाधिकारी, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय और जिला निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के पदाधिकारी व कर्मी मौजूद रहे।

रांची जेल के दो सुरक्षाकर्मियों को वाहन ने कुचला, एक की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के खेलगांव ओपी क्षेत्र के बाबा चौक के पास एक तेज रफ्तार चार पहिया वाहन ने रांची जेल के दो सुरक्षाकर्मियों को कुचल दिया। घटना में एक सुरक्षाकर्मी की मौत हो गई, जबकि दूसरा जेलकर्मी गंभीर रूप से घायल है। उसे नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार दोनों सुरक्षाकर्मी बाइक से बाबा चौक होते हुए रांची जेल जा रहे थे। इसी दौरान एक तेज रफ्तार चार पहिया वाहन ने उनकी बाइक को पीछे से टक्कर मार दी। इससे सुरक्षाकर्मी समीर कुमार राय (49) की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरे सुरक्षाकर्मी चन्द्र देव गुप्ता गंभीर रूप से घायल हो गए। खेलगांव थाना प्रभारी चन्द्रशेखर ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही दोनों सुरक्षाकर्मियों को पुलिस ने अस्पताल पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने समीर कुमार राय को मृत घोषित कर दिया। घायल चंद्रदेव का इलाज चल रहा है। समीर राय और चंद्रदेव भारतीय सेना से रिटायर होकर रांची जेल में बहाल हुए थे। दोनों कर्मी नामकुम के रहने वाले हैं। सुरक्षाकर्मियों को जिस वाहन ने कुचला है, अब तक उसकी पहचान नहीं हो पाई है। घटनास्थल के आस पास के सीसीटीवी कैमरे को पुलिस खंगाल रही है ताकि चार पहिया वाहन का पता लगाया जा सके।

कुणाल की थार पर धोनी का ऑटोग्राफ देख खुद को नहीं रोक पाए आनंद महिंद्रा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी फुर्सत पाते ही अपने दोस्तों के साथ अक्सर मस्ती करते दिख जाते हैं। उनके दोस्त पूर्व विधायक कुणाल षाड़ंगी नई महिंद्रा थार खरीदकर इसकी खुशी साझा करने धोनी के फार्म हाउस पहुंचे थे। धोनी ने उनकी नई कार की सीट पर ऑटोग्राफ देकर मौके को और खास बना दिया कुणाल ने इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा की, तो यह वायरल हो गई। धोनी के इस अनोखे अंदाज पर महिंद्रा समूह के चेयरमैन आनंद महिंद्रा भी खुद को प्रतिक्रिया देने से रोक नहीं पाए। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, एक कार अक्सर वह 'कैनवास' होती है, जिस पर हम दुनिया घूमने और जीवन को खोजने की अपनी आकांक्षाएं चित्रित करते हैं और यह थार रॉक्स उस शख्स के हस्ताक्षर से सज गई, जो आर्ट ऑफ लिविंग में निपुण है। दरअसल आनंद महिंद्रा महेंद्र सिंह धोनी के जबरा फैन हैं। वह धोनी को लेकर जब भी कोई ट्वीट करते हैं तो सबका दिल जीत लेते हैं। दरअसल धोनी का फैंस और दोस्तों के साथ ऐसा जुड़ाव कोई नई बात नहीं है। इससे पहले भी वह कई बार अपने प्रशंसकों और करीबियों की गाड़ियों पर ऑटोग्राफ देकर चर्चा में आ चुके हैं। धोनी ने अपने खास दोस्त और बहरागोड़ा के पूर्व विधायक कुणाल षाड़ंगी की नई महिंद्रा थार गाड़ी पर ऑटोग्राफ देकर इस पल को खास बना दिया है।

जमीन कारोबारी मधुसूधन राय हत्याकांड का खुलासा, चार आरोपी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के नामकुम थाना पुलिस ने जमीन कारोबारी मधुसूधन राय उर्फ मधु राय हत्याकांड में चार आरोपितों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान मानवेल खलखो, अशोक सिंह, राज किशोर राय और दीपक कुमार राय के रूप में हुई है। पुलिस ने इनके पास से एक देशी कट्टा, सात गोली, चार मोबाइल फोन, घटना में उपयोग बाइक बरामद की है। डीआईजी सह रांची एसएसपी चन्दन कुमार सिन्हा ने गुरुवार को मामले का खुलासा करते हुए बताया कि 15 दिसंबर 2024 को मधुसूधन राय की नामकुम थाना क्षेत्र के रिंग रोड पर गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। आरोपितों को गिरफ्तार करने के लिए एसआईटी का गठन किया गया था। टीम लगातार आरोपितों की तलाश में छापेमारी कर रही थी। इसी क्रम में आरोपितों के छिपे हुए होने की गुप्त सूचना प्राप्त हुई। इसके बाद डीएसपी अमर कुमार पांडेय के नेतृत्व में टीम ने बड़ाकवाली से एक किलोमीटर उत्तर दिशा में जंगल से चार आरोपितों को गिरफ्तार किया। इस दौरान एक आरोपित भाग निकला। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि आठ एकड़ जमीन संबंधी पुराने विवाद के कारण मधुसूदन राय की हत्या की घटना को अंजाम दिया गया था। हत्या की योजना सितंबर 2024 से ही बनाई जा रही थी। आरोपित मानवेल खलखो एवं फरार आरोपित उमेश राय ने कुल 10 गोली चलाई थी। गिरफ्तार आरोपितों ने पूछताछ में बताया कि उमेश राय व गिरफ्तार दीपक राय, राज किशोर राय उर्फ गुड्डू राय व अन्य आरोपितों ने मधुसूधन राय पर 2008 में भी फायरिंग की थी। इस दौरान मधुसुदन की पत्नी की गोली लगने से मौत हो गई थी।

आईएएस अधिकारी के बेटे के तीन जन्म प्रमाण पत्र पर विवाद, भाजपा ने सरकार से पूछे सवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची नगर निगम में एक आईएएस अधिकारी के बेटे के फर्जी जन्म प्रमाण पत्र के मामले ने तूल पकड़ लिया है। मामला शांत होने का नाम नहीं ले रहा। इस मुद्दे को लेकर भाजपा ने प्रदेश सरकार से सवाल करते हुए निशाना साधा है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने गुरुवार को प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में इस पूरे मामले पर सरकार से चार महत्वपूर्ण सवाल पूछे। उन्होंने कहा कि सरकार ने स्पष्ट किया है कि आईएएस अधिकारी राजीव रंजन के बेटे के एक जन्म प्रमाण पत्र को वैध माना गया है, जबकि अन्य को निरस्त कर दिया गया है। इस पर पहला सवाल यह है कि रांची नगर निगम ने तीन में से किस प्रमाण पत्र को वैध ठहराया और किन्हें रद्द किया? साथ ही, यह निर्णय किस आधार पर लिया गया कि कौन सा प्रमाण पत्र असली है और कौन सा फर्जी? दूसरा सवाल यह उठता है कि जन्म प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करते समय एक शपथ पत्र देना अनिवार्य होता है। यदि फर्जी शपथ पत्र दिया गया था, तो क्या नगर निगम ने संबंधित आईएएस अधिकारी के खिलाफ फर्जीवाड़े का मामला दर्ज किया है? तीसरा सवाल है कि नगर निगम के उस अधिकारी पर क्या कार्रवाई की गई जिसने तीन अलग-अलग जन्म प्रमाण पत्र जारी किए और उन्हें सत्यापित किया? उन्होंने कहा कि चौथा और अंतिम सवाल यह है कि जिस ऊंचे पद पर संबंधित आईएएस अधिकारी वर्तमान में कार्यरत हैं, उनके खिलाफ विभागीय स्तर पर कौन सी अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई है? क्या ऐसे अधिकारी के भरोसे झारखंड का पूरा वित्त विभाग चलाया जाएगा? अजय साह ने आगे कहा कि झारखंड में कानून के राज का खुलेआम मजाक उड़ाया जा रहा है। आम जनता और बड़े अधिकारियों के लिए अलग-अलग कानून लागू किए जा रहे हैं। यदि ऐसा फर्जीवाड़ा किसी सामान्य व्यक्ति ने किया होता, तो नगर निगम उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करता लेकिन चूंकि यह मामला एक बड़े अधिकारी से जुड़ा है, इसलिए निगम का रवैया नरम दिखाई दे रहा है। उन्होंने इस पूरे मामले को गंभीरता से जांचने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। साह ने एसएससी और सीजीएल परीक्षा पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह पूरी प्रक्रिया एक बड़ा धोखा और फर्जीवाड़ा है। उन्होंने सरकार को चुनौती दी कि यदि किसी भाजपा नेता की इसमें संलिप्तता है, तो ठोस सबूत पेश किए जाएं, न कि मनगढ़ंत आरोप लगाए जाएं। साथ ही, उन्होंने कहा कि यदि जेएमएम के अनुसार छात्रों के साथ खड़े होना उन्हें गुमराह करना माना जाता है, तो भाजपा इस तरह का गुमराह अगले पांच साल तक करती रहेगी।

संक्षिप्त खबरें

राज्यपाल ने सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर अर्पित की श्रद्धांजलि

रांची : झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर गुरुवार को राज भवन में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। उन्होंने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की देशभक्ति और राष्ट्र के लिए उनका त्याग हर भारतीय को प्रेरित करता रहेगा। राज्यपाल ने सोशल मीडिया एक्स पर शेयर पोस्ट में लिख, "आज राजभवन में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के अवसर पर उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। नेताजी का अदम्य साहस, राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता के प्रति उनका समर्पण हर भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जय हिंद!

राज्य में खत्म हो रहा शराब का स्टॉक जेएसबीसीएल पर है 450 करोड़ रुपये बकाया

रांची : राज्य में शराब की आपूर्ति फिलहाल रूक चुकी है। इसका मुख्य कारण शराब कंपनियों को भुगतान न होना है। वर्तमान में दुकानों में जो स्टॉक मौजूद है, वही बिक रहा है। लेकिन नई आपूर्ति नहीं हो पा रही है। मिली जानकारी के अनुसार, शराब की आपूर्ति के लिए शराब कंपनियों को भुगतान झारखंड राज्य बेवरेजेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (जेएसबीसीएल) के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के हस्ताक्षर से होता है। लेकिन यह पद 1 जनवरी से खाली पड़ा है। बताया जा रहा है कि पूर्व अध्यक्ष अमित प्रकाश के सेवानिवृत्त होने के बाद से यह पद खाली है। ऐसे में जब तक नए अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की नियुक्ति नहीं हो जाती, तब तक शराब कंपनियों को बकाया भुगतान नहीं हो सकेगा। मालूम हो कि जेएसबीसीएल पर शराब कंपनियों का करीब 450 करोड़ रुपये से अधिक का बकाया है। इस वजह से कंपनियों ने शराब की आपूर्ति रोक दी है। अगर जल्द भुगतान नहीं हुआ, तो राज्य के राजस्व पर भी असर पड़ सकता है। फिलहाल, राज्य में शराब की बिक्री में कमी नहीं आई है क्योंकि पुराना स्टॉक बिक रहा है। लेकिन जैसे-जैसे स्टॉक खत्म होगा, बिक्री पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। राज्य की खुदरा शराब दुकानों में स्टॉक का ऑडिट भी पूरा हो चुका है। विभागीय मंत्री योगेंद्र प्रसाद के निर्देश पर पूरे राज्य में शराब दुकानों का स्टॉक ऑडिट किया गया था। अब ऑडिट रिपोर्ट विभागीय मंत्री को भेजी जाएगी, जिसमें स्टॉक की स्थिति, बिक्री के बदले जमा की गई राशि और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां शामिल होंगी।

पराक्रम दिवस के अवसर पर नेता जी सुभाष चंद्र बोस को भाजपा ने दी श्रद्धांजलि

रांची : नेता जी सुभाष चंद्र बोस जी की 128वीं जयंती के शुभ अवसर पर कचहरी चौक स्थित सुभाष पार्क में उनकी प्रतिमा पर भाजपा राँची महानगर की ओर से पुष्पांजलि अर्पित किया। इस कार्यक्रम की अगुआई भाजपा राँची महानगर अध्यक्ष वरुण साहू ने की। वहीं कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित भाजपा, झारखंड के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र राय ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीयता की भावना को बहुत महत्व दिया। उनका मानना था कि भारतीयों को अपने देश की स्वतंत्रता के लिए एकजुट होना चाहिए और विदेशियों से मुक्ति पाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। सुभाष चंद्र बोस के विचार आज भी प्रेरणास्त्रोत हैं और उनकी प्रतिबद्धता, साहस और नेतृत्व के उदाहरण से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भाजपा राँची महानगर अध्यक्ष वरुण साहू ने नेता जी सुभाष चंद्र बोस को याद करते हुए बताया की नेता जी का मानना था कि केवल अहिंसात्मक आंदोलनों से भारत को स्वतंत्रता नहीं मिल सकती। उन्होंने सशस्त्र संघर्ष की आवश्यकता को महसूस किया और भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन किया, ताकि अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया जा सके। नेता जी के अदम्य साहस, राष्ट्रप्रेम और त्याग से प्रेरणा लेते हुए, हम सभी को एकजुट होकर उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा, झारखंड के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र राय, वरुण साहू, बसंत दास, कमाल खान, जितेंद्र वर्मा, अनिता वर्मा, विकाश रवि, अजीत भगत, विनोद महतो, तरुण जयसवाल, लक्ष्मी चंद दीक्षित, पायल सोनी, अरुण चंद गुप्ता के साथ भाजपा राँची महानगर के कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

जेबीवीएनएल ने बिजली चोरों से जुर्माने के रूप में वसूले 27 करोड़

रांची : झारखंड में बिजली चोरी के मामलों पर कार्रवाई करते हुए झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड (जेबीवीएनएल) ने 2024 में 26.72 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला है। राज्यभर में कुल 21,902 एफआईआर दर्ज की गईं, जिनमें कुल राशि 42.94 करोड़ रुपये की थी। जनवरी में सबसे अधिक 3,162 एफआईआर दर्ज हुईं, इसके बाद मार्च में 2,834 और फरवरी में 2,693 मामले दर्ज किए गए। अक्टूबर में सबसे कम 858 एफआईआर और सितंबर में 976 मामले दर्ज हुए। जनता से सहयोग की अपील जेबीभीएनएल ने बिजली चोरी पर अंकुश लगाने के लिए जनता से सहयोग मांगा है। संगठन ने नागरिकों से अवैध बिजली उपयोग की घटनाओं की रिपोर्ट करने की अपील की है, ताकि छापेमारी कर नुकसान की भरपाई की जा सके। जानकारी देने वाले नागरिक 9431135515 नंबर पर व्हाट्सएप या संदेश के माध्यम से एपीटी (एंटी पावर थेफ्ट) के जनरल मैनेजर से संपर्क कर सकते हैं। सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। मंगलवार को राज्यव्यापी छापेमारी के दौरान एंटी पावर थेफ्ट (एपीटी) टीमों ने 4,571 परिसरों का निरीक्षण किया, जिसमें 858 बिजली चोरी के मामले पकड़े गए। इस अभियान का उद्देश्य अवैध बिजली खपत को रोकना और वित्तीय नुकसान की भरपाई करना था। इस छापेमारी में क्षेत्रीय और मुख्यालय के अधिकारियों की 117 टीमें शामिल हुईं। कुल 154.10 लाख रुपये के मामलों में से 117.94 लाख रुपये वसूले गए। कुल 18.79 लाख यूनिट का आकलन किया गया। हजारीबाग में सबसे ज्यादा 96 मामले दर्ज हुए, इसके बाद डालटनगंज में 93 और रांची में 90 मामले पाए गए। दुमका में सबसे कम 25 मामले दर्ज हुए, जबकि कोडरमा में 90 मामले सामने आए।

किताबें संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में आवश्यक : न्यायाधीश त्रिपाठी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : किताबें ज्ञान का सबसे अच्छा स्रोत हैं। अगर किसी से दोस्ती करनी हो तो किताबों से करें, जो आपके लिए बेस्ट फ्रेंड हो सकते हैं। खास तौर से बच्चे अगर अपनी सिलेबस की किताबों के अलावा अन्य ज्ञानपरक पुस्तक पढ़ें तो यह उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में काफी महत्वपूर्ण एवं सहायक साबित हो सकता है। उक्त बातें बोकारो के जिला एवं सत्र न्यायाधीश- तृतीय सह पोक्सो अधिनियम के विशेष न्यायाधीश देवेश कुमार त्रिपाठी ने कहीं। श्री त्रिपाठी गुरुवार को डीपीएस बोकारो में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से आयोजित झारखंड के प्रथम विद्यालय स्तरीय पुस्तक मेला के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर आना उन्होंने अपने लिए आनंद एवं प्रसन्नता का क्षण बताया। अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव साझा करते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि उन दिनों वह अक्सर पुस्तक मेले में जाया करते थे और अपनी पढ़ाई के अलावा अन्य किताबें जरूर पढ़ा करते थे। आज के बच्चों को यह आदत विकसित करनी चाहिए, जिससे कि किताबों के जरिए वे अपने आसपास, समाज, देश-विदेश, जीवन की पेशेवर यात्रा, जीवन के लक्ष्य व अन्य परिदृश्यों से भली-भांति अवगत हो सकें। किताबों में वह शक्ति है जो छोटे व्यक्तित्व को बड़े व्यक्तित्व में परिवर्तित कर सकती है। उन्होंने इस आयोजन के लिए डीपीएस बोकारो के प्रयासों की सराहना की। इसके पूर्व, विद्यालय की छात्राओं ने मुख्य अतिथि श्री त्रिपाठी का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया, जबकि विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए.एस. गंगवार ने स्मृति-चिह्न भेंटकर उन्हें सम्मानित किया। प्राचार्य ने भी बच्चों में पुस्तक पढ़ने की आदत डालने पर बल देते हुए जीवन की सफलता में किताबों की भूमिका को अग्रणी बताया।

3000 से अधिक पुस्तकों का है संग्रहण

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं बीबीसी ग्रुप के सहयोग से रीडिंग इंडिया 2025 मिशन के तहत ब्लॉसम थीम पर आयोजित इस पुस्तक मेले के उद्घाटन के साथ ही भीड़ उमड़ पड़ी। 3000 से अधिक पुस्तकों का संग्रहण विद्यालय के कालीदास कला भवन में प्रस्तुत किया गया है। ज्ञान, साहित्य और संस्कृति के इस संगम में बच्चों से लेकर बड़ों तक की पुस्तकें उपलब्ध हैं। देश-विदेश के नामचीन लेखकों की विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकें जहां बड़ों को लुभा रही हैं, वहीं बच्चों के लिए भांति-भांति की ज्ञानपरक, मनोरंजक व गतिविधि आधारित किताबें आकर्षक बनी हैं। कलरिंग, एक्टिविटीज, इनसाइक्लोपीडिया, सेल्फ मोटिवेशन, नन-फिक्शन, बाल कहानियां, साइंस प्रोजेक्ट आदि से संबंधित किताबें मेले में प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए लगाई गई हैं।

25 तक चलेगा मेला

विद्यालय के छात्र-छात्राओं, उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए आयोजित यह पुस्तक मेला 25 जनवरी तक चलेगा।

एक नजर

ब्लास्ट फर्नेस में हुआ रिकॉर्ड हॉट मेटल का उत्पादन

बोकारो : स्टील प्लांट के ब्लास्ट फर्नेस विभाग में दिनाँक 22 जनवरी 2025 को चार फर्नेस परिचालन से अब तक का सर्वश्रेठ 16821 टन हॉट मेटल का उत्पादन का नया दैनिक रिकॉर्ड बना है। उल्लेखनीय है कि पिछला सर्वश्रेष्ठ दैनिक हॉट मेटल उत्पादन का रिकॉर्ड 18 फरवरी 2024 को 16354 टन हॉट मेटल का उत्पादन चार फर्नेस के ऑपरेशन से कायम किया गया था। इसके साथ ही ब्लास्ट फर्नेस संख्या 01 से भी दिनाँक 20 जनवरी को अब तक का सर्वश्रेठ दैनिक 4436 टन हॉट मेटल का उत्पादन किया गया। ब्लास्ट फर्नेस संख्या 01 से पिछला सर्वश्रेष्ठ 4272 टन का दैनिक हॉट मेटल उत्पादन दिनाँक 18 फरवरी 2024 को किया गया था। निदेशक प्रभारी श्री बीरेंद्र कुमार तिवारी तथा अधिशासी निदेशक श्री सी आर महापात्रा के साथ बोकारो स्टील के शीर्ष प्रबंधन ने मुख्य महाप्रबंधक श्री शौविक रॉय एवं उनकी समस्त टीम तथा सभी सहयोगी विभागों तथा संविदा कर्मियों को इस उपलब्धि पर बधाई दी है।

नेताजी चौक मुरलीडीह कुंआ मोड पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती मनायी गयी

चास : प्रखण्ड चास तलगडिया मुख्य पथ मुरलीडीह कुंआ मोड पर नेताजी चौक संस्थापक सह अध्यक्ष राधेश्याम सिंह की अध्यक्षता मे देश के महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती मनाई गई।इस अवसर पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई और नारे लगाए गए। तुम मुझे खुन दो मै तुझे आजादी दुंगा। वक्ता ने नेताजी के जीवनी पर प्रकाश डाले। इस अवसर पर राजनीतिक दल, समाजसेवी,शिक्षा विद, व ग्रामीण उपस्थित होकर श्रद्धांजलि दिया। भाजपा डाक्टर लखन खवास, गौर रजवार, काग्रेंस सतीश चन्द्र रजक, झामुमो अशौक दशौंधी, सृष्टि धर राजवार, सुसेन रजवार,जेएलकेम के अर्जुन रजवार , भाजपा पुर्व मंडल अध्यक्ष राधेश्याम सिंह,मनोज कुमार महतो, लालू पाठक, राकेश मुखर्जी,संटु राय, जिपस प्रतिनिधि रामपद रविदास,पटेल चन्द्र महतो,चंदनकियारी विधानसभा पुर्व प्रत्याशी जगन्नाथ रजवार, कंचन हाजरा, सत्यनारायण सिंह,अनुप दसौंधी,परमेश्वरदास वैष्णव, योगेश प्रसाद,परेश कुमार सिंह,ललित सिंह, दिव्याश कुमार, राहुल सिह,जय कुमार सिंह, सैकड़ों आदि लोग उपस्थित थे।

लोगों को भड़काकर सड़क जाम करने के मामले में युवक गिरफ्तार

ईचागढ़ : थाना क्षेत्र के जारगोडीह गांव से फोरेन महतो उर्फ रविन्द्र महतो 28 वर्ष को ईचागढ़ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर गुरूवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। वही ईचागढ़ थाना के एसआई गुलशन भगत ने बताया कि 9 अगस्त 2024 को मिलन चौक और तिरूलडीह सड़क पर सोड़ो मोड़ के पास बालू लदे एक हाइबा के चपेट में आने से एक 12 वर्षीय बच्चे का मौत हो गई थी।जिसमें लोगों को भड़काकर सड़क जाम करने,मृत शव को सड़क से नहीं उठाने देना, सरकारी कार्य में बाधा एवं पुलिस पर जान मारने के नियत से पथराव करने के खिलाफ ईचागढ़ थाना में 23 नामजद एवं करीब एक सौ अज्ञात पर मामला दर्ज किया गया था।

सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर विधायक ने किया माल्यार्पण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : विधायक श्वेता सिंह ने चेक पोस्ट चास स्थित नेता जी सुभाष चंद्र बोस के जयंती के उपलक्ष्य पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर श्वेता सिंह ने कहा कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे इनकी प्रतिमा हमारे श्वसुर स्वर्गीय समरेश सिंह दादा के द्वारा क्षेत्र वासियों के मांग पर स्थापित करवाई गई थी क्यों कि ऐसे महान विभूति की प्रतिमा लगातार क्षेत्र वासियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है । यह सिर्फ एक प्रतिमा नहीं है यह एक जीवंत उदाहरण है जो हमें देश को सुदृढ़ करने में मार्गदर्शन करती है। हमारे श्वसुर स्वर्गीय समरेश सिंह दादा जब तक जीवित रहे हर वर्ष इस स्थल पर सुभाष जयंती के अवसर पर क्षेत्र वासियों के सहयोग से कार्यक्रम करते थे जो परंपरा आज भी जीवित हैं। श्वेता सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में नेताजी की देश भक्ति के सकारात्मक संदेश देना है बोकारो जिले की मिट्टी से नेता जी का गहरा नाता रहा है स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नेता जी इस क्षेत्र में आंदोलन कारियो में आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए अपने विचारों से ऊर्जा देते थे।इस अवसर पर चास के निवर्तमान मेयर भोलू पासवान, गौरव राय,कौशल राय,बबला राम, अमर चौरसिया आदि उपस्थित रहे।

सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा ने सांसद को पत्र दे समस्या के निदान की मांग की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : राज्य के 62 हजार सहायक अध्यपको के वेतनमान प्रदान करने सहित विभिन्न समस्याओं के निदान लिये सांसद को पत्र देकर निराकरण करने की मांग की, सहायक अध्यापक राज्य में विभिन्न स्कूलों में 20-22 वर्षों से सूबे में शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहे है। मौर्चा के अदिकरियो ने कहा कि 86 हजार से घट कर 62 हजार बच गए है,हर माह सहायक अध्यापक सेवानिवृत हो रहे हैं, कुछ विभिन्न कारणों से मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। मांग में सूबे के सभी सहायक अध्यापकों को वेतनमान एवं राज्यकर्मी का दर्जा दिया जाए। (ज्ञात कराना है कि इसी राज्य के अल्पसंख्यक विद्यालयों में बिना टेट, दक्षता परीक्षा के सिर्फ प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों को वेतनमान पर नियुक्त किया जा रहा है),मृत सहायक अध्यापकों के परिजनों को अनुकंपा का लाभ दिया जाए,NCTE के गजट 23 अगस्त 2010 के अनुसार 2010 से पूर्व कार्यरत शिक्षकों पर टेट लागु नहीं होता है, बिहार शिक्षक नियुक्ति में 2010 से पूर्व कार्यरत नियोजित शिक्षकों को शिक्षक निर्या नियुक्ति में टेट की अहर्ता से मुक्त रखा गया है। तथा नियोजित शिक्षकों को दक्षता परीक्षा उत्तीर्ण को शिक्षक नियुक्ति आवेदन करने अवसर देने के साथ-साथ दक्षता परीक्षा को टेट का समतुल्य लाभ दिया जा रहा है। सीटेट एवं आकलन उत्तीर्ण को जेटेट के समकक्ष मान्यता प्रदान किया जाए। शहरी क्षेत्र के सहायक अध्यापकों के सेवा संपुष्टि हेतु प्राधिकार गठन की कारवाई की जाए। सहायक अध्यापकों के सेवानिवृति की आयु 60 वर्ष से बढ़ाकर 65 वर्ष किया जाए। अप्रशिक्षित सहायक अध्यापकों को प्रशिक्षण पूर्ण करने का एक अवसर प्रदान करने की मांग किया।

सरकारी भूमि पर बिना अनुमति जबरन उत्खनन कार्य पर रोक लगाए जिला प्रशासन : रमेश रवानी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : प्रेस को संबोधित करते हुए इंटक असंगठित धनबाद प्रखण्ड के अध्यक्ष रमेश रवानी ने कहा की बीसीसीएल आज के दौर में जितने भी एमडीओ मॉडल एवं हेम मॉडल के तहत कोयला ओबी उत्खनन का कार्य हेतु संविदा निकल गया है, जो गैर असंवैधानिक तरीके से किया गया है, क्योंकि एमडीओ मॉडल एवं हेम मॉडल के तहत जो संविदा निकल गया है और संवेदकों को कोयला ओबी उत्खनन कार्य आवंटन किया गया है, उसे क्षेत्र के संविदा का लैंड शेड्यूल भूमी जांच किया जाए, तो पता चल जाएगा की बीसीसीएल ने एमडीओ मॉडल एवं हेम मॉडल के तहत जो संविदा निकाला है, उसमें रैयती भूमी के भूस्वामी एवं गैरअबाद सरकारी भूमि के भूस्वामी संबंधित विभाग से बिना अनुमति एवं सहमति लिए संविदा निकालकर संविदक को कोयला ओबी उत्खनन कार्य हेतु दे दिया, इसके चलते आए दिन बीसीसीएल के सभी क्षेत्रों में रैयत एवं विस्थापित अपने हक अधिकार की लड़ाई हेतु धरना प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीं एक तरफ रैयत और दूसरे तरफ आउटसोर्सिंग कंपनी अपने कॉल माफिया रंगदारो को मिलाकर गोली बमबारी कराकर क्षेत्र को अशांत किया जाता है, साथ ही जिला प्रशासन को अपने विश्वास में लेकर रैयत भूमि एवं गैरअबाद सरकारी भूमि पर बिना अनुमती एवं बिना सहमति लिए एमडीओ मॉडल के परियोजना में 144 धारा या 163 धारा के तहत एक तरफा बीसीसीएल और आउटसोर्सिंग कंपनी के पक्ष में कार्रवाही की जाती है। जबकि जिला प्रशासन को एमडीओ मॉडल के परियोजना से सभी दस्तावेज एवं कागजातों को देखकर यह निर्णय लेना चाहिए था कि उक्त जमीन पर किसी रैयती भूमि या सरकार की गैराआवाद सरकारी भूमि खाते की जमीन है या नहीं उसके बाद जिला प्रशासन अपने स्तर से उचित कार्रवाई कर धारा 144 या 163 धारा के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए रैयती भूमि एवं गैराआवाद सरकारी भूमि को जबरन उत्खनन से बचाने के लिए अपर समाहर्ता एवं अंचल अधिकारी कई कानूनी धाराओं के तहत कार्रवाई कर सकते हैं।

आजसू पार्टी की केंद्रीय सभा में होगी साल भर की योजनाओं पर चर्चा

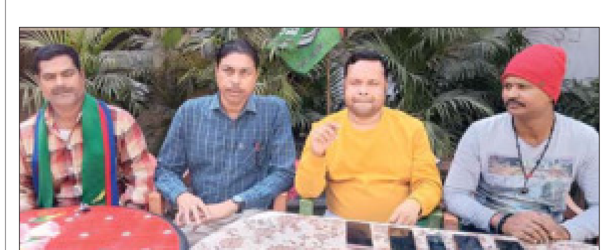

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : आजसू पार्टी कार्यालय, आदर्श कॉलोनी, तेलीडीह बस्ती,चास नगर,बोकारो में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए आजसू पार्टी के कार्यकारी जिला अध्यक्ष अशोक कुमार महतो ने कहा कि आगामी 27 जनवरी 2025 दिन सोमवार दोपहर 12 बजे धनबाद जिले के अन्तर्गत पुटकी थाना क्षेत्र में स्थित भाटिंदा वॉटर फॉल के पास केंद्रीय सभा आयोजित की गई है। इस बैठक की अध्यक्षता माननीय झारखण्ड सरकार के पूर्व उप मुख्यमंत्री -सह- आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष माननीय सुदेश कुमार महतो जी करेंगे। बैठक में पार्टी के साल भर की योजना, भविष्य की रणनीति, कार्यक्रम, और वर्तमान राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा की जायगी। इस बैठक में सभी केंद्रीय पदाधिकारी एवं सदस्य ,जिला एवं प्रखंड समिति, जिले के सभी पदाधिकारी, प्रखंड सह नगर अध्यक्ष और सचिव अनुसंगी इकाई के पदाधिकारी केंद्र एवं जिला के सभी पदाधिकारी जिला परिषद अध्यक्ष, जिला परिषद सदस्य, उपाध्यक्ष, प्रमुख, उप प्रमुख एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को आमंत्रित किया गया है। इस मौके पर जिला सचिव बंकु बिहारी सिंह,जिला संयुक्त सचिव रंजीत सिंह चौधरी, चास नगर अध्यक्ष अभय शर्मा,चास नगर महासचिव बीरेन्द्र हरि उर्फ वीरू, अर्जुन महतो,मनोज गोप , राजेश कुमार,शीलू गोप,आदि उपस्थित थे।

भारतीय स्टेट बैंक द्वारा सहयोग विलेज संस्था को 15 साइकिल एवं दो कंप्यूटर उपलब्ध कराया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के निर्वहन के क्रम में भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय बोकारो द्वारा स्थानीय सहयोग विलेज संस्था को 15 साईकिल एवं 02 कंप्यूटर सेट का वितरण भारतीय स्टेट बैंक, पटना मंडल के मुख्य महाप्रबंधक श्री के. वी. बंगारराजु के द्वारा किया गया। इस पुनीत अवसर पर धनबाद अंचल के उप महाप्रबंधक विजय कुमार एवं बोकारो के क्षेत्रीय प्रबंधक अभिषेक कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे। तत्पश्चात मुख्य महाप्रबंधक एवं उप महाप्रबंधक के द्वारा सहयोग विलेज के प्रांगण में फलदार पौधारोपण भी किया गया। ज्ञातव्य हो कि सहयोग विलेज अनाथ, निराश्रित,असहाय, भूले भटके एवं बाल तस्करी के शिकार बच्चों हेतु बालगृह का संचालन बोकारो जिला में सन 2018 से कर रही है। अपने उद्बोधन में मुख्य महाप्रबंधक श्री के. वी. बंगारराजु ने कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के निर्वहन में भारतीय स्टेट बैंक की अग्रणी भूमिका को रेखांकित किया। निश्चित रूप से यह योगदान समाज को सशक्त बनाने एवं सर्वांगीण विकास के प्रतिबद्धता को दशार्ता है। प्रदत्त साइकिल जहां बच्चों को शिक्षा एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं तक सुगमता से पहुंचने में मदद करेगी, वहीं कंप्यूटर तकनीकी क्षेत्र में कौशल विकास से लेकर बौद्धिक विकास में काफी मददगार साबित होगा। उप महाप्रबंधक विजय कुमार ने कहा कि यह केवल दान ही नहीं अपितु भारतीय स्टेट बैंक को हरेक भारतीय का बैंक बनाने के दृढ़ संकल्प के प्रतिबद्धता को दशार्ता है। क्षेत्रीय प्रबंधक अभिषेक कुमार सिन्हा ने कहा कि इस ओर हमारा लगातार प्रयास सामाजिक चेतना के साथ-साथ आर्थिक रूप से समाज एवं देश को और भी मजबूती प्रदान करने में मील का पत्थर साबित होगा। इस कार्यक्रम को मूर्त रूप देते हुए सफल बनाने में क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय के मुख्य प्रबंधक अमर नाथ, श्री अरविंद कुमार सिन्हा, सहदेव कच्छप, वंदना कुमारी, प्रीति कुमारी एवं राघव कुमार सिंह ने अपनी अग्रणी भूमिका प्रदान की।

संक्षिप्त खबरें

पत्रकार पर जानलेवा हमला के विरोध में पत्रकारों ने काला बिल्ला लगाकर किया विरोध प्रदर्शन

धनबाद : गुरुवार को कतरास प्रेस क्लब के प्रांगण में कतरास प्रेस क्लब के पदाधिकारी एवं सदस्यों की एक आपातकालीन बैठक प्रेस क्लब के अध्यक्ष इंद्रजीत पासवान की अध्यक्षता में हुई। बैठक में प्रेस क्लब के सदस्य एवं निजी चैनल के संपादक निकेश पांडे पर कोयला माफियाओं द्वारा हुआ हमला और अपहरण करने की कोशिश मामले की घोर निंदा की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि पूरे प्रकरण में पुलिस के वरीय अधिकारियों से मिलने से लेकर अपराधियों को सजा दिलाने तक एक नौ सदस्य टीम प्रेस क्लब के सदस्यों के द्वारा बनाई जाएगी। इसके बाद सरस्वती से 9 सदस्य टीम का गठन किया गया। जिसमें प्रेस क्लब के अध्यक्ष इंद्रजीत पासवान सचिव विनय वर्मा पूर्व महासचिव बिनोद रजक पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष राम पांडे संगठन सचिव मुन्ना यादव पूर्व सह कोषाध्यक्ष जितेंद्र पासवान, निकेश पांडे, काशीनाथ एवं सत्येंद्र तिवारी टीम के सदस्य बने। बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के बाद अगर अपराधियों की गिरफ्तारी नहीं होती है तो विधि संवत चरणबद्ध आंदोलन कतरास प्रेस क्लब के बैनर तले किया जाएगा। वहीं गुरुवार को इस घटना के विरोध में प्रेस क्लब कतरास के सदस्यों के द्वारा काला बिल्ला लगाकर विरोध प्रदर्शन किया गया। बैठक में मुख्य रूप से कतरास प्रेस क्लब के अध्यक्ष इंद्रजीत पासवान महासचिव विनय वर्मा कोषाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह संगठन सचिव धनजी यादव उर्फ मुन्ना, दीपक गुप्ता, पूर्व महासचिव बिनोद रजक, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष राम पांडे, पूर्व सह कोषाध्यक्ष जितेंद्र पासवान, पूर्व प्रवक्ता जितेंद्र कुमार जीतू, संजय गुप्ता, कुमार अजय, मो कलाम, पिंटू शर्मा, सत्येंद्र तिवारी, भोला झा, सूर्य देव मांझी, विजय भूंईया, अरविंद सिन्हा, प्रेम कुमार, कुंदन विश्वकर्मा, काशीनाथ, अविनाश मिश्रा, मो समीद मो जमीर मो राजा मो आफताब, हरेंद्र महतो, संतोष दे, रोशन हजारी, सकलदेव प्रमाणिक, अश्विनी दुबे, आदि पत्रकार साथी मौजूद थे।

नगरी कला उत्तर पंचायत के मुखिया राजेंद्र महाप्रबंधक से मिले

धनबाद : नगरी कला उत्तर पंचायत के मुखिया राजेंद्र प्रसाद महतो उर्फ रिंकू ने सिजुआ क्षेत्रीय महाप्रबंधक सुधाकर प्रसाद से क्षेत्रीय कार्यालय में मिलकर सी एस आर योजना के तहत नगरी कला उत्तर पंचायत में विवाह भवन का निर्माण तालाबों का जीर्णोद्धार छठ घाटों का निर्माण गांव में बिजली की व्यवस्था करने की बात रखी। मुखिया राजेंद्र प्रसाद उर्फ रिंकू ने कहा बीते बरसों भी युक्त मुद्दों को लेकर महाप्रबंधक के साथ वार्ता हुई थी। बरसों बीत जाने के बाद भी आज तक सी एस आर योजना मद से ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने के लिए कंपनी द्वारा कोई उचित पहल नहीं किया गया है। रिंकू महतो ने कहा ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने के लिए कंपनी के द्वारा सी एस आर योजना लाई गई है। अधिकारियों के उदासीनता के कारण आज तक इस योजना का सदुपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं किया गया। रिंकू ने कहा अगर इस योजना पर कंपनी प्रबंधक शीघ्र काम करने की रणनीति नहीं बनाई तो बाध्य होकर गांव के लोग कंपनी का उत्पादन ठप कर देंगे। मुखिया की बातों को गंभीरता से लेते हुए सिजुआ महाप्रबंधक सुधाकर प्रसाद ने अपने अधीनस्थ अधिकारियों से वार्ता कर इस वित्तीय वर्ष में नगरीकला उत्तर पंचायत को विकसित करने का भरोसा दिया।

ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान का भाजपा नेता अमरेश सिंह ने किया स्वागत

धनबाद : गुरुवार को संविधान गौरव अभियान के तहत झारखंड प्रवास पर भारत के ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान धनबाद के प्रसिद्ध उद्योगपति समाजसेवी एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता अमरेश सिंह के हाउसिंग कॉलोनी स्थित आवास पहुंचे जहां पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत–अभिनंदन किया गया। साथ ही ग्रामीण राज्य मंत्री ने अमरेश सिंह के परिजनों से मुलाकात की। इस दौरान अमरेश सिंह ने ग्रामीण राज्य मंत्री कमलेश पासवान से ग्रामीण परिवेश के विकास योजनाओं व विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। अमरेश सिंह के आवास में ग्रामीण विकास राज्य मंत्री का अमरेश सिंह के अलावा उनके पिता राम अवतार फाउंडेशन के चेयरमैन राज कुमार सिंह, माता शीला सिंह, बहन डॉ सुनीता सिंह, पत्नी मृदुला सिंह, बहनोई प्रशांत सिंह, भाई अरविन्द सिंह सहित परिवार के अन्य सदस्यों ने स्वागत किया।

केंद्रीय मंत्री कमलेश पासवान संविधान गौरव अभियान संगोष्ठी में हुए शामिल

धनबाद : भाजपा 15 से 25 जनवरी तक संविधान गौरव अभियान चला रही है। इसके तहत विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसमें केंद्रीय मंत्री, प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष और प्रदेश के नेता शामिल हो रहे हैं। अभियान के तहत गुरुवार को धनबाद में आयोजित संगोष्ठी कार्यक्रम में केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। संविधान गौरव यात्रा पर निकले मंत्री कमलेश पासवान ने संगोष्ठी में बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर के विचारों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि संविधान हमारा गौरव है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान भारतीय संविधान के निर्माण में ऐतिहासिक है। उन्होंने समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के सिद्धांतों को संविधान की नींव में स्थापित किया, जिससे देश के हर नागरिक को न्याय और सम्मान का अधिकार मिला। इस संगोष्ठी कार्यक्रम में सांसद ढुल्लु महतो, विधायक राज सिन्हा, जिला अध्यक्ष समेत भाजपा के तमाम नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के संदर्भ में जानकारी देते हुए विधायक राज सिन्हा ने कहा कि भाजपा देश भर में संविधान गौरव यात्रा कार्यक्रम चला रही है। हम संविधान के गौरव को बताने निकले हैं। आज हम इस संविधान गौरव अभियान के तहत यह बता रहे हैं कि संविधान हमारा गौरव है।

एक नजर

अवैध शराब बेचने पर तीन होटलों में छापेमारी, शराब जब्त

रामगढ़ : रामगढ़ डीसी चंदन कुमार के निर्देश पर रजरप्पा थाना क्षेत्र के कुल्ही गांव में उत्पाद विभाग के जरिये छापेमारी की गई। यहां तीन होटलों में अवैध शराब की बिक्री हो रही थी। उत्पाद विभाग की ओर से की गई कार्रवाई में भारी मात्रा में अवैध शराब जब्त किया गया है। कुल्ही गांव में स्थित विभिन्न होटलों एवं ढाबा में गहन एवं व्यापक छापेमारी किया गया। जहां कुल 3 अभियोग दर्ज करते हुए 35 लिटर अवैध चुलाई शराब एवं 6.50 लीटर अवैध बीयर बरामद किया गया। जीतू महतो के होटल से 10 लीटर अवैध चुलाई शराब एवं 6.50 लीटर अवैध बीयर बरामद करते हुए अभियुक्त के विरुद्ध फरार अभियोग दर्ज किया गया। गंगाराम महतो के होटल से 20 लीटर अवैध चुलाई शराब बरामद करते हुए फरार अभियोग दर्ज किया गया। उमेश महतो के होटल में छापेमारी कर पांच लीटर अवैध चुलाई शराब बरामद करते हुए अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।

सांस्कृतिक परंपरा का बढ़ावा आवश्यक : देवेंद्रनाथ महतो

अनगड़ा : सोनाहातु नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती महोत्सव आज धूमधाम से मनाया गया। जयंती के उपलक्ष में आज सोनाहातु में सांस्कृतिक बृहद मैला आयोजित किया गया। यह मैला तेलवाडीह डिहमोड, सुभाष मैदान में सम्पन्न किया गया। मेले में आस-पास के भारी संख्या में लोग जुटे। मेला कमेटी द्वारा एक दिवसीय क्रिकेट खेल, मुर्गा लड़ाई, चौडल प्रदर्शन किया गया। एवं इसके साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुती किया गया। मुख्य अतिथि जेएलएफ वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्र नाथ महतो, तेलवाडीह ग्राम प्रधान भूतनाथ सिंह मुंडा, मुखिया फनी भूषण मुंडा, सिगिद ग्राम प्रधान सच्चिदानंद मुंडा ने अपनी बातों को रखा। देवेंद्रनाथ महतो ने सभा संबोधन में कहा कि हमारे देश के आजादी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का अहम योगदान रहा है। देश विदेश के वर्तमान राजनीति को समझते हुए देश के सम्पूर्ण आंतरिक ताकतों को एकजुट कर देश कि आजादी पर लड़ाई लड़ा। हमें अपने सांस्कृत परंपरा को बढ़ाना देना परम आवश्यक है। सांस्कृतिक विरासत के साथ देश के तरक्की पर हम लोग अपना योगदान सूचित करेंगे। सांस्कृत संगीत प्रोवर नायक, गोविंद लाल महतो ने प्रस्तुत किया। मेले के आयोजक कमेटी में बैजनाथ कोयरी, रसोराम हजाम,अनिल महतो, छोटू सिंह हीरालाल, सुभाष महतो, नीलकमल, शीवा आदि सक्रिय रहे।

वित्त मंत्री के कार्यक्रम में मधुमक्खियों का हमला कई अधिकारी और पत्रकार जख्मी

पलामू : झारखंड के वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर के निरीक्षण कार्यक्रम में मधुमक्खियों का हमला हुआ। इस घटना में कई अधिकारी और पत्रकार जख्मी हो गए। मंत्री को निरीक्षण कार्यक्रम बीच में ही रोक कर लौटना पड़ा। गुरुवार को वित्त मंत्री राधा कृष्ण पलामू जिले के पांकी प्रखंड में अमानत नदी बराज के अधूरे कार्यो का निरीक्षण करने पहुंचे थे। बराज के पुल पर चढ़ कर जायजा ले रहे थे। अमानत बराज का निर्माण करीब दो दशक से लंबित है। नहर इलाके का मुआवजा समेत अन्य मामलों की जानकारी लेनी थी। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर दोपहर अमानत बराज का निरीक्षण करने पहुंचे थे। प्रभावित ग्रामीण से बातचीत कर रहे थे। मुआवजा को लेकर चर्चा हो रही थी। बातचीत के क्रम में मंत्री एवं जल संसाधन विभाग के अधिकारी पर आज का भौतिक जायजा लेने लगे। अचानक लोगों की भारी भीड़ देखकर मधुमक्खियां हमला करने लगी। मंत्री को अपना सर मफलर से ढकना पड़ा। तुरंत उन्हें गाड़ी में बैठाया गया और रवाना किया गया। इसी तरह उपायुक्त, उप विकास आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी एवं अन्य अधिकारी ने भी मौके से भाग कर अपनी जान बचाई। स्थानीय ग्रामीण भी मधुमक्खियां के हमले से भयभीत नजर आए।

ऊषा मार्टिन ने लगाया आयुर्वेद का मेगा कैंप, 110 लोगों का हुआ निःशुल्क इलाज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : वर्तमान समय में आयुर्वेद वरदान है। इससे जीवन और शरीर दोनों का इलाज होता है। उक्त बातें साईं बालाजी आयुर्वेदिक हॉस्पिटल के डॉ ऋषि ने कहीं। शालिनी अस्पताल, साईं बालाजी आयुर्वेदिक हॉस्पिटल एवं उषा मार्टिन फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में आज हेंसल, अनगड़ा में आयुर्वेदिक कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें 110 लोगों को चिकित्सा परामर्श एवं दावा वितरण किया गया। डॉ ऋषि ने सभी मरीजों को आयुर्वेद के फायदे के बारे में जानकारी दी। आयुर्वेद की बढ़ती लोकप्रियता और पंचकर्म के जरिए ईलाज के बारे में बताया। उषा मार्टिन फाउंडेशन के सचिव डॉ मयंक मुरारी ने ग्रामीणों को आयुर्वेद के फायदे और फाउंडेशन की ओर से स्वास्थ्य पर किए जा रहे कार्यक्रम की चर्चा की, स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता और उनको स्वास्थ्य कार्यक्रम से जोड़ के कार्य करने की अपील की। उन्होंने बताया कि प्रत्येक गाँव से एक समूह का निर्माण किया जाएगा जो स्वास्थ्य से संबंधित कार्य भी करेंगे विशेष कर अधिक उम्र के ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधा से जोड़ना और उनके स्वास्थ्य अधिकार के बारे में जागरूक किया जाएगा। शालिनी अस्पताल के राणा विकास ने बताया कि अस्पताल एवं उषा मार्टिन फाउंडेशन के प्रयास से क्षेत्र के लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करने के क्रम में आज का आयुर्वेदिक कैंप का आयोजन किया गया, कैंप का उद्देश्य दर्द निवारण में आयुर्वेद की जरुरत और फायदे को ग्रामीणों तक पहुंचना है। शालिनी अस्पताल में निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन भी किया जा रहा है जिसमें अबतक लगभग 500 से ज्यादा मरीजों का मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया गया है। ये सुविधा फरवरी तक जारी रहेगा। कैंप को सफल बनाने में अस्पताल के संपूर्णानंद, शिशिर, मोहनराय, फाउंडेशन से मोनित, हेंसल गांव की समूह सदस्य अनीता कुजूर, सुनीता कुजूर एवं नर्सिंग के विद्यार्थियों का योगदान रहा।

श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा की वर्षगांठ उत्साह के साथ मनायी गयी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया (गिरिडीह) : सरिया नगर पंचायत क्षेत्र के चंद्रमारणी मुहल्ला स्थित सार्वजनिक बजरंगबली मंदिर परिसर में श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ बड़े ही धूम धाम से बुधवार को देर रात तक मनाई गई। श्री राम मंडली चंद्रमारणी के तत्वाधान में आयोजित इस अवसर पर मंदिर क्षेत्र को आकर्षक ढंग से सजाया गया। विभिन्न प्रकार की रंगोलिया बनाई गई। 2100 दीपक प्रज्वलित किए गए। उद्भट ब्राह्मण समूह द्वारा वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ भगवान श्री राम लाल की षोडषोपचार विधि से पूजा की गई. महा आरती के पश्चात नैवेद्य वितरण किया गया। पश्चात भजन संध्या सह भंडारा का आयोजन किया गया। जिसमें भजन प्रवाहिका स्नेहल सोनी ने हिंदू जागरण गीत और जग में भगवा लहराएगा जैसे भजनों को प्रस्तुत करके पूरे इलाकों को भक्ति में एक नई ऊर्जा से भर दिया। स्थानीय लोगों ने जमकर तालियां बजाई एवं भक्ति में लीन होकर झूम उठे। इस कार्यक्रम में सरिया के स्थानीय कलाकार श्रद्धा सुमन भजन मंडली के सभी सदस्यगण भी उपस्थित थे। जिनमें सौरभ सोनी,राजेंद्र मखीजा,मन्नू चावला, ऋतिक चौरसिया इत्यादि शामिल थे। समिति के सदस्यों ने कहा कि वे इस कार्यक्रम को और बेहतर तरीके से करने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे। उन्होंने कहा,हम भगवा का सम्मान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्हें उम्मीद है कि यह कार्यक्रम सनातन धर्मावलंबियों को एकजुट करने में मदद करेगा।

सरिया अस्पताल परिसर में प्रखंडस्तरीय स्वास्थ्य मेला का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया (गिरिडीह): सरिया स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में गुरुवार को विभागीय स्तर पर स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया। मेला में महिला एवं शिशु, मलेरिया, फाइलेरिया, टीबी, कुष्ठ, आयुष्मान एवं आभा कार्ड, नेत्र जांच, दंत चिकित्सा, ओपीडी, सामान्य ओपीडी,परिवार नियोजन, कैंसर नियंत्रण समेत अन्य कई बीमारियों के इलाज व चिकित्सकीय सलाह के लिए 15 स्टॉल लगे थे। शिविर में 898 मरीजों की स्वास्थ्य जांच के साथ उन्हें आवश्यक दवाइयां दी गयी। शिविर में 30 मरीजों के बीच आयुष्मान एवं आभा कार्ड बनाकर वितरण किया गया। इस मेले का उद्घाटन सरिया अनुमंडल पदाधिकारी संतोष गुप्ता, बीडिओ ललितनारायण तिवारी, सीओ संतोष कुमार, प्रमुख प्रीति कुमारी, जिप सदस्य अनूप पाण्डेय व चिकित्सा पदाधिकारी डा.विनय कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस दौरान अनुमंडल पदाधिकारी संतोष गुप्ता ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वास्थ्य विभाग की यह पहल सराहनीय है, क्योंकि शिविर में एक साथ लगे कई तरह के स्टॉल में मरीजों को स्वास्थ्य जांच की सुविधा मिल जाती है। उन्होंने सरिया प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के सभी डॉक्टरों एवं स्वास्थ्यकर्मियों को मरीजों की सेवा में किसी तरह की कोताही न करने एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए अस्पताल पहुंचने वाले वाले सभी मरीजों को त्वरित स्वास्थ्य जांच व समुचित इलाज उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। वहीं प्रमुख प्रीति कुमारी ने कहा कि सिर्फ शिविर लगाने से स्वास्थ्य व्यवस्था में बदलाव नहीं होगा, बल्कि प्रखंड के पीएचसी व स्वास्थ्य उपकेंद्रों में भी हर समय चिकित्सा सुविधा आम लोगों को मिले, इसके लिए सभी को मिलकर काम करने की जरूरत है।

पिंटू हत्या का कांड : भाभी निकली मुख्य साजिशकर्ता, पांच आरोपी गिरफ्तार

संपत्ति विवाद के कारण हुई थी हत्या
भाभी और चार अन्य आरोपी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो के कसमार थाना क्षेत्र के मधुकरपुर में पिछले दिनों हुए हत्या का पुलिस ने किया खुलासा। भाभी ही निकली हत्या की मुख्य साजिशकर्ता, जिसने चार अपराधियों के साथ मिलकर हत्या की रची थी साजिश। इस मामले में पुलिस ने भाभी सुनीता सहित पांच आरोपियों को हत्या के मामले में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। इन आरोपियों के पास से एक देशी पिस्टल, एक देशी कट्टा, 9 गोली और एक खोखा को पुलिस ने बरामद किया है और 12 जनवरी को देर रात घर में घुसकर हत्या के मामले का उद्भेदन भी कर दिया। ये हत्या जमीन और संपत्ति विवाद के कारण हुई है। इस मामले में मृतक का अपनी ही भाभी सुनीता देवी मुख्य साजिशकर्ता निकली जो तीन लाख में अपने ही देवर के हत्या की सुपारी शूटर को दे दी। पहली किस्त में डेढ़ लाख दिया गया था और काम तमाम करने के बाद बाकी के रकम देनी थी। मृतक पिंटू कुमार नायक हजारीबाग के डीसी ऑफिस में काम करता था ओर यह मामला कसमार थाना क्षेत्र का है। घटना के बारे में बोकारो एसपी मनोज स्वर्गियारी ने अपने कार्यालय में प्रेस कॉफ्रेंस के माध्यम से खुलासा किया। एसपी ने कहा की ये हत्या संपत्ति विवाद के कारण हुई है और मृतक तीन भाई था जिसमे बड़ा भाई कुंवारा में ही पहले ही मौत हो चुकी थी। मंझले भाई शादी के बाद कुछ दिनों तक रहा और पिछले 10 साल से लापता है वहीं छोटा भाई जो मृतक था वो हजारीबाग में डीसी ऑफिस में काम करता था। पिछले कुछ दिनों से देवर और भाभी के बीच संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा था जिसमे भाभी ने देवर को रास्ते से हटाने की ठानी और पेटरवार थाना क्षेत्र के रहनेवाला शूटर छोटे लाल नायक और टिमा तुरी को हायर किया साथ ही राहुल कश्यप और हजारीबाग का रहनेवाला अजीत कुमार भी शामिल था। इसमें अजीत कुमार रैकी करने का काम किया था। मृतक पिंटू कुमार नायक जैसे ही 12 जनवरी को हजारीबाग से अपने घर कसमार थाना क्षेत्र के मधुकरपुर पहुंचा तो रात्रि के करीब 12 बजे जब वो सो रहा था तो आरोपियों ने घर में घुसकर दो गोली सीने में दाग दिया। पहली गोली की आवाज सुनते ही पिता दौड़कर आया जहा उनके सामने ही बेटे को आरोपियों ने दूसरी गोली दाग दिया और घर के छत के रास्ते से भाग निकला। घटना के बाद मृतक के पिता ने पुलिस को जानकारी दी जहां मौके पर पुलिस पहुंचकर अस्पताल ले जाया गया जहां मृत घोषित कर दिया।

करंट लगने से महिला झुलसी अस्पताल में भर्ती

गिरिडीह : गावां थाना क्षेत्र के पांडेयडीह में करंट लगने से एक महिला झुलस गई। उसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। बताया गया कि पांडेयडीह निवासी दिलीप यादव की पत्नी रिंकू देवी गुरुवार को घर के बाहर खड़ी थी। तभी सामने से गुजरा मेन लाइन के तार का टोका नीचे गिर गया। वह तार को हाथ से हटाने लगी, जिससे करंट का जोरदार झटका लगा और वह झुलस गई। परिजन उसे तुरंत गावां सीएचसी ले गए, जहां डॉ काजिम खान ने उसका इलाज किया। घायल महिला अभी सीएचसी में भर्ती है।

पांकी अमानत बराज का वित्त मंत्री ने अधिकारियों और इंजीनियरों के साथ किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : सबकुछ ठीकठाक रहा तो डेढ़ दशक से लंबित पांकी अमानत बराज के अधूरे कार्य पर 15 फरवरी के बाद निर्माण शुरू हो जायेगा। जमीन संबंधित मामलों के निपटारे के लिए इसी महीने 30, 31 जनवरी और एक फरवरी को बराज परिसर में विशेष कैंप लगाया जायेगा। जिन ग्रामीणों की जमीन बराज निर्माण क्षेत्र में अधिग्रहित की गयी है, वे इस कैंप में शामिल होकर मुआवजा भुगतान से संबंधित अपना दावा कर सकते हैं। उक्त बातें झारखंड के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कही। गुरुवार को मंत्री पांकी बराज का निरीक्षण कर रहे थे। मंत्री के साथ जल संसाधन विभाग के सीनियर अधिकारी, इंजीनियर और पलामू जिला प्रशासनिक अधिकारियों की टीम भी थी। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने बराज क्षेत्र का निरीक्षण किया। बराज की वर्तमान स्थिति का जायजा लेने के साथ साथ अधिग्रहित भूमि के मुआवजा भुगतान को लेकर ग्रामीणों से बात की। मंत्री ने कहा कि मुआवजा भुगतान को लेकर इसी महीने 30, 31 और एक फरवरी को बराज परिसर में भूमि से संबंधित मामलों को लेकर विशेष कैंप का आयोजन किया जायेगा, जिसमें विशेष भू-अर्जन पदाधिकारी, अपर समाहर्ता और अंचलाधिकारी पूरी टीम के साथ कैंप करेंगे और मुआवजा भुगतान को लेकर जरूरी कार्रवाई करेंगे। जरूरत पड़ने पर सदर एसडीओ को भी मौके पर भेजा जायेगा। 15 फरवरी तक मुआवजा भुगतान की प्रक्रिया पूरी कर लेनी है। मंत्री ने कहा कि पांकी बराज के शुरू होने से 23 हजार हेक्टेयर भूमि सिंचित होगी। पांकी के साथ साथ पाटन और छतरपुर के किसानों को विशेष रूप से फायदा होगा। 15 फरवरी तक मुआवजा भुगतान कर दिया जायेगा और स्थिति ठीक ठाक रही तो निर्माण कार्य भी शुरू कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि बराज का अधूरा निर्माण लंबे समय से 15 वर्ष लंबित है और झारखंड राज्य बनने के बाद से किसी ने इसके अधूरे निर्माण को पूरा करने की दिशा में अबतक पहल नहीं की है। उनकी पूरी कोशिश है कि बराज का निर्माण पूरा कराके किसानों के खेतों तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचाया जाए। मंत्री ने यह भी कहा कि बराज के डूब क्षेत्र में आने वाले ग्रामीणों को अगर प्रधानमंत्री आवास या अबुआ आवास स्वीकृत हुआ है तो उसे प्रावधान के तहत अगर उनकी जमीन दूसरी जगह है तो वहां पर बनाने का आदेश दिया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर पुलिस अधीक्षक सहित जिलेवासियों ने किया माल्यार्पण

लोहरदगा : नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जयंती पर पावरगंज चौक पर स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर गुरुवार को पुलिस अधीक्षक हारिस बिन जमां सहित अन्य अधिकारियों ने माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर कर उन्हें नमन किया। प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित करने वाले अधिकारियों में आईटीडीए परियोजना निदेशक सुषमा नीलम सोरेंग, अपर समाहर्ता जितेंद्र मुंडा, अनुमण्डल पदाधिकारी अमित कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी धीरज ठाकुर, नजारत उपसमाहर्ता अभिनीत सूरज, कोषागार पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय) सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। मौके पर जिले वासियों ने प्रतिमा स्थल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और झंडे को सलामी दी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। मौके पर जिले वासियों ने प्रतिमा स्थल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और झंडे को सलामी दी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। इस दौरान नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन के बारे में विस्तार से बताया गया।

राष्ट्रीय पराक्रम दिवस पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर हुआ माल्यार्पण

रामगढ़ : नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती और राष्ट्रीय पराक्रम दिवस के अवसर पर गुरुवार को रामगढ़ शहर अंतर्गत सुभाष चौक पर माल्यार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान डीसी चंदन कुमार, एसपी अजय कुमार, डीडीसी रोबिन टोप्पो, एसडीओ अनुराग कुमार तिवारी, गोपनीय प्रभारी रविंद्र कुमार गुप्ता सहित अन्य अधिकारियों ने सुभाष चौक स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। डीसी ने सभी से नेताजी सुभाष चंद्र बोस जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके आदर्शों को अपने जीवन में शामिल करने की अपील की। डीसी चंदन कुमार ने कहा कि स्वाधीनता की लड़ाई में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का योगदान अतुलनीय रहा है। उनके जोश ने न सिर्फ अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे, बल्कि भारतीय नागरिकों में आजादी की एक लौ जला दी थी। एसपी अजय कुमार ने कहा कि भारतीय नागरिकों की आजादी के लिए उन्होंने खून बहाने से भी गुरेज नहीं कहा किया था। उन्होंने नारा ही दिया था कि तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा। आज की युवा पीढ़ी को सुभाष चंद्र बोस के उसी जोश और जुनून की जरूरत है। भले ही आज हालात वैसे नहीं है, लेकिन विकास के लिए हमें उतना ही प्रतिबद्ध होना होगा।

रक्तदान शिविर में 98 यूनिट रक्त हुआ संग्रह

सरिया (गिरिडीह) : गुरुवार को सरिया देवकी हॉस्पिटल में मारवाड़ी युवा मंच सरिया एवं ए एस आई झारखंड चैप्टर के संयुक्त तत्वाधान में रक्तदान शिविर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन सरिया एसडीएम संतोष गुप्ता एवं डॉ राजेश कुमार सिंह ने किया। उक्त कार्यक्रम रेड क्रॉस सोसाइटी गिरिडीह के सहयोग से आयोजित की गई। इसमें सरिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए कुल 98 लोगों ने अपना रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों में मुख्य रूप से सरिया पुलिस निरीक्षक ज्ञान रंजन सिंह, डी ए भी स्कूल के प्राचार्य डॉक्टर आरके सिंह, सरिया सेंट मेरी स्कूल के निदेशक पीयूष कुमार सिंह एवं दर्जनों महिलाएं शामिल रही। वही इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरिया एसडीएम संतोष गुप्ता ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन में रक्तदान अवश्य करना चाहिए। रक्तदान करने से मनुष्य को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होता है बल्कि जितना यूनिट लोग रक्तदान करते हैं वही उससे अधिक उनके शरीर में पुनः रक्त बन जाता है। लेकिन दान किए गए रक्त से किसी जरूरतमंद एवं असहाय व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। वही नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष में ऐसे कार्यक्रम होने से इसकी महत्ता और बढ़ जाती है इस आयोजन को लेकर डॉ राजेश कुमार सिंह ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को हर तीन माह की अंतराल में रक्तदान करना चाहिए रक्तदान करने से मनुष्य को किसी प्रकार की कोई नुकसान नहीं होता है बल्कि मनुष्य के शरीर में रक्तदान करने के बाद शरीर का और विकास एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ता है। आज गिरिडीह सिविल सर्जन के प्रयास से यह शिविर सफल रहा। इस शिविर में किए गए रक्त संग्रह किसी जरूरतमंद लोगों की जान बचाने का काम करेगा।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सिल्ली : सिल्ली जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन सिल्ली प्रखंड मुख्यालय के सभागार में बुधवार को किया गया। इस कार्यक्रम में डीएसपी अनुज उरांव, प्रखंड विकास पदाधिकारी अनिल कुमार, अंचलाधिकारी अरुणिमा एक्का उपस्थित थे। वही जन शिकायत में सात आवेदन सिल्ली थाना एवं मुरी ओपी में तीन आवेदन आए जिसमें सातवें आवेदन का निष्पादन किया गया। दूसरी और मुरी सिल्ली आसपास के ग्रामीणों के द्वारा अपनी अपनी शिकायत को लेकर प्रखंड में पहुंचे जहां शिकायतों का समाधान तुरंत किया गया। इस मौके पर सिल्ली थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर, मुरी ओपी प्रभारी कुंदन सिंह, वी हेमरम आदि प्रशासन एवं अधिकारी उपस्थित थे।

नये भारत के लिये बालिकाओं की बंद खिड़कियां खुलें

राष्ट्रीय बालिका दिवस

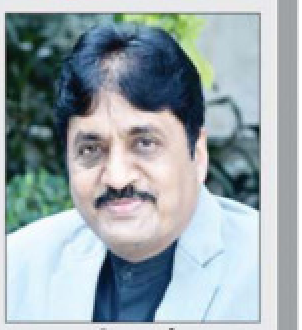

ललित गर्ग

स्वतंत्र भारत में यह कैसा समाज बन रहा है, जिसमें महिलाओं की आजादी छीनने की कोशिशें और उससे जुड़ी हिंसक एवं त्रासदीपूर्ण घटनाओं ने बार-बार हम सबको शर्मसार किया है। राष्ट्रीय बालिका दिवस का अवसर इन त्रासद एवं क्रूर स्थितियों पर आत्म-मंथन करने का है,

जहां पांव में पायल, हाथ में कंगन, हो माथे पे बिंदिया, इट हैपन्स ओनली इन इंडिया- जब भी कानों में इस गीत के बोल पड़ते है, गर्व से सीना चौड़ा होता है। जब नवरात्र के दिनों में कन्याओं को पूजित होने के स्वर सुनते हैं तब भी शकुन मिलता है लेकिन जब उन्हीं कानों में यह पड़ता है कि इन पायल, कंगन और बिंदिया पहनने वाली बालिकाओं के साथ कैसे अत्याचार, यौन-शोषण इंडिया क्या करता है, तब सिर शर्म से झुकता है। भारतीय समाज में लड़कियों को अक्सर भेदभाव, यौन-शोषण और अन्याय का सामना करना पड़ता है। उन्हें अक्सर अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के अवसर से वंचित रखा जाता है और उन्हें बहुत कम उम्र से ही घर के कामों में मदद करनी पड़ती है। इन्हीं विडम्बनाओं एवं विसंगतियों को नियंत्रित करने के लिये भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 2008 में राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने की शुरूआत की। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य भारतीय समाज में लड़कियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता फैलाना है। यह दिन समाज में लड़कियों के खिलाफ लैंगिक असमानता, रूढ़िवादिता, भेदभाव, यौन-शोषण और हिंसा की मौजूदा समस्याओं पर प्रकाश डालता है, बालिकाओं को सशक्त बनाता है और शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में लड़कियों को समान अवसर प्रदान करने के महत्व का संदेश देता है। बालिकाओं की बन्द खिड़कियां खुलें, तभी नया भारत-सशक्त भारत बन सकेगा।

सरकार का उद्देश्य बालिका दिवस के माध्यम से बालिकाओं के साथ समान व्यवहार करने और उन्हें वे अवसर प्रदान करने की तत्काल आवश्यकता को व्यक्त करना है, जिनकी वे हकदार हैं। यह दिवस प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शुरूआत की तिथि भी है। इसका लक्ष्य बालिका लिंग अनुपात में गिरावट के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करना भी है। राष्ट्रीय बालिका दिवस 2025 की थीम ह्यउज्ज्वल भविष्य के लिए लड़कियों को सशक्त बनानाह्न है। इसके लिये भारत में बालिकाओं के लिए कई सरकारी योजनाएं चल रही हैं। लेकिन कई प्रभावी सरकारी योजनाओं के बावजूद भारत में बालिकाओं की स्थिति चिन्ताजनक है। देश में हुई 2016 की जनगणना में लड़कों की तुलना में लड़कियों की घटती संख्या के आंकडे. चौंकाते ही नहीं बल्कि दुखी भी करते हैं। जिस तरह से लड़के-लड़कियों का अनुपात असंतुलित हो रहा है, उससे ऐसी चिन्ता भी जतायी जाने लगी है कि यही स्थिति बनी रही तो लड़कियां कहां से लाएंगे? हालत यह है कि आंध्र

प्रदेश में 2016 में प्रति एक हजार लड़कों के मुकाबले महज आठ सौ छह लड़कियों का जन्म दर्ज किया गया। यह आंकड़ा सबसे निम्न स्तर पर मौजूद राजस्थान के बराबर है। तमिलनाडु, कर्नाटक जैसे राज्यों में भी तस्वीर बहुत बेहतर नहीं है। बालिकाओं की घटती संख्या एक गंभीर चिन्ता का विषय है।

हालांकि, बहुत से लोगों का मानना है कि 21वीं सदी तक आते-आते बालिकाओं एवं महिलाओं की जिंदगी में बहुत बदलाव आए हैं लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए अब हालात पहले से ज्यादा खराब हो चुके हैं। कहने को भले ही लड़कियां हर मामले में लड़कों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हो, हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा, क्षमता एवं कौशल का लोहा मनवा रही है लेकिन उनके सामने हर रोज एक लंबी चुनौती भी खड़ी है। भारतीय बालिकाओं एवं महिलाओं की समस्याएं केवल सामाजिक अधिकारों तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि कार्यस्थलों और घरों में भी वह मानसिक और सामाजिक रूप से प्रभावित होती हैं। बालिकाओं एवं महिलाओं की सोच में भले ही पिछले कुछ सालों की तुलना में बदलाव आए हों लेकिन मर्दों की सोच और रवैये में कुछ खास फर्क नजर नहीं आता है। ऐसा इसलिए क्योंकि सड़क पर छोटे कपड़े पहनकर चलने में लगभग हर महिला ही असुरक्षित महसूस करती है। चीरहरण करती आंखें, अंजाने में छूने वाले हाथ और सीटियों की गूंज का सामना किसी लड़के को नहीं बल्कि लड़की को ही हर रोज करना पड़ता है। कुछ घरों में आज भी लड़कों की तुलना में लड़कियों के साथ अलग व्यवहार किया जाता है। वह कैसे बोलती है, कैसे कपड़े पहनती है, अपना जीवन जीने का तरीका किस तरह चुनती है, भले ही इन बातों से उसे कोई फर्क नहीं पड़ रहा हो लेकिन उसके आसपास रहने वाले लोग इससे असुरक्षित वातावरण महसूस करने लगते हैं। ज्यादातर लोगों ऐसा मानना है कि एक बालिका को मिलनसार होना चाहिए। उसे हमेशा ही समझौता करना चाहिए। भले ही वह बातें उसे नुकसान क्यों न पहुंचा रही हों।

जन्म से पहले ही पता चल जाए कि बच्ची पैदा होगी तो ये उसकी जान लेने से भी नहीं कतराते। पिछली सदी में समाज के एक बड़े वर्ग में यह एक विभीषिका ही थी कि परिवार की धुरी होते हुए भी नारी को वह स्थान प्राप्त नहीं था जिसकी वह अधिकारिणी थी। उसका मुख्य कारण था सदियों से चली आ रही कुरीतियाँ, अंधविश्वास व बालिका शिक्षा के प्रति संकीर्णता। कितनी विडम्बना है कि देश में हम ह्यबेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्न का नारा बुलन्द करते हुए एक जोरदार मुहिम चला रहे हैं उस देश में लगातार बालिकाओं की संख्या घटने का दाग लग रहा है। यह दाग ह्यएक भारत, श्रेष्ठ भारतह्न के संकल्प पर भी लगा है और यह दाग हमारे द्वारा नारी को पूजने की परम्परा पर भी लगा है। लेकिन प्रश्न है कि हम कब बेदाग होंगे? अच्छे भविष्य के लिए हम बेटियों की पढ़ाई से ही सबसे ज्यादा उम्मीदें बांधते हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे नारे हमारे संकल्प को बताते हैं, हमारी सदिच्छा को दिखाते हैं, भविष्य को लेकर हमारी सोच को जाहिर करते हैं, लेकिन वर्तमान की हकीकत इससे उलट है। वे पढ़ाई में अपने झंडे भले ही गाड़ दें, लेकिन उन्हें आगे बढ़ने से रोकने की क्रूरताएं कई तरह की हैं। उसका मुख्य कारण है सदियों से चली आ रही कुरीतियाँ, अंधविश्वास व बालिका शिक्षा के प्रति संकीर्णता। शताब्दियों से हम साल में दो बार नवरात्र महोत्सव मनाते हुए कन्याओं को पूजते हैं। लेकिन विडम्बना देखिये कि सदियों की पूजा के बाद भी हमने कन्याओं को उनका उचित स्थान और सम्मान नहीं दे पाये हैं। इन त्रासद, अमानवीय एवं विडम्बनापूर्ण नारी अत्याचार की बढ़ती घटनाओं के होते हुए मां दुर्गा को पूजने का क्या अर्थ है?

बालिकाओं के साथ होने वाली त्रासद एवं अमानवीय घटनाएं -निर्भया कांड, नितीश कटारा हत्याकांड, प्रियदर्शनी मट्टू बलात्कार व हत्याकांड, जेसिका लाल हत्याकांड, रुचिका मेहरोत्रा आत्महत्या कांड, आरुषि मर्डर मिस्ट्री की घटनाओं में पिछले कुछ सालों में इंडिया ने कुछ और ऐसे मौके दिए जब अहसास हुआ कि भ्रूण में किसी तरह नारी अस्तित्व बच भी जाए तो दुनिया के पास उसके साथ और भी बहुत कुछ है बुरा करने के लिए। बहशी एवं दरिन्दे लोग ही बालिकाओं को नहीं नोचते, समाज के तथाकथित ठेकेदार कहे जाने वाले लोग और पंचायतें, तथाकथित राम-रहीम जैसे धर्मगुरु भी बालिकाओं की स्वतंत्रता एवं अस्मिता को कुचलने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे हैं, स्वतंत्र भारत में यह कैसा समाज बन रहा है, जिसमें महिलाओं की आजादी छीनने की कोशिशें और उससे जुड़ी हिंसक एवं त्रासदीपूर्ण घटनाओं ने बार-बार हम सबको शर्मसार किया है। राष्ट्रीय बालिका दिवस का अवसर इन त्रासद एवं क्रूर स्थितियों पर आत्म-मंथन करने का है, क्योंकि बालिकाओं एवं महिलाओं के समावेश, न्याय व सुरक्षा की स्थिति को बताने वाले वैश्विक शांति व सुरक्षा सूचकांक के 177 देशों में भारत का 128वां स्थान है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के विरूद्ध अपराध में राष्ट्रीय औसत 66.4 है। राजधानी दिल्ली का स्थान 144.4 अंकों के साथ सर्वोच्च है। माना जाता है कि 90 प्रतिशत यौन उत्पीड़न जान-पहचान के व्यक्ति ही करते हैं। यानी बालिकाएं अपने ही घर या परिचितों के बीच सबसे ज्यादा असुरक्षित है।

संपादकीय

ड़ॉलर की साख

अमेरिका में राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करते ही डोनाल्ड ट्रंप के आक्रामक तेवर नजर आने लगे हैं। उन्होंने धमकी दी कि ब्रिक्स समूह के देश अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए अमेरिकी डॉलर की बजाय किसी दूसरी मुद्रा को लाने के लिए कोई कदम उठाते हैं तो उन पर 100प्र. शुल्क लगाएंगे। ब्रिक्स देशों में भारत के साथ रूस, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथोपिया, इंडोनेशिया, संयुक्त अरब अमीरात और ईरान शामिल हैं। ट्रंप ने चेतावनी दी है कि न तो वे ब्रिक्स मुद्रा बनाएंगे, न ही शक्तिशाली अमेरिकी डॉलर की जगह किसी अन्य मुद्रा का समर्थन करेंगे। उनके रुख से शेयर बाजार गोता लगाते हुए सात महीने के निचले स्तर पर बंद हुआ। डॉलर की निर्भरता को लेकर तमाम देश वैश्विक वित्तीय व्यवस्था को लेकर सशंकित रहते हैं। डॉलर पर निर्भरता से मुक्त होने के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत लगातार स्थानीय मुद्राओं के प्रयोग की बात दोहराता रहा है। रूस पिछले ब्रिक्स सम्मेलन में स्पष्ट तौर पर कह चुका है कि डॉलर का प्रयोग हथियार के तौर पर हो रहा है। हालांकि ट्रंप ने अपने भाषण में किसी देश का नाम लिए बगैर चेतावनी दी है। वे अपने दूसरे कार्यकाल में पहले के मुकाबले ज्यादा आक्रामक हैं। अमेरिका फर्स्ट नीति को लेकर चुनावी भाषणों में ही उन्होंने तेवर दिखाने शुरू कर दिए थे। दुनिया जानती है कि नवनिर्वाचित राष्ट्रपति के इकोनॉमी को लेकर किए गए तमाम दावे भ्रामक और गलत पाए गए हैं जिसकी लगातार आलोचना होती रही है। अमेरिका के साथ भारत के रिश्ते काफी मजबूत हुए हैं। मगर अंदेशा है कि ट्रंप की कुछ नीतियां पिछले राष्ट्रपति जो बाइडन से भिन्न हो सकती हैं। हालांकि ट्रंप पाकिस्तान को लेकर कड़ा रुख रखते हैं और उसे धोखेबाज और आतंकवादियों को पनाह देने वाला देश बताते रहे हैं जो भारत के पक्ष में जाता है। वह चीन के खिलाफ भी टैरिफ लगाने की धमकी दे चुके हैं जबकि वहां के राष्ट्रपति से उनकी करीबी बढ़ती दिखरही है जिसका असर भारत-जापान जैसे देशों पर पड़ सकता है। चूंकि ट्रंप बड़े. उद्योगपति हैं, इसलिए वे ट्रेड और निवेश को लेकर मुखर है। ट्रंप की नीतियों के प्रति राजनीतिक विश्लेषक पहले ही अंदेशा जता चुके हैं। अमेरिकी डॉलर की साख को वैश्विक आर्थिक बाजार में लगने वाला कोई भी झटका उनकी अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती साबित हो सकता है। अर्थव्यवस्था के मसले में जो भी मुल्क मजबूत हो रहे हैं, वे सब अंकल सैम के लिए खतरा साबित हो सकते हैं।

चिंतन-मनन

जो हो रहा है उसके जिम्मेदार हम स्वंय हैं

हम मनुष्यों की एक सामान्य सी आदत है कि दुःख की घड़ी में विचलित हो उठते हैं और परिस्थितियों का कसूरवार भगवान को मान लेते हैं। भगवान को कोसते रहते हैं कि हे भगवान हमने आपका क्या बिगाड़ा जो हमें यह दिन देखना पड़ रहा है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जीव बार-बार अपने कर्मों के अनुसार अलग-अलग योनी और शरीर प्राप्त करता है। यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक जीवात्मा परमात्मा से साक्षात्कार नहीं कर लेता। इसलिए जो कुछ भी संसार में होता है या व्यक्ति के साथ घटित होता है उसका जिम्मेदार जीव खुद होता है। संसार में कुछ भी अपने आप नहीं होता है। हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है वह कर्मों का फल है। इश्वर तो कमल के फूल के समान है जो संसार में होते हुए भी संसार में लिप्त नहीं होता है। ईश्वर न तो किसी को दुःख देता है और न सुख।

इस संदर्भ में एक कथा प्रस्तुत है? गौतमी नामक एक वृद्धा ब्राह्मणी थी। जिसका एक मात्र सहारा उसका पुत्र था। ब्राह्मणी अपने पुत्र से अत्यंत स्नेह करती थी। एक दिन एक सर्प ने ब्राह्मणी के पुत्र को डंस लिया। पुत्र की मृत्यु से ब्राह्मणी व्याकुल होकर विलाप करने लगी। पुत्र को डंसने वाले सांप के ऊपर उसे बहुत प्रोध आ रहा था। सर्प को सजा देने के लिए ब्राह्मणी ने एक सपेरे को बुलाया। सपेरे ने सांप को पकड़ कर ब्राह्मणी के सामने लाकर कहा कि इसी सांप ने तुम्हारे पुत्र को डंसा है, इसे मार दो।

ब्राह्मणी ने संपेरे से कहा कि इसे मारने से मेरा पुत्र जीवित नहीं होगा। सांप को तुम्ही ले जाओ और जो उचित समझो सो करो। सपेरा सांप को जंगल में ले आया। सांप को मारने के लिए सपेरे ने जैसे ही पत्थर उठाया, सांप ने कहा मुझे क्यों मारते हो, मैंने तो वही किया जो काल ने कहा था। सपेरे ने काल को ढूंढा और बोला तुमने सर्प को ब्राह्मणी के बच्चे को डंसने के लिए क्यों कहा। काल ने कहा ब्राह्मणी के पुत्र का कर्म फल यही था। मेरा कोई कसूर नहीं है। सपेरा कर्म के पहुंचा और पूछा तुमने ऐसा बुरा कर्म क्यों किया। कर्म ने कहा मुझ से क्यों पूछते हो, यह तो मरने वाले से पूछो मैं तो जड़ हूं। इसके बाद सपेरा ब्राह्मणी के पुत्र की आत्मा के पास पहुंचा। आत्मा ने कहा सभी ठीक कहते हैं। मैंने ही वह कर्म किया था जिसकी वजह से मुझे सर्प ने डंसा, इसके लिए कोई अन्य दोषी नहीं है।

एक्टर के हर एक्ट पर सवाल करती सियासत

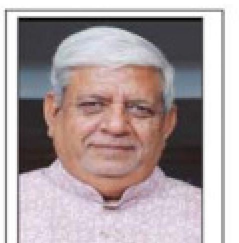

राकेश अचल

सैफ अली खान एक अभिनेता हैं इसलिए उनकी हर गतिविधि क्या अभिनय होती है ? ये सवाल हमने-आपने नहीं बल्कि महाराष्ट्र के सियासतदानों ने उठाया है। सैफ पर हमला ही अब सियासी मुद्दा हो गया है। किसी को यकीन ही नहीं हो रहा कि जानलेवा हमले के बाद सैफ मात्र 3 दिन में तंदुरुस्त होकर अपने घर आ सकते हैं। क्योंकि आम आदमी तो कम से कम एक पखवाड़े तक पलंग नहीं छोड़ सकता। आम आदमी में किसी अभिनेता जितनी कूबत ही नहीं होती।

मैं अक्सर कहता हूँ कि हमारे मुल्क में सियासत मुद्दों पर नहीं होती,सियासत बेसिर -पैर की होती है। और जब होती है तो होती ही चली जाती है। सियासत का ये चरित्र बदलना आसान नहीं है। ये कलिकाल की नहीं मोदी युग की देन है और इसके लिए किसी एक को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। अभिनेता सैफ अली खान की अस्पताल से छुट्टी के बाद प्रदेश सरकार के एक मंत्री नितेश राणे ने सवाल उठाए हैं। उनका मानना है कि सैफ पर हमला संदिग्ध हो सकता है। राणे ने राजनीतिक नेताओं पर पक्षपात का आरोप लगाते हुए हिंदू कलाकारों की उपेक्षा की बात कही और बढ़ते बांग्लादेशी और रोहिंग्या मुद्दे पर चिंता जताई । अब ये राणे कौन से नेता हैं ,ये बताने की जरूरत नहीं है।

सैफ के ऊपर सवाल खड़े करने वाले राणे अकेले नहीं है। शिवसेना नेता संजय निरुपम ने एक बड़ा सवाल खड़ा किया है. उन्होंने हमले की घटना का जिक्र करते हुए इतनी जल्दी ठीक होने पर कहा कि सैफ को 16 जनवरी की घटना के बारे में बताना चाहिए। निरुपम भले ही दलबदलू किन्तु अनुभवी नेता हैं इसलिए उन्होंने अपना सवाल बड़ी ही नजाकत के साथ किया है। निरुपम ने कहा कि 16 जनवरी को सैफ अली खान के साथ जो कुछ भी हुआ, वह बेहद चिंताजनक है. हम परिवार के साथ हैं. सैफ को अस्पताल से छुट्टी मिल गई है और बाहर वह ऐसे दिखे हैं जैसे वह शूटिंग करने के लिए फिट हैं. यह देखना आश्चर्यजनक है. डॉक्टरों ने कहा था कि चाकू उनकी पीठ में 2.5 इंच तक घुस गया था, जिसके लिए छह घंटे का ऑपरेशन करना पड़ा. चिकित्सकीय रूप से इतनी जल्दी ठीक होना कैसे संभव है ?

भाजपा पहले ही सैफ पर हमले को अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बना चुकी है ,क्योंकि महाराष्ट्र की पुलिस ने सैफ पर हमले के आरोप में जिस आरोपी को पकड़ा है वो संयोग से बांग्लादेशी है। भाजपा के लिए बांग्लादेशी घुसपैठिये चुनावी मुद्दा रहे हैं ,ये बात और है कि केंद्र में भाजपा की सरकार ने बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को बाकायदा सरकारी मेहमान बनाकर शरण दी हुई है। बांग्लादेश के लोग भी इससे हैरत में हैं और भारतीय जनता पार्टी के लोग भी,लेकिन भाजपा का कोई नेता अपने पंत प्रधान से हसीना के बारे में सवाल करे कैसे ? भाजपा में तो सवाल करना ही राष्ट्रद्रोह माना जाता है ,बल्कि यूं कहिये कि घोषित गैरजमानती अपराध है।

नेशनल कांफ्रेंस के सदर और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ फारुख अब्दुल्ला ने सैफ के जल्द ठीक होने पर तो कोई बात नहीं की लेकिन उन्होंने सैफ के कथित हमलावर के बहाने पूरे बांग्लादेशियों को अपराधी माने जाने की निंदा की है। उनका कहना है कि किसी एक व्यक्ति की गलती का ठीकरा पूरे देश पर नहीं फोड़ा जा सकता। लेकिन डॉ अब्दुल्ला की नसीहत भाजपा वाले या शिव सेना वाले क्यों मानने लगे ? भाजपा और शिव सेना के नेता और कार्यकर्ता खुद अपने दिल की ही नहीं मानते। इन पार्टियों के नेताओं को न सैफ पर भरोसा है और न चिकित्सा विज्ञान पर। ये देह की जीवनशक्ति के बारे में भी कुछ नहीं जानते। ये लोग केवल और केवल हिन्दू और मुसलमान जानते हैं। इन सभी का काम इसी अल्प जानकारी से चल जाता है। सैफ अली के माता-पिता से इस देश की आधी से अधिक आबादी का जुड़ाव है ,और ये जुड़ाव स्वाभाविक है ,इस जुड़ाव की वजह हिन्दू-मुसलमान नहीं है। सैफ के पिता नबाब पटौदी एक बेहतरीन क्रिकेट खिलाड़ी थे और सैफ की माँ शर्मिला टैगौर एक बेहतरीन अदाकारा। इस जोड़ी की अपनी-अपनी उपलब्धियां हैं ,इसमें किसी राजनीतिक दल का कोई योगदान नहीं है। हम जिस पीढ़ी से आते हैं उस पीढ़ी के लिए नबाब पटौदी और शर्मिला टैगौर देश के लिए गर्व का विषय रहे है। इस जोड़ी ने यदि मोदियुग में शादी की होती तो मरहूम नबाब साहब के खिलाफ लव जिहाद का मामला चल रहा होता। पटौदी और टैगौर की सनातन सैफ अली और उनकी पत्नी भी देश की एक पीढ़ी में लोकप्रिय अभिनेता रहे हैं ,इसलिए कम से कम आम आदमी तो सैफ की रिकवरी को लेकर कोई सवाल नहीं करना चाहेगा ,लेकिन नेतागण नहीं मानने वाले। कहते हैं न -कुछ तो लोग कहेंगे,लोगों का काम है कहना भाजपा और शिवसेना के लोग इस बात से भी खुश हैं की सैफ के दिन अच्छे नहीं चल रहे हैं। सैफ के लिए एक और बुरी खबर और आई है। सैफ अली खान के पटौदी परिवार की 15,000 करोड़ रुपये की संपत्ति सरकार शत्रु संपत्ति अधिनियम के तहत अपने नियंत्रण में ले सकती है। बता दें कि ये संपत्ति मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित है। दरअसल, मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने एक अहम फैसला देते हुए 2015 में इन संपत्तियों पर लगाए गए रोक को हटा दिया है। कोर्ट के इस फैसले के बाद शत्रु संपत्ति अधिनियम, 1968 के तहत इन संपत्तियों के अधिग्रहण का रास्ता खुल गया है। ध्यान रखिये की मप्र में भाजपा की सरकार है जो हिन्दू-मुसलमान करने में माहिर ह। जाहिर है की प्रदेश की भाजपा सरकार का दिल इस घटना से बल्लियों उछल रहा होगा। भाजपा का बस चले तो वो देश के तमाम मुसलमानों की सम्पत्ति को शत्रु सम्पत्ति घोषित कर जब्त कर ले। लेकिन खुदा गंजों को नाखून नहीं देता। हमारे नेताओं को भगवान सद्बुद्धि दे।

बहरहाल हम सियासत के लिए किसी के स्वास्थ्य को हथियार बनाये जाने के खिलाफ है। इस मामले में आप अपने मन से पूछिए ,शायद सही जबाब मिल जाये। क्योंकि सच्चाई से साक्षात्कार कोई सियासी दल,कोई धर्म नहीं करा सकत। दिल ही सच का अहसास करा सकता है। खुदा हाफिज।

देश में प्रतिबंधित क्यों नहीं हो रही जानलेवा 'चाईना डोर'

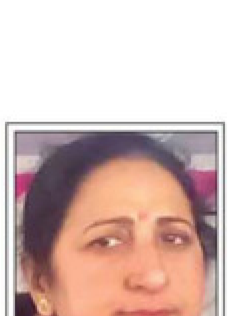

निर्मल रानी

विश्व के सबसे बड़े बाजार के रूप में अपनी पहचान रखने वाले भारत में चीन जैसे पड़ोसी देश के अनगिनत उत्पाद पटे पड़े हैं। शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा हो जिससे संबंधित सामग्री चीन निर्मित न कर रहा हो और भारत सहित पूरी दुनिया को उनकी आपूर्ति न कर रहा हो। छोटी से छोटी मामूली चीजों से लेकर बड़ी से बड़ी और भारी से भारी वस्तुएं चीन द्वारा निर्मित कर भारत भेजी जा रही हैं। मिसाल के तौर पर जहाँ चीन निर्मित मोबाईल फोन लैपटॉप व कंप्यूटर आदि भारतीय बाजार में भरे पड़े हैं वहीँ चाईना की रंग बिरंगी लाईट्स दीपावली, नववर्ष जैसे अनेक अवसरों पर पूरे देश में अपनी रंगबिरंगी छटायें बिखेरती हैं। सजावट, मशीनरी, कांच, पत्थर, प्लास्टिक, खिलौना, कपड़ा, बर्तन, क्रॉकरी, फर्नीचर, हार्डवेयर, आतिशबाजी, धार्मिक सामग्री, देवी देवताओं भगवानों के चित्र, फोटो फ्रेम, नजर बट्ठू, कंठी माला टोपी तस्बीह मुसल्ला मेडिकल व सर्जिकल सामग्री जैसी तमाम क्षेत्रों से सम्बंधित सामग्रियों का निर्माण व इनकी आपूर्ति चीन द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में की जाती है। इन्हीं चीन निर्मित सामग्रियों में कुछ सामग्री ऐसी भी हैं जिनका इस्तेमाल करना लोगों की जान से खिलवाड़ करने जैसा है। ऐसी ही मनोरंजन से जुड़ी एक सामग्री है 'चाईना डोर'। 'चाईना डोर ' का प्रयोग पतंगबाजी में किया जाता है। और भारत पूरे विश्व में पतंगबाजी के लिये प्रसिद्ध है। वसंत पंचमी जैसे अनेक त्योहारों पर तथा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर और इसके अलावा छुट्टियों के दिनों में तमाम लोग अपने फुर्सत के लम्हे पतंगबाजी कर बिताना चाहते हैं। चीन जहाँ भारत को तरह तरह की रंग बिरंगी छोटी बड़ी पतंगें निर्यात करता है वहीँ पतंग उड़ने में प्रयोग किया जाने वाला डोर /मांझा भी चीन से ही आता है। दरअसल पतंगबाजी में प्रयुक्त मांझा जो भारत में भी बनता है उसमें भी कुशाग्रता अथवा धार पैदा करने के लिये उसमें पिसे हुये कांच का पाउडर मिलाया जाता है। और भारत में चाईना डोर के आने की शुरूआत से पहले भी पतंग उड़ाने वाले मांझे में उलझकर अनेक लोग जख़्मी हो जाते थे। परन्तु आखिरकार वह भारतीय मांझा टूट जाया करता था। लेकिन जबसे भारतीय बाजार में चाइनीज मांझों ने अपनी दस्तक दी है तब से तो पतंगबाजी मनोरंजन से अधिक दहशत भरे व जानलेवा मनोरंजन के रूप में जाना जाने लगा है। हालत यह हो गयी है कि शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो जिस दिन देश के किसी न किसी कोने से चाईना डोर के चलते होने वाले हादसों की खबरें न आती हों। दरअसल चाईना डोर में प्रयुक्त धागा किसी ऐसी सामग्री का बना हुआ तेज धार वाला धागा है जो किसी व्यक्ति, वाहन पशु पक्षी से उलझने के बावजूद खिंचने पर आसानी से टूटता नहीं। पिछले दिनों हद तो यह हो गयी कि 14 जनवरी को मकर संक्रांति के दिन ही अकेले गुजरात में ही 6 लोग पतंगबाजी में मर गये। आश्चर्य तो यह कि स्वयं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी मकर संक्रांति के अवसर पर उसी दिन गुजरात में ही स्थानीय लोगों के साथ पतंग उड़ाने का आनंद लिया। उन्होंने उत्तरायण पर्व (मकर संक्रांति) के अवसर पर शहर के मेमनगर इलाके में शांतिनिकेतन अपार्टमेंट की छत पर पतंग उड़ाई। पूरे देश में उसी दिन चाईना डोर से अनेक लोगों की मौत हो गयी। इसका तीखापन, धार व मजबूती ऐसी है कि आजके दौर में दुपहिया व चारपहिया वाहनों में इस्तेमाल होने वाले फाईबर या प्लास्टिक के बने बम्पर, लेग गॉर्ड अथवा अन्य एसेसरीज को भी यह काट देता है। जाहिर है ऐसे में प्राणियों का बचने का सवाल ही नहीं है। उदाहरणार्थ गत दिनों लुधियाना में एक मोर के गले में यही प्लास्टिक टाइप चाइना डोर फँस गयी जिससे उसकी मौत हो गयी। समाचार यह भी है कि यह मांझा सुचालक होता है जिसके कारण इसमें करेंट प्रवाहित हो जाता है। चाईना डोर से करंट लगने से भी कई मौतें हो चुकी हैं। गले, कलाई और हाथों की नस कटना और अत्यधिक रक्त प्रवाह के चलते मौत होने की तो अनेकानेक घटनाएं घटित हो चुकी हैं।

पिछले दिनों अमृतसर व जालंधर में एक ही दिन में घटी दो अलग अलग घटनाओं में 19 वर्षीय पवनदीप व 45 वर्षीय की मौत हो गयी। इन दोनों की मौत चाईना डोर से गले में सांस की नस कट जाने के कारण हुई। इस मामले में दोनों ही जगह पुलिस द्वारा कुछ अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध मुकददमा दर्ज किया गया है। सवाल यह है कि किस पर चलना चाहिये हत्या का मुकद्दमा? इस तरह के हादसों का जिम्मेदार कौन हो सकता है? ऐसी खतरनाक सामग्री बेचने वाला? इसे खरीद कर इस्तेमाल करने वाला? या फिर इसका निर्माण व आपूर्ति करने वाला? कोई भी हो परन्तु कम से कम इस से उलझकर अपनी जान गंवाने वाला बेगुनाह तो हरगिज नहीं हो सकता? चाईना डोर /मांझे से कटकर जान गंवाने की खबरें दशकों से हमारे देश के अखबारों में सुर्ख़ियों में रहती हैं। अब तो यह जानलेवा मांझा दुकानों के अलावा ऑन लाइन भी उपलब्ध है। परन्तु सरकार की तरफ से इस दिशा में कोई कदम उठाने का कोई समाचार नहीं है।

जनता को उसके हाल पर छोड़ने की यह कुछ ऐसी ही मिसाल है जैसे कि कहीं मेनहोल का ढक्कन खुला पड़ा है या सड़कों पर गड्ढे हैं तो उसके चलते होने वाले किसी भी हादसे या मौत की जिम्मेदारी सरकार की नहीं होती बल्कि मरने या घायल होने वाला ही अपनी गलती सहर्ष स्वीकार कर या तो यमराज के हमराह चला जाता है या अस्पतालों के चक्कर लगता रहता है और लाखों रुपए के चक्कर में पड़ जाता है। परन्तु सरकार को केवल अपने रोड टैक्स और कमेटी टैक्स से ही वास्ता है। हाँ यदि आपसे टैक्स भरने में देर हो गयी तो जुरमाना वसूलना जरूर सरकार का काम है, सड़कों गड्ढों मेनहोल आदि को दुरुस्त व सुचारु रखना हरगिज नहीं? सरकार को चाहिये कि आम लोगों की जान से खिलवाड़ करने वाली ऐसी जानलेवा सामग्रियों को तत्काल रूप से प्रतिबंधित करे। ऐसी सामग्रियों पर लगने वाले सीमा शुल्क अथवा जी एस टी से अधिक जरूरी है आम लोगों की जान सुरक्षित करना। पशु पक्षियों की जान बचाने की कोशिश करना तथा चाईना डोर /मांझे के चलते होने वाली दुर्घटनाओं को टालना। इसलिये सरकार को तत्काल प्रभाव से देश में चाईना डोर /मांझे के आयात को प्रतिबंधित कर देना चाहिये। आश्चर्य है कि इतनी मौतों व दुर्घटनाओं के बावजूद अभी तक जानलेवा 'चाईना डोर' प्रतिबंधित क्यों नहीं हो रही है?

एक नजर

सेंट एंस स्कूल में नन्हे वैज्ञानिकों ने किया चमत्कार

रामगढ़ : रामगढ़ के सेंटएंस स्कूल में नन्हे वैज्ञानिकों ने एक से बढ़कर एक चमत्कार किए। विज्ञान की मदद से छात्र-छात्राओं ने ऐसे ऐसे मॉडल बनाए, जिसे देखकर अतिथि चकित रह गए। सेंट एंस स्कूल में लगाया गया विज्ञान प्रदर्शनी सिर्फ यही तक ही सीमित नहीं रहा? । यहां सभ्यता और संस्कृति की वह झलक दिखाई दी, जिसे आज की पीढ़ी को जानना बेहद जरूरी है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर झारखंड की संस्कृति तक को बच्चों ने बेहद खूबसूरती से परोसा। धरती पर मानव सभ्यता के विकास से लेकर अंतरिक्ष में होने वाली खगोलीय घटनाओं पर बच्चों ने अपनी प्रदर्शनी लगाई। एलकेजी यूकेजी के बच्चों ने भी हेल्दी फूड, अवर हेल्पर्स, एनिमल्स जैसे विषयों पर एक से बढ़कर एक मॉडल प्रस्तुत किए। एक तरफ पांचवी कक्षा के छात्र-छात्राओं ने भारत की मातृभाषा पर आधारित संस्कृत श्लोक लोगों को सुनाएं। तो दूसरी ओर कंप्यूटर क्लास में बच्चों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से मिलने वाली मदद की जानकारी दी। क्लास 9 की 15 बच्चियों की टीम ने सिंधु घाटी सभ्यता का वर्णन किया। सिंधु नदी के किनारे किस तरह मानव सभ्यता का विकास हुआ, बाजार और घरों का निर्माण किस स्तर पर था और हमारा सामाजिक ढांचा किस तरीके से काम करता था। इसके अलावा वायु प्रदूषण, सुप्रीम कोर्ट की कार्रवाई, रोबोट, आर्ट एंड क्राफ्ट की प्रदर्शनी भी लोगों के आकर्षण का केंद्र रही। सेंट एंस स्कूल कैथा में आयोजित दो दिवसीय आर्ट, क्राफ्ट एवं विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन विधायक ममता देवी ने किया। इस मौके पर बिहार राज्य के नवादा जिले से संत जोसेफ स्कूल के प्राचार्य फादर प्रभु दास, संत मेरी चर्च रामगढ़ के पादरी फादर कर्मा कच्छप भी मौजूद थे।

जल्द से जल्द टेंपू के सभी तरह के पेपर दुरुस्त कर लें : डीटीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बालीडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत बालीडीह टॉल प्लाजा परिसर में गुरुवार को निःशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह जांच शिविर 35वे राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत आयोजित किया गया है। यह शिविर बढ़ते सड़क दुर्घटना को देखते हुए उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर लगाया गया है। इस जांच शिविर में कुल 412 लोगों का नेत्र जांच सहित अन्य स्वास्थ्य जांच किया गया। साथ ही शिविर में आने वालों को यातायात नियमों का आवश्यक रूप से पालन करने का भी अपील की गई। जांच के दौरान जिन लोगों का ब्लड प्रेशर बढ़ा मिलने पर दवा खाने के साथ ही आराम करने को कहा गया। शिविर में कुल 412 चालकों सहित अन्य चालकों का जांच की गई। चिकित्सक डॉ राजेश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत यह नेत्र जांच व अन्य स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया है। इस शिविर में कुल 412 चालकों एवं सहचालकों सहित अन्य लोगों की जांच की गई। इस कार्य में डॉ प्रेमशंकर कुमार, डॉ विवेक कुमार ने सहयोग किया। यह जांच शिविर परिवहन विभाग एवं सिविल सर्जन बोकारो के द्वारा सड़क सुरक्षा माह के तहत नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में बस, टोटो, ऑटो चालकों के आंखों की जांच की जा रही हैं। जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना सेजवलकर ने बताया कि अगले सप्ताह से तीन पहिया वाहनों सहित उनके चालकों की स्वास्थ्य जांच की जाएगी। इसके तहत सभी तीन पहिया वाहनों का सभी तरह के कागज (जैसे रजिस्ट्रेशन, पॉल्यूशन एवं गाड़ी का बीमा) को दुरुस्त करते हुए सभी अपने अपने तीन पहिया वाहनों के दाहिने साइड में रड लगाना अनिवार्य है। इसके साथ ही सभी चालकों को वाहन चलाने हेतु लाइसेंस रखना भी जरूरी है। उन्होंने आगे बताया कि सभी तीन पहिया वाहन चालकों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन दोनों अनुमंडल क्षेत्रों में लगाया जाएगा। साथ ही उन्होंने सभी वाहन चालकों से अनुरोध किया कि आप सभी जल्द से जल्द टेंपू के सभी तरह के पेपर दुरुस्त कर ले नहीं तो अगले सप्ताह से चालान किया जाएगा। चालान जमा नहीं करने पर उक्त टेंपू मालिकों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 01 जनवरी से 31 जनवरी, 2025 तक मनाया जा जाएगा, जिसमें परिवहन विभाग के द्वारा विभिन्न गतिविधियों का भी आयोजन किया जाएगा।इस दौरान पुलिस उपाधीक्षक यातायात विद्या शंकर, जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक गोविंद सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

बोकारो में झारखंड मुक्ति मोर्चा का सदस्यता अभियान शुरू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा केन्द्रीय कमिटि के निदेर्शानुसार पार्टी महाधिवेशन से पूर्व प्रदेश के नव निर्मित तीन जिला को छोड़कर सभी जिला कमिटी को भंग करते हुए बनाये गए संयोजक मंडली के तहत 18 जनवरी से 28 फरवरी तक युद्ध स्तर पर बोकारो जिले मे कम से कम डेढ लाख पार्टी का सदस्यता बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया जिसके तहत आज से झारखंड मुक्ति मोर्चा केन्द्रीय सदस्य, बोकारो जिला संयोजक मंडली के सदस्य और जय झारखंड मजदूर समाज के महामंत्री बि के चौधरी के नेतृत्व मे बोकारो स्टील प्लांट के एम आर डी और फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड बिभाग मे सदस्यता अभियान का श्रीगणेश किया गया जिसमे काम करने बाले इस्पातकर्मी और ठेकाकमीर्यों ने बढ़चढ़कर सदस्यता ग्रहण कर रहा है जबकि कल एस एम एस और सी सी एस बिभाग मे सदस्यता अभियान चलाने का कार्यक्रम तय किया गया है। सदस्यता अभियान मे मुख्य रूप से युनियन के संयुक्त महामंत्री एन के सिंह, आई अहमद, भी के साह, सुरेश प्रसाद, नासिर अहमद खान, सुभाष चंद्र बाउरी, मनोज कुमार सिंह, बालेश्वर राय, राजू लहरी, घनश्याम सिंह इत्यादि मौजूद थे ।

हमारी एकता ही न्याय की गारंटी : राजेंद्र सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : प्रबंधन के नकारात्मक रवैये के बावजूद काफी जद्दोजहद के बाद आखिरकार मजदूरो ने एकता के बदौलत मृतक हरेन्द्र कुमार भारती के लिये न्याय हासिल किया। बताते चले कि मृतक हरेन्द्र कुमार, कर्मचारी संख्याः-787517, धमन भट्ठी विभाग के एम.एम.11 में कार्यरत थे। स्व. भारती को दिनांक 04 जनवरी 2025 को सामान्य पाली में कार्य करते हुए साँस लेने मे दिक्कत के बाद सहकर्मियो द्वारा ईलाज के लिये प्लांट मेडिकल लाया गया।जहाँ उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर ईलाज के लिये चिकित्सको ने उन्हे बोकारो जेनरल अस्पताल रेफर कर दिया। जहाँ लम्बी ईलाज के बाद दिनांक 21/01/2025 रात्रि लगभग 10:30 बजे स्व भारती का देहांत हो गया। बी.जी.एच. की लापरवाही एवं सुस्त व्यवस्था ने आखिरकार एक और मजदूर की जान ले ली। स्व. भारती के देहांत की खबर संयंत्र मे आग की तरह फैल गयी।मृतक क्रान्तिकारी इस्पात मजदूर संघ (एचएमएस) के सक्रिय सदस्य थे।देहांत की खबर पाकर युनियन के महामन्त्री सह-सदस्य एनजेसीएस राजेंद्र सिंह स्वयं बी.जी.एच. पहुँचे। वहाँ शोक संतप्त परिजनो को धैर्य दिलाते हुए नियमानुसार आश्रित के नियोजन पर हो रही विलंब पर मौजूद प्रबंधन के अधिकारियो पर जमकर बरसे। शुरू मे प्रबंधन का रवैया एकदम नकारात्मक एवं लीपा-पोती वाला था। मगर श्री सिंह एवं साथी कर्मचारियो के उग्र रवैये के आगे अधिकारियो की एक ना चली। सिंह ने प्रबंधन को साफ-साफ कह दिया कि सभी मजदूर एकजुट हैं या तो नियोजन दो या ब्लास्ट फर्नेस बन्द के लिये तैयार रहो।अन्ततः काफी खींचतान और जद्दोजहद के बाद मृतक के आश्रित को एडीएम मेन गेट पर बोकरो इस्पात संयंत्र मे स्थायी नियोजन पत्र दिया गया। मौके पर श्री सिंह के साथ आर.के.सिंह, शशिभूषण ब्लास्ट फर्नेस मे युनियन के शाखा अध्यक्ष विपिन कुमार सिंह, शाखा सचिव अम्बेडकर, इरफान सहित मनोज ठाकुर, संतोष कुमार,संतोष कर्मकार,अरविन्द कुमार, चन्द्र प्रकाश,अभिषेक कुमार, के के रजवार,मन्टु प्रसाद मुर्मू, असलम अंसारी,दल गोविंद किस्कु,एस.के. सिंह, विजय कुमार, अमरदीप सहित सैकड़ो मजदूर एवं युनियन के पदाधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

बेंगलुरु में अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में शामिल हुईं कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की

रांची : जैविक खेती और अन्न को बढ़ावा देने के लिए कर्नाटक सरकार के 23 से 25 जनवरी तक बेंगलुरु में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला का गुरुवार को उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम में प्रदेश की कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की भी शामिल हुईं। उन्होंने यहां झारखंड के स्टॉल का उद्घाटन किया। इस मौके पर मंत्री तिर्की ने कहा कि झारखंड और कर्नाटक के बीच कई तरह की समानताएं है। खासकर मिलेट की बात करें तो दोनों राज्य में ये समान रूप से देखने को मिलेगा। पूरे देश में झारखंड और कर्नाटक ऐसे दो राज्य हैं जो मिलेट का उपयोग कर रहे हैं। बदलते समय में चावल और गेहूं को भी मुख्य आहार के रूप में लोगों ने अपनाया है। वैसे हमारे स्वास्थ्य और मौसम के लिहाज से मोटा अनाज जायदा फायदेमंद है। इसको आसानी से लगाया जा सकता है। चावल और गेहूं की तुलना में अब देश की सरकारें मोटा अनाज को बढ़ावा देने में जुटी हैं। मोटा अनाज की क्रांति हमारे आने वाले भविष्य के लिए जरूरी है। झारखंड और कर्नाटक मिलकर ऐसे किसानों को सहयोग कर सकते हैं जो मोटा अनाज के फसल से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड में मिलेट पॉलिसी के तहत किसानों को इसके लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। झारखंड मिलेट मिशन के तहत किसानों को तीन हजार रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि दी जा रही है।

होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने लॉन्च किया नया 2025 एक्टिवा

रांची : होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने आज भारत के सबसे लोकप्रिय स्कूटर एक्टिवा का नया OBD2B-अनुपालन संस्करण लॉन्च किया, जो तकनीक, सुविधा और स्थिरता के अगले स्तर तक पहुंचाता है। नए फीचर्स से लैस यह अपडेटेड एक्टिवा ग्राहकों की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। नई 2025 होंडा एक्टिवा की कीमतें 80,950 रुपये (एक्स-शोरूम दिल्ली) से शुरू होती हैं। नए एक्टिवा को पेश करते हुए होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के प्रबंध निदेशक, प्रेजिडेंट एंड सीईओ, श्री त्सुत्सुमु ओटानी ने कहा, एक्टिवा हमेशा से भारतीय ग्राहकों के लिए मोबिलिटी को फिर से परिभाषित करने में अग्रणी रहा है। अपने नवीनतम 2025 संस्करण के साथ, यह नवाचार, सुविधा और विश्वसनीयता का आदर्श मिश्रण बना हुआ है, जिसने इसे भारत का सबसे पसंदीदा स्कूटर बनाया है। TFT डिस्प्ले के साथ ब्लूटूथ कनेक्टिविटी और OBD2B-अनुपालन इंजन का समावेश तकनीक और स्थिरता के मामले में आगे रहने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमें विश्वास है कि नया एक्टिवा न केवल हमारे ग्राहकों के राइडिंग अनुभव को बेहतर बनाएगा बल्कि भारतीय स्कूटर बाजार में होंडा की अग्रणी स्थिति को और मजबूत करेगा। नए एक्टिवा को पेश करते हुए होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के डायरेक्टर सेल्स एंड मार्केटिंग, श्री योगेश माथुर ने कहा, एक्टिवा सिर्फ एक स्कूटर नहीं है, यह भारत भर में करोड़ों परिवारों का एक विश्वसनीय साथी है और अपने टैगलाइन 'स्कूटर बोले तो एक्टिवा' के प्रति सच्चा है।

उत्तर प्रदेश

क्रिकेट प्रतियोगिता में पडरौना ने रामकोला को हराया

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। तहसील क्षेत्र के गांव पतया में आयोजित शहीद बीर अशफाक उल्लाह खान दुंगी क्रिकेट प्रतियोगिता में पडरौना और रामकोला के टीम के बीच खेला गया जिसमें पडरौना ने दस रनों से रामकोला को हराया। मैच के मुख्य अतिथि रूद्रा डेवलपर्स प्रापटीज के सदस्य आदित्य सिंह व प्रमोद चौरसिया ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया गया। मैच में पडरौना की टीम टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चालिस रन बनाकर नाबाद रहे। जबाब में उतरी रामकोला की टीम ने पांच विकेट खोकर तीस रन बनाकर आल आउट हो गए। जिससे पडरौना की टीम ने मैच को दस रनों से विजय हासिल किया।मुख्य अतिथि आदित्य सिंह ने कहा कि खेल से शारीरिक फिटनेस ठीक रहता है। प्रमोद चौरसिया ने कहा कि खेल से समाजिक समरसता फैलता है इस अवसर पर ग्राम प्रधान समीउल्लाह खा क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिनिधि जहांगीर खां, इम्तियाज खा, अनुप खेतान, पूर्व ग्राम प्रधान इस्माइल, युनुस सिद्दिकी, सुशील भारती, जाहिद अंसारी मौजूद रहे।

शासन की प्राथमिकता है स्वास्थ्यः विधायक सुरेंद्र कुमार कुशवाहा

संवाददाता

कुशीनगर। फाजिलनगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम हुआ। इस दौरान 121 रोगियों को स्वास्थ्य विभाग की ओर से पोषण पोटली दी गई। बुधवार को कार्यक्रम में विधायक सुरेंद्र कुमार कुशवाहा ने कहा कि स्वास्थ्य शासन की प्राथमिकता है। 2025 तक देश में क्षय रोग का उन्मूलन करना है। प्रत्येकह व्यक्ति का दायित्व है कि रोग के उन्मूलन में अपना योगदान दे। मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सुरेश पटारिया ने कहा कि किसी भी बीमारी के प्रति जागरूकता व समय पर जांच जरूरी है। स्वास्थ्य केंद्र पर शासन के द्वारा मिलने की सुविधा का लाभ उठावें। जिला क्षय रोग अधिकारी डा. एसएन त्रिपाठी ने कहा कि अभियान को सफल बनाने के लिए सबका सहयोग जरूरी है। अध्यक्षता अधीक्षक डा. यूएस नायक ने किया। डा.साजिद हुसैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार जताया।संचालन सत्येंद्र कुमार पांडेय ने किया। इस दौरान डा. पूनम गुप्ता, डा. रविंद्र कुशवाहा, डा. अरविंद कुमार, अनुज तिवारी, शिवव्रत सिंह, आदित्य तिवारी, सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, प्रशांत कुमार, प्रधान माधुरी पांडेय व नागेंद्र गुप्ता आदि मौजूद रहे।

जयंती पर रोटरी क्लब ने सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाने का लिया संकल्प

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। रोटरी क्लब कुशीनगर द्वारा नगर के शहीद स्मारक पार्क में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां नेताजी के योगदान को नमन करते हुए उनके विचारों और बलिदान को याद किया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन और नेताजी की चित्र पर माल्यार्पण से हुई। रोटरी के अध्यक्ष वाहिद अली ने अपने संबोधन में नेताजी के अदम्य साहस और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि, नेताजी के आदर्श और उनके द्वारा दिया गया 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा हर भारतीय को प्रेरित करता है। रोटरी द्वारा कसया में आदमकद की प्रतिमा लगाने का भी संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में दुकानदारों को भारतीय राष्ट्रीय ध्वज वितरित उनसे प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराएं और नेताजी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में योगदान की अपील की गई। इस अवसर पर उपाध्यक्ष संदीप रौनियार, कोषाध्यक्ष दुर्गेश चतुर्वेदी, संयुक्त कोषाध्यक्ष सदरे आलम, निदेशक अमित श्रीवास्तव, मीडिया प्रभारी अरुण वर्मा, गौरव मद्धेशिया, फैयाज खान, विशाल शर्मा, राजीव तिवारी, अरूण कुमार मौर्य, आनन्द जायसवाल, अमरेंद्र नारायण सिंह, सरवरे आलम (छोटे), हेमन्त गर्ग, गोविंद सिंह, विजय सिंह, रंजीत श्रीवास्तव, विनोद वर्मा, सत्येन्द्र राय, राजबहादुर जायसवाल, वैभव राव, शिवजी जायसवाल, संस्कार भारती के प्रदेश महामंत्री डॉ अनिल सिन्हा, दिनेश तिवारी भोजपुरिया, उमेश चंद जायसवाल, सुमित त्रिपाठी, कृष्ण कुमार तिवारी, राकेश गिरी, युवा व्यापार मंडल के राजन जायसवाल, सभासद मनीष मिश्रा एवं आदिल खान उपस्थित रहे।

स्वगीर्या शांति देवी जिला स्तरीय फुटबाल टूनार्मेंट सिवान व देवरिया ने जीता शिल्ड

संवाददाता

कुशीनगर। फाजिलनगर क्षेत्र के ग्राम सभा नोनिया पट्टी के सोनबरसा स्थित खेल मैदान स्वर्गीय शांति देवी जिला स्तरीय फुटबाल प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में सिवान ने गाजीपुर को एक गोल से हराकर जीत हासिल की। तो बालक वर्ग में मेहा देवरिया ने सोनबरसा को पेनाल्टी सूट आउट मे चार शून्य से हराकर शिल्ड पर कब्जा जमा लिया। फुटबाल प्रतियोगिता के अन्तिम दिन स्वगीर्या शांति देवी इंटरमीडिएट कॉलेज सोनबरसा के प्रांगण में स्वगीर्या शांति देवी के पुण्यतिथि पर उनके मूर्ति का अनावरण सपा के प्रदेश सचिव रामप्रकाश यादव, विजेन्द्र पाल यादव उर्फ बबलू यादव एवं पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि राम अवध यादव द्वारा किया गया तथा लोगों को कम्बल और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। बालिका वर्ग में मुख्यअतिथि ममता सिंह प्रधानाध्यापक तथा रीता यादव पूर्व ग्राम प्रधान ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के बाद फुटबाल प्रतियोगिता प्रारंभ हुआ। बालक वर्ग में प्रतियोगिता का आरम्भ मुख्यअतिथि सपा के प्रदेश सचिव रामप्रकाश यादव, विजेन्द्र पाल यादव उर्फ बबलू यादव तथा पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि राम अवध यादव द्वारा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर हुआ। अंत में खेल के व्यवस्थापक जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि डॉ शुभम यादव ने सभी खिलाड़ियों, दर्शकों, अतिथियों का आभार प्रकट किया। इस अवसर पूर्व ग्राम प्रधान उमापति यादव, लल्लन यादव, अरविंद यादव, नोएडा में विद्युत उप खंड अधिकारी ई.अजय सिंह यादव संदीप, सुग्रीव, प्रमोद,मनोज, प्रताप, शैलेष, विश्राम तथा सिकन्दर, मोतीलाल यादव, पंकज कुमार,अल्ताहिर , मोनू सिद्दीकी सहित काफी संख्या लोग मौजूद रहे।

मंत्री की बहन को ठगने वाले भाजपा नेता को जेल

हरदोई। पुलिस ने गाजीपुर से दो बार विधायक रहे सुभाष पासी को गिरफ्तार कर लिया है। गुपचुप तरीके से गुरुवार को पुलिस ने उन्हें कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। सुभाष पासी और उनकी पत्नी रीना पासी पर आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल की बहन रुचि गोयल समेत दो लोगों से मुंबई में फ्लैट दिलाने के नाम पर 98 लाख रुपए ठगने का आरोप है। पुलिस सुभाष पासी को मुंबई से गिरफ्तार कर हरदोई लाई थी। मामले में सुभाष के अलावा उनकी पत्नी रीना पासी के खिलाफ धोखाधड़ी और गैंगस्टर केस दर्ज है। वह अभी फरार हैं। पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दे रही है। सुभाष ने 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले सपा छोड़कर भाजपा जॉइन की थी। हरदोई के रेलवेगंज निवासी व्यापारी श्रीप्रकाश गुप्ता ने 23 अक्टूबर, 2023 को कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया, 24 जुलाई 2018 को उनके पड़ोसी अक्षय अग्रवाल, मुंबई निवासी सुभाष पासी और उनकी पत्नी रीना पासी से प्रॉपर्टी निवेश के नाम पर मिलवाने आए।

संक्षिप्त डायरी

मानव श्रंखला बनाकर सड़क सुरक्षा के प्रति किया गया जागरूक

संवाददाता

हमीरपुर । उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर सड़क सुरक्षा के मद्देनजर आम लोगों को जागरूक करने के साथ ही सड़क दुर्घटनाओं में कमी करने के मकसद से हमीरपुर में सुबह 11:00 बजे रानी लक्ष्मीबाई तिराहे से महिला थाना तक 2.7 किलोमीटर लंबी सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला बनाई गई साथ ही मौजूद लोगों को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई। इसके साथ ही जनपद के सभी तहसीलों ,ब्लॉक,सभी प्राथमिक, उच्चप्राथमिक, माध्यमिक विद्यालयों महाविद्यालयों में हेलमेट,ट्रैफिक लाइट की प्रतिकृति बनाते हुए सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला बनाई गई साथ ही सड़क सुरक्षा शपथ दिलाई गई मुख्य सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला में रानी लक्ष्मीबाई तिराहे से जेल तक सरदार पटेल विद्यालय के छात्र-छात्राएं ,जेल से हरी गेस्ट हाउस तक सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र,हरी गेस्ट हाउस से अवतार मेहर बाबा तक लॉर्ड बुद्ध स्कूल के छात्र छात्राएं,अवतार मेहर बाबा से वी मार्ट तक अवतार मेहर बाबा विद्यालय के छात्र,वी-मार्ट से स्टेडियम बाउंड्री तक महर्षि विद्या मंदिर के छात्र,स्टेडियम बाउंड्री से एसपी ऑफिस तक श्री विद्या मंदिर के छात्र छात्राएं,एसपी ऑफिस तिराहा से कलेक्ट्रेट गेट तक पुलिस लाइन स्टाफ ,कलेक्ट्रेट गेट पर जिलाधिकारी महोदय ,अपर जिलाधिकारी गण, सीओ सदर, एआरटीओ प्रवर्तन, एआरटीओ प्रशासन ,पीटीओ ,डीआईओएस, बी एस ए,खनन अधिकारी , अधिशासी अभियंता निर्माण खंड , अधिशासी अभियंता प्रांतीय खंड, उप मुख्य चिकित्साधिकारी,रहड कोतवाली,सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्यएवं समस्त कलेक्ट्रेट स्टाफ, पत्रकार बंधु नागरिक गण, पुनः रोडवेज तक पुलिस स्टाफ एवं रोडवेज स्टाफ एवं कलेक्ट्रेट स्टाफ पत्रकार बंधु व्यापार मंडल ,रोडवेज गेट से ढहऊगेट तक जीजीआईसी, पीडब्ल्यूडी कार्यालय आपूर्ति कार्यालय ,जिला पंचायत कार्यालय, व्यापारकर, विद्युत विभाग,नगरपालिका के अधिकारी कर्मचारी गण ,ढहऊ गेट से अमन शहीद तक जीआईसी स्कूल के छात्र, अमन शहीद से महिला थाना तक इस्लामी इंटर कॉलेज की छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। मानव श्रृंखला बनाए जाने के दौरान ट्रैफिक पुलिस पूरी तरह मुस्तहद रही।

एक नजर

युवक को रेलवे साइडिंग के पास ले जाकर चाकू मारकर किया घायल

साहिबगंज : साहिबगंज के मिजाचौकी थाना क्षेत्र के नयाटोला निवासी युवक आयुष कुमार को दो युवकों ने गले में चाकू मारकर घायल कर दिया। घटना बुधवार रात की बताई जाती है। घायल युवक को मुखिया प्रतिनिधि राजेश राम की मदद से पास के निजी क्लीनिक ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार किया। मिजाचौकी थाना प्रभारी पवन यादव निजी क्लीनिक पहुंचे और घायल युवक को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज भेजवाया। सदर अस्पताल में डॉ मुकेश कुमार की देखरेख में उसका इलाज किया गया। घायल युवक आयुष कुमार ने पुलिस को बताया कि श्याम कुमार व सनी कुमार ने उसे रेलवे साइडिंग से आगे तीन पुलिया के समीप ले जाकर चाकू से हमला कर दिया। आयुष कुमार अभी खतरे से बाहर है। उसने बताया कि मंगलवार को भी दोनों युवकों ने उसके साथ मारपीट की थी। उसे जान मारने की धमकी भी दी थी। वही मिजाचौकी पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

मिजार्पुर एवं गणेशपुर में वृद्धों एवं विकलांगों के बीच कंबल वितरण

बरहरवा : बृहस्पतिवार को प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष अशोक दास द्वारा कड़कड़ाती ठंड में लाचार, जरूरतमंद एवं दिव्यांग असहाय गरीबों हाड़कापा देने वाली ठंड से बचाने के लिए ठंड का प्रकोप को देखते हुए सिरासीन, साहेबडंगा, मिजार्पुर एवं गणेशपुर में वृद्धों एवं विकलांगों के बीच कंबल वितरण किया गया। मौके पर अशोक कुमार दास ने बताया की गरीब जरूरतमंदों की पहले सेवा ही हमारी प्राथमिकता है।

सड़क दुर्घटना में घायल महिला की अस्पताल में मौत, विरोध में सड़क जाम

गोड्डा : गोड्डा जिले के ललमटिया-महगामा मुख्य मार्ग पर जाताकोठी पहाड़ के समीप हुई दुर्घटना में 62 वर्षीय महिला की मौत हो गई। धटना गुरुवार दोपहर की बताई जाती है। मृतका की पहचान महगामा थाना क्षेत्र के बागजोरी निवासी स्वर्गीय रामू मांझी की पत्नी मानिश्वरी देवी के रूप में हुई। घटना के विरोध में स्थानीय लोगों ने मुख्य सड़क को जाम कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार, महिला जाताकोठी ढलान के पास सडक पार कर रही थी। तभी किसी वाहन की चपेट में आकर गंभीर रूप से धायल हो गई। धक्का मारने के बाद चालक वाहन लेकर फरार हो गया। हादसे के बाद वहां लोगों भीड़ जुट गई। सूचना पाकर ललमटिया थाना को पुलिस भी धटना स्थल पर पहुंची और महिला को आननझफानन में महागामा रेफरल अस्पताल पहुंचाया। जहां उसकी मौत हो गई। ललमटिया थाना प्रभारी मुकेश कुमार राउत ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए गोड्डा भेज दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जादूगोड़ा : कुलगोंडा में रोजगार मेला कल

जमशेदपुर : जादूगोड़ा की माटीगोडा पंचायत के कुलगोंडा मध्य विद्यालय के समीप गुरुवार को मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत रोजगार मेला का आयोजन होगा। इस रोजगार मेला में गरीब तबके के पांचवी से लेकर दसवीं पास युवाओं का चयन किया जाएगा। उन्हें तीन महीने का प्रशिक्षण देकर रोजगार या नौकरी की व्यवस्था कराई जाएगी। यह जानकारी मुख्यमंत्री सारथी योजना के मोबिलाइजर संजय महतो ने दी। उन्होंने बताया कि चयनित लोगों को झारखंड कौशल विकास मिशन की ओर विभिन्न ट्रेड में तीन महीने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

माकपा कार्यालय में मनाई गई नेताजी की जयंती

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बहरागोड़ा : बहरागोड़ा बाजार स्थित माकपा कार्यालय में गुरुवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। पार्टी के झारखंड राज्य सदस्य स्वपन कुमार महतो व कार्यकताओं ने नेताजी की तस्वीर पर फूल-माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। स्वपन कुमार महतो ने नेताजी की जीवनी पर विस्तार से प्रकाश डाला और पार्टी के लोगों से उनके सिद्धांतों पर चलने की अपील की। मौके पर अभिजीत जाना, सुकुमार राणा, ऋषिकेश दास, लालमोहन गोंड, सुधीर पात्र, पृथ्वीराज मुंडा, हिमांशु गोप, सुनाराम मांडी आदि उपस्थित थे।

कमलचंद्र वेलफेयर सोसायटी ने जयंती पर नेताजी को किया नमन

जमशेदपुर : पोटका प्रखंड के कालिकापुर में बुधवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती श्रद्धा के साथ मनाई गई। स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय कमल चंद्र भक्त वेलफेयर सोसायटी की ओर से आयोजित समारोह में सदस्यों ने नेताजी की तस्वीर पर फूल-माला चढ़ाकर नमन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सोसायटी के संरक्षक अनुपम भक्त ने की। इस अवसर पर बच्चों के बीच चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित की गई। बच्चों के बीच कॉपी-पेंसिल का वितरण किया गया। कार्यक्रम के अंत में समाज में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लोगों को सोसायटी के संरक्षक अनुपम भक्त ने शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। ज्ञात हो कि कालिकापुर गांव में 5 दिसंबर 1939 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस पहुंचे थे और तुम मुझे खून दो, हम तुम्हे आजादी देंगे का नारा बुलंद किया था। शिक्षक संघ के नेता अनुपम भक्त ने बताया कि गांव में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी सभा के दौरान उपयोग में लाए गए बेंच, कुर्सी, टेबल को संजो कर रखा गया है। श्रद्धांजलि समारोह में उनकी प्रदर्शनी में लगाई गई। मौके पर भोला भक्त, मुखिया बाघराय सोरेन, राजकमल भक्त, हिमांशु चंद्र भक्त समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

पूर्व मंत्री दिनेश षाडंगी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को जयंती पर दी श्रद्धांजलि

जमशेदपुर : झारखंड सरकार के प्रथम स्वास्थ्य मंत्री रहे डॉ दिनेश कुमार षाड़ंगी ने गुरुवार को बहरागोड़ा स्थित अपने आवासीय कार्यालय में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती मनाई। षाड़ंगी ने नेताजी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। अपने संबोधन में उन्होंने नेताजी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तारसे प्रकाश डाला। मौके पर मृत्युंजय दास, हुकुम महतो, सगीर हुसैन, सुदीप पटनायक, संजीव रथ, विजय दत्त, जयप्रकाश नाथ सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ ने सेवानिवृत्त शिक्षक सम्मान सह मिलन समारोह का किया आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : डिमना लेक में झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ पटमदा और बोड़ाम प्रखंड इकाई के द्वारा सेवानिवृत शिक्षक सम्मान सह मिलन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश महासचिव निखिल मंडल ने कहा कि आज नेता सुभाष चंद्र बोस की जयंती है। उनके आदर्शों के साथ चले। शिक्षा विभाग शिक्षकों को नियुक्ति वर्ष में बांटकर कर शोषण कर रही हैं। पटमदा और बोड़ाम प्रखंड में वर्तमान संघ की कमिटी काफी सक्रिय हैं। गिरजा प्रसाद मिश्रा ने कहा कि हमारे समय में 150 रुपए वेतन से सरकारी शिक्षक का कार्य करते थे। शिक्षकों को संघर्ष के बदौलत मिला केंद्रीय वेतनमान। जिला स्तर पर भी बने संघ भवन,नियमित बैठक भी करे वर्तमान कार्यरत शिक्षक, सेवानिवृत होकर भी संगठन के साथ जुड़कर करे काम।सेवानिवृत शिक्षक शरत सिंह सरदार ने कहा कि सभी शिक्षकों को किसी भी शिक्षक की समस्या पर एकजुट होकर लड़ाई लड़ना होगा। इस दौरान उपस्थित पदाधिकारियों ने संघ के वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया जाए। झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के वार्षिक वनभोज कार्यक्रम में राज्य के महासचिव निखिल मंडल,शरत सिंह सरदार, अरुण सिंह जिलाध्यक्ष, अरुण कुमार, प्रमंडल उपाध्यक्ष गिरजा प्रसाद मिश्रा, अरविंद कुईला,संचालन डॉ समीर कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सुधीर चंद्र मुर्मू ने किया। शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्य से हटाया जाए। झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा पिछले वर्ष सेवानिवृत हुए शिक्षकों में उषा किरण, सुनील कुमार मंडल, ज्ञान रंजन सुवाई, गोकुल चंद्र मोदी, कानूराम माझी, अच्युत कुमार दास,जगदीश प्रसाद मंडल,प्रदीप कुमार दत्ता, मनोज कुमार बास्के, गोरी शंकर शादंगी को अंगवस्त्र और पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया।

युवती की हत्या कर शव 50 टुकड़े करने के आरोपी को सुप्रीम कोर्ट से नहीं मिली बेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड के साहिबगंज में आदिवासी युवती रेबिका पहाड़िन की हत्या कर शव के 50 टुकड़े करने के आरोपी मो. मुस्तकिम अंसारी को जमानत देने से इनकार कर दिया। जस्टिस बेला एम त्रिवेदी व जस्टिस सतीश चंद्र की बेंच ने गुरुवार को आरोपी की ओर से दायर याचिका खारिज कर दी। इसके पहले झारखंड हाईकोर्ट व ट्रायल कोर्ट से उसकी जमानत याचिकाएं निरस्त हो चुकी थीं। यह वारदात 16 दिसंबर 2022 को हुई थी। साहिबगंज जिले के बोरियो थाना क्षेत्र निवासी आदिम पहाड़िया जनजाति की युवती रेबिका की हत्या उससे महज डेढ़ महीने पहले शादी रचाने वाले दिलदार अंसारी और उसके परिवार के लोगों ने कर दी थी। क्रूरता के साथ उसकी लाश के 50 टुकड़े कर दिए थे। मामला तब सामने आया था, जब जहां-तहां फेंके गए उसके शव के टुकड़े कुत्ते खा रहे थे। मामला सामने आते ही पुलिस ने दिलदार अंसारी, उसके पिता मो. मुस्तकिम अंसारी, मां मरियम खातून, पहली पत्नी गुलेरा अंसारी, भाई अमीर अंसारी, महताब अंसारी, बहन सरेजा खातून सहित 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। इस वारदात के मास्टरमाइंड मोइनुल अंसारी को करीब दो माह बाद दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था। आरोपियों में से तीन आमिर हुसैन, महताब और गुलेरा को झारखंड हाईकोर्ट ने बाद में जमानत दी थी, जबकि अन्य आरोपी अभी भी जेल में बंद हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा मनायी गयी सुभाष चंद्र बोस की जयंती

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद साहिबगंज नगर द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नेताजी के महान योगदान, विचारों और उनके बलिदान को स्मरण करते हुए युवाओं को प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया। जिसमें उपस्थित वक्ताओं ने नेताजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रदेश सह मंत्री सुनिधि ने कहा कि नेताजी का जीवन हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्ष करना चाहिए। उनका देशप्रेम हर युवा के लिए प्रेरणा है। नगर उपाध्यक्ष रविकांत ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी का निडर नेतृत्व और उनके विचार आज भी युवाओं को अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पण सिखाते हैं। उनका जीवन भारत के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक है। नगर मंत्री अविनाश साह ने कहा कि नेताजी का नारा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' हर भारतीय के दिल में देशभक्ति की अलख जगाता है। हमें उनके विचारों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। कार्यक्रम के समापन पर सभी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी के आदर्शों को जीवन में अपनाने और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पित रहने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य चंदन गुप्ता, प्रदेश सोशल मीडिया संयोजक इंद्रजीत साह, जिला मीडिया प्रभारी आदर्श ओझा, कॉलेज मंत्री नयाशा भारती,एसएफडी संयोजिका पायल कुमारी, शुभम सूरज, सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

42 करोड़ की लागत से ईचागढ़ शाखा नहर का होगा पक्कीकरण : सविता महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : प्रखंड क्षेत्र के डुमटांड़ मोड़ पर गुरुवार को ईचागढ़ शाखा नहर का पक्कीकरण कार्य का शिलान्यास विधायक सविता महतो ने फीता काटकर व शिलापट्ट अनावरण कर किया। ईचागढ़ शाखा नहर का पक्कीकरण मैसड़ा तक किया जाएगा।इस नहर का पक्कीकरण होने से सिंचाई क्षमता में वृद्धि होगी। किसानों के खेतों तक आसानी से पानी पटवन हो सकता है वहीं विधायक सविता महतो ने कहा कि कांची वियर सिंचाई योजना अन्तर्गत ईचागढ़ शाखा नहर का पक्कीकरण व पुनर्स्थापन कार्य 42 करोड़ रुपए की लागत से किया जाएगा।उन्होंने कहा कि ईचागढ़ क्षेत्र पूर्णतः कृषि पर आश्रित है।इस योजना का पूर्ण होने से सिंचाई क्षमता 697 हेक्टेयर से बढ़कर 4477 हेक्टेयर हो जाएगा। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण कार्य करने का भी निर्देशित किया गया है।वहीं विधायक सविता महतो को युवा कल्याण, संस्कृति एवं पर्यटन विकास समिति के सभापति बनने पर कार्यकताओं व क्षेत्र के लोगों ने बुके देकर व मां दुर्गा का मुखौटा देकर गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।मौके पर निताई उरांव,अभय यादव, पंचानन पातर,किसुन किस्कू, गुप्तेश्वर महतो,विश्वनाथ उरांव,प्रताप महतो, लाल सिंह,राम सिंह मुण्डा,नरेन गोप,अमित सिन्हा, पशुपति बागची आदि सैकड़ों झामुमो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

तेतरिया मैदान में सड़क सुरक्षा फुटबॉल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

साहिबगंज : सड़क सुरक्षा माह 2025 के उपलक्ष्य में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत आज सड़क सुरक्षा फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खेल प्रतियोगिता तो बहाना हैझ असल में सड़क सुरक्षा का पाठ पढ़ना है राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2025 के कार्यक्रम के तहत आज साहिबगंज जिले के तेतरिया मैदान में सड़क सुरक्षा फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सड़क सुरक्षा आयोजन किया गया। जिला परिवहन पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी द्वारा बताया गया कि सड़क सुरक्षा माह 2025 का खेल प्रतियोगिता तो बहाना है असल में सभी को सड़क सुरक्षा का पाठ पढ़ना है। इसी संदेश के तहत साहिबगंज जिले भर में सड़क सुरक्षा पर आधारित विभिन्न विभिन्न कार्यक्रम किया जा रहे हैं जिसे आम जनमानस को जागरूक किया जा सके एवं यातायात करते वक्त नियमों का पालन करेंगे जिससे सड़क पर हो रही दुर्घटनाओं में कमी लाया जा सकेगा। जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक नीरज कुमार साह के द्वारा नेक नागरिक बनकर सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद बिना किसी संकोच या बिना किसी भय के करने को कहा गया क्योंकि नेक नागरिक गुड सेमीरिटर्न पॉलिसी के अंतर्गत सरकार द्वारा घायल व्यक्ति को मदद पहुंचाने पर ?2000 के पुरस्कृत राशि एवं प्रशस्ति पत्र का प्रावधान है जिसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के द्वारा पुरस्कृत राशि दिया जाएगा। साथ ही साहिबगंज के विभिन्न क्षेत्रों पर हैंडबिल, पंपलेट, बुकलेट आदि वितरण किया जा रहा है एवं सभी आम जनमानस को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जा रहा। सड़क सुरक्षा माह 2025 का कार्यक्रम सिर्फ आंकड़ों को कम करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों को जीवन के प्रति अधिक जिम्मेदार बनने का संदेश देता है। इस मौके पर जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक नीरज कुमार साह, रोड इंजीनियर एनालिस्ट अनुज पराशर, आईटी सहायक राजहंस, दुगाटीला पंचायत मुख्या गंगू पहाड़ियां, तेतरिया संथाली ग्राम प्रधान समाय टुडू, पंचायत सचिव जीतन टुडू एवं अन्य कर्मी मौजूद रहे।

विभागीय लापरवाही के कारण बेकार साबित हो रहा मिजार्पुर कृषि लैम्पस गोदाम

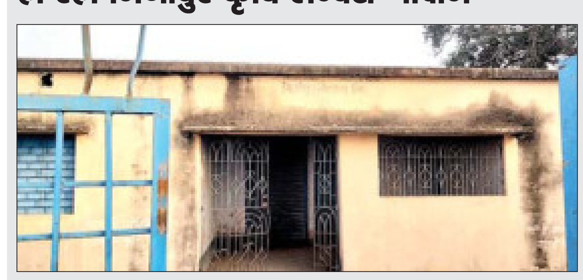

बरहरवा : प्रखंड क्षेत्र के मिजार्पुर पंचायत भवन के पास स्थित झारखंड सहकारिता विभाग की ओर से बनाए गए कृषि लैंमप्स गोदाम लगभग 12 सालों से निरंतर विभागीय लापरवाही के कारण दस्त झेल रही है। सूत्रों के माने तो ना ही यहां पर कोई सरकारी कर्मचारी आते हैं ना यहां गोदाम का ताला खोला जाता है। बताते चले की यहां पर सरकारी कोई बीज एवं कृषि संबंधित सरकार की लाभकारी योजनाओं का किसानों तक नहीं पहुंचाया जाता है ना ही कोई प्रशिक्षण दिया जाता है। सरकार की इस लाभकारी योजना का छिन-बिन तरीके से रख दिया गया है और राज्य की प्रॉपर्टी को नुकसान पहुंचा रहा है झारखंड सहकारिता विभाग की ओर से इतनी बड़ी लापरवाही को अंजाम दिया जा रहा है। गोदाम पर कोई सरकारी कृषि संबंधित बीज वितरण एवं खाद सहित सभी सरकारी लाभों को किसानो से वंचित रखा गया है। सरकार का अनुदान का महज एक हिस्सा बनकर रह गया है लगभग 12 सालों से यहां पर कृषि गोदाम बन पड़े हैं एवं ना सालों में गोदाम का रंग रोगन एवं चुना प्लास्टर कुछ भी नहीं किया जाता है जिससे गोदाम का हालात जर्जर होने के कगार पर है। फिर भी यहां पर कोई सरकारी कृषि संबंधित सहायता नहीं मिल पाई है जब इसकी जानकारी विभागों अधिकारियों से लिए गए तो संपर्क नहीं हो पाई। इसीलिए अधिकारी का पक्ष नहीं रखा गया।

क्रिकेट लीग कम नॉक आउट टूर्नामेंट में यंग बॉयज क्रिकेट क्लब ने 5 विकेट से जीता मैच

साहिबगंज : जिला क्रिकेट संघ के तत्वाधान में सिदो-कान्हू स्टेडियम में चल रहे सीनियर क्रिकेट लीग टूनार्मेंट में गुरुवार को यंग बॉयज सीसी बनाम द न्यूबीज के बीच मैच खेला गया। द न्यूबीज ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 24.1 ओवर में 141 रन बना कर ऑल आउट हो गई। सुमन कुमार ने 52, शहनवाज ने 17, नवीन ने 11, समीर कुरैशी ने 35 व आदित्य ने 10 रनों की पारी खेली। यंग बॉयज क्रिकेट क्लब के गेंदबाज दीपक ने 2, पवन ने 2, कुश तिवारी, रजनीश आनंद, शत्रुघन यादव, श्याम रंजन तिवारी ने 1-1 विकेट लिया। बाद में बल्लेबाजी करने उतरी यंग बॉयज क्रिकेट क्लब की टीम ने 18.2 ओवर में 5 विकेट पर 143 रन बना कर 5 विकेट से मैच जीत लिया। पवन ने 13, सुमन कुमार ने 14, कुश तिवारी ने 51, दीपक ने 21, सन्नी कुमार ने 10 रन बनाए। दी न्यूबीज के गेंदबाज सुमन राज ने 2, रवि, पीयूष व शहनवाज ने 1-1 विकेट लिया। यंग बॉयज क्रिकेट क्लब के खिलाड़ी कुश तिवारी को मैन ऑफ दी मैच घोषित किया गया। मुख्यातिथि सीनियर क्रिकेटर सतीश सिन्हा ने कुश तिवारी को मैन ऑफ दी मैच की ट्रॉफी से पुरस्कृत किया। मैच में अंपायरिंग राकेश कुमार रोशन व प्रभाकर सिंह उर्फ गुड्डा एवं स्कोरिंग सागर सुमन ने किया। मौके पर टूनार्मेंट इंचार्ज मो अशफाक आलम, सतीश सिन्हा, राकेश कुमार रोशन, मो जुनैद, आदित्य ज्ञान व अन्य मौजूद थे।

आयुष कुमार को दो युवकों ने धारदार हथियार से मारकर किया घायल

साहिबगंज : बीते रात्रि को मिजाचौकी थाना क्षेत्र अंतर्गत नयाटोला गांव निवासी आयुष कुमार उम्र 18 वर्षीय, पिता ललन सिंह को दो युवक ने गला में चाकू मारकर घायल कर दिया गया। घायल युवक को बड़तल्ला पंचायत मुखिया प्रतिनिधि राजेश राम के मदद से मिजाचौकी थाना समीप स्थित निजी क्लीनिक ले जाया गया। जहां घायल युवक का प्राथमिक उपचार किया गया। मामले की जानकारी मिजाचौकी पुलिस को दी गई। मामले की सूचना मिलते ही घायल युवक को देखने मिर्जाचौकी निजी क्लीनिक पहुंचे मिजाचौकी थाना प्रभार थाना प्रभारी पवन यादव। घायल युवक को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज भेजा गया। वही सदर अस्पताल साहिबगंज में डॉ मुकेश कुमार के देखरेख में घायल युवक का इलाज किया गया। वही मामले को लेकर मिजाचौकी थाना पुलिस छानबीन कर रही है।

'मैं 34 का अनंत सिंह 64 के, मुझ से लड़ेंगे

गैंगस्टर सोनू बोला- बाहुबली की मानसिक हालत खराब, पूर्व विधायक का जवाब- फिर आऊंगा

पटना। के मोकामा में बाहुबली नेता अनंत सिंह और सोनू-मोनू गैंग के बीच हुई 100 राउंड फायरिंग का मामला अब आगे बढ़ता जा रहा है। दोनों तरफ से अब तल्ख बयानबाजी हो रही है। अनंत सिंह सोनू-मोनू को चोर बता रहे हैं। अनंत सिंह का कहना है कि 'जरूरत पड़ेगी तो फिर से उस गांव में जाऊंगा। जनता के साथ कोई गलत करेगा तो मैं फिर से जलालपुर गांव जाऊंगा।' वहीं सोनू का कहना है कि 'अनंत सिंह 64 की उम्र में 34 वाले से लड़ने चल दिए। शास्त्र और शस्त्र दोनों की परिभाषा बाहुबली को समझाएंगे।' अनंत सिंह का कहना है कि 'मेरे पास कुछ लोग आए और पूरी समस्या बताई। हमारे लोगों ने उन्हें डीएसपी के पास भेज दिया। लेकिन डीएसपी साहब नहीं थे। तो वो लोग फिर मेरे पास रोते हुए आए। मुझे बुखार था, लेकिन उनकी हालत देखकर मैंने उनके साथ चलने को तैयार हो गया। वहां जाने पर सोनू-मोनू ने मेरे लोगों पर फायरिंग कर दी। बचाव में इधर से भी फायरिंग हुई।'अनंत सिंह का कहना है कि 'अगर स्थानीय थानेदार ने समय पर कार्रवाई की होती तो मुझे जाना ही नहीं पड़ता। इस मामले की जांच होनी

"जनता पर जुल्म होगा तो मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा। सोनू-मोनू किडनैपर्स और चोर हैं। जरूरत पड़ी तो फिर से उस गांव में जाऊंगा।

अनंत सिंह,
पूर्व विधायक

चाहिए। सुरक्षा के सवाल पर अनंत सिंह का कहना है कि वो सरकार जाने। मुझे जेल भेजना है या नहीं भेजना है ये सब सरकार समझे।' हमारे लोगों ने घेरा तो अनंत सिंह भाग गए सोनू ने कहा कि 'आसपास के लोग ने मोर्चा संभाला और अनंत सिंह को घेरने लगे तो वो भागने लगे। अनंत सिंह को ऐसा करना शोभा नहीं देता। वो हमारे साथ बहुत गलत कर चुके हैं, लेकिन फिर भी सब कुछ भूलकर और विवेका पहलवान के बेटे के कहने के बाद मैंने उनके चरणों में नतमस्तक हुआ। इसके बाद भी अनंत सिंह ने ऐसा काम किया।' 'मामले की शुरूआत मुंशी के पैसा लेकर भागने के बाद से हुई। वो वहां नहीं थे तो हमने उनकी पत्नी और बेटी से पिता को बुलाने की बात कही, ताकी हिसाब क्लियर हो सके। चिमनी पर मुंशी काम करते थे, सामान और पैसे का हिसाब तो हम लेंगे ही। हिसाब मांगा तो वो अनंत सिंह के पास चले गए। पैसा भी नहीं मिला। फायरिंग भी करवा दी। एक मुंशी के चक्कर में बिना जांच किए हमारे घर पर फायरिंग करवाई। अब हमें क्या करना चाहिए आप लोग ही बताइए।' सोनू का कहना है कि 'उनके पास कोई फाइल या पंचायती का मामला गया तो उसे अच्छे से देखना चाहिए। बिना मामला जाने किसी के घर पर आकर फायरिंग कर दीजिएगा। आपके पास 50 लोग हैं तो कुछ भी

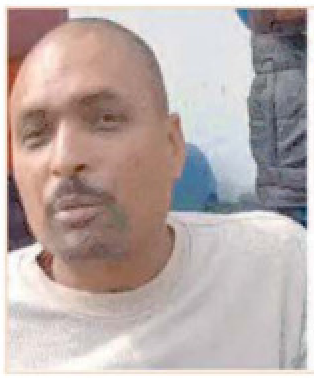

"अनंत सिंह कौन से मठ के पुजारी हैं? अनंत सिंह के पास सोचने-समझने की क्षमता खत्म हो चुकी है।

सोनू, गैंगस्टर

कीजिएगा। इसके लिए पुलिस प्रशासन, व्यवस्था है। देश में संविधान है। ऐसे लोग संविधान को खतरे में डालने वाले हैं। बचपन से अनंत सिंह ऐसा करते आए हैं। लोकसभा चुनाव के दौरान मैंने ललन सिंह के लिए काम किया। उन्हें जीत दिलाई। अनंत सिंह ने कहा था कि ललन सिंह को माला पहनाकर गलत काम करते हो। इसका जबाव तो ललन सिंह देंगे। आप हमारे दरवाजे पर आएं आपके साथ कुछ गलत व्यवहार हुआ क्या ?' अनंत सिंह पर केस दर्ज ग्रामीण रद्ध विक्रम सिहाग ने बताया कि 'बुधवार शाम 4.30 बजे नौरंगा में दो गुटों में फायरिंग हुई। सुबह में हेमजा गांव के मुकेश सिंह के घर पर सोनू-मोनू के द्वारा पैसे के लेन-देन को लेकर ताला मार दिया गया है। इसी समस्या का समाधान करने के लिए अनंत सिंह वहां आए थे।' 'पूर्व विधायक अनंत सिंह के समर्थकों और स्थानीय मुखिया उमीर्ला देवी के बेटे सोनू और मोनू के बीच फायरिंग हुई। इस मामले मुकेश सिंह, सोनू-मोनू के पिता प्रमोद सिंह और पंचमहला थाना प्रभारी के बयान पर तीन केस दर्ज कर लिए गए हैं। फायरिंग की वीडियो वायरल पूर्व विधायक और बाहुबली नेता अनंत सिंह के समर्थकों के साथ जलालपुर गांव पहुंचे थे। वहां गैंगस्टर सोनू-मोनू और अनंत समर्थकों के बीच फायरिंग हुई। अनंत सिंह का कहना है कि उनके एक समर्थक के गर्दन में गोली लगी है। एक वीडियो भी तेजी से वायरल हो रहा है। 53 सेकेंड के वीडियो में 20 राउंड फायरिंग की आवाज सुनी जा सकती है। विवाद की वजह समझिए दरअसल, कुछ दिनों पहले ईंट-भट्ठे पर 14 हजार की सैलरी पर काम करने वाले मुंशी मुकेश कुमार के पास सोनू-मोनू बकाया पैसा मांगने पहुंचे थे। इसी दौरान दोनों ने मुंशी के साथ मारपीट की और उसे घर से बाहर करके ताला लगा दिया था। अनंत सिंह सोमवार को इसी मामले में पंचायती कराने गए थे। इस दौरान अनंत सिंह के समर्थकों ने सोनू-मोनू से कहा कि, 'मुकेश के घर का ताला खोल दो, लेकिन वे नहीं माने।'इसके बाद अनंत सिंह बुधवार देर शाम अपने समर्थकों के साथ फिर से जलालपुर गांव में विवाद सुलझाने पहुंचे। तभी फायरिंग हुई। गोली लगने की बात सुनकर पिता की हार्ट अटैक से मौत हुई थीऐसा नहीं है कि अनंत सिंह और उनके समर्थकों पर ये पहला जानलेवा हमला है। 90 के दशक में भी अनंत सिंह पर फायरिंग हुई थी, उन्हें दो गोलियां लगी थी। इसका जिक्र पूर्व विधायक कई बार मीडिया को दिए इंटरव्यू में कर चुके हैं।

संक्षिप्त डायरी

राज्यपाल बोले-भारत की संस्कृति से जुड़ी हैं सहकारिता आंदोलन की जड़ें

पटना। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खां ने कहा कि सहकारिता आंदोलन की जड़ें भारत की संस्कृति और प्राचीन परंपराओं से जुड़ी हैं। उन्होंने गीता के एक श्लोक का उद्धरण देते हुए कहा कि एक-दूसरे का सहयोग करके और आगे बढ़ाकर ही परम श्रेय को प्राप्त किया जा सकता है। यह आगे बढ़ने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का मंत्र है, जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने इस ग्रंथ में बताया है। राज्यपाल ने कहा कि एकता और आपसी सहयोग के इस स्थायी सिद्धांत ने सहकारी समितियों को बढ़ावा दिया है, जो स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाती हैं और जमीनी स्तर पर विकास को आगे बढ़ाती हैं। वे बुधवार को ऊर्जा ऑडिटोरियम में आयोजित सहकारी चौपाल कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने राज्यस्तरीय केसीसी मेगा शिविर का उद्घाटन किया और सहकारी प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। राज्यपाल ने कहा-भारत में सहकारी आंदोलन की जड़ें 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में देखी जा सकती हैं, जब ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से को गरीब और असुरक्षित बना दिया था। भारत में सहकारी समिति की औपचारिक मान्यता 20वीं सदी की शुरूआत में पहली सहकारी समिति की स्थापना के साथ हुई। वर्ष 1904 में भारतीय सहकारी अधिनियम लागू किया गया, जिससे भारत में सहकारी समितियों की स्थापना की नींव रखी गई। सहकारी चौपाल वराज्यस्तरीय केसीसी मेगा शिविर का राज्यपाल ने उद्घाटन किया न्यूनतम समर्थन मूल्य पर हो रही खरीदारी सुधा के प्रोडक्ट विदेश भेजे जाएंगे पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री रेणु देवी ने कहा कि अगले तीन महीने में सुधा के प्रोडक्ट विदेश भेजे जाएंगे। सुधा घी, पेड़ा और अन्य उत्पादों को अमेरिका भेजा जाएगा। सहकारिता मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने कहा कि सहकारी चौपाल कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सहकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। अथमलगोला प्रखंड से इसकी शुरूआत होगी। राज्य के 23 जिला केंद्रीय सहकारी बैंक और बिहार राज्य सहकारी बैंक की 290 शाखाओं में केसीसी ऋण वितरण होगा। कार्यक्रम में निबंधक सहयोग समितियां इनायत खान, अपर सचिव अभय कुमार सिंह और अन्य वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि राज्य में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सहकारिता विभाग पैक्सों और व्यापार मंडलों के माध्यम से खाद्यान्न खरीदा जा रहा है। इस खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में धान की खरीदारी की जा रही है। इस वर्ष 45 लाख मीट्रिक टन धान खरीदने का लक्ष्य है। किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रुपए प्रति क्विंटल (साधारण धान) और 2320 रुपए प्रति क्विंटल (ग्रेड ए धान) की दर से क्रय किया जा रहा है। किसानों को धान का पैसा 48 घंटे के भीतर खाते में भेजा जा रहा है। राज्य के रैयत और गैर रैयत दोनों प्रकार के किसानों से धान खरीदा जा रहा है। रैयत किसानों से अधिकतम 250 क्विंटल और गैर रैयत से अधिकतम 100 क्विंटल धान खरीदा जा सकता है।

मक्के के खेत में मिली महिला की लाश

पूर्णिया। में संदिग्ध अवस्था में महिला का शव मिला है। लाश मक्के के खेत में फेंका हुआ था। शव के पास से चप्पल, हेयर पिन, नोज रिंग और काले रंग का मास्क मिला है। महिला की उम्र तकरीबन 32 साल बताई जा रही, हालांकि अब तक शव की शिनाख्त नहीं हो सकी है। ग्रामीणों का कहना है कि महिला की हत्या कहीं और की गई, लाश छिपाने के मकसद से इसे मक्के के खेत में फेंका गया है। महिला की लाश को ठिकाने लगाते इससे पहले ही ग्रामीणों की नजर पड़ गई। घटना चंपानगर थाना क्षेत्र की पोठिया रामपुर पंचायत के वार्ड 7 की है। शव मिलने की सूचना पर चंपानगर थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए GMCH भेजा गया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि रोज की तरह गांव के कुछ ग्रामीण खेत पर टहलने निकले थे। उन्हें मक्के के खेत से अजीब सी बदबू आई। उन्हें लगा कि शायद कोई जानवर मरा है।करीब जाकर देखने पर उन्हें लाश दिखाई दी। महिला की लाश देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने महिला के साथ किसी अप्रिय वारदात को अंजाम दिया है। इसके बाद उसकी हत्या कर दी है। बॉडी छिपाने की नीयत से उसे मक्के के खेत में लाकर फेंक दिया है। शव को ठिकाने लगाया जाता, इससे पहले ही ग्रामीणों की नजर बॉडी पर पड़ गई। ग्रामीणों ने फोन कर पुलिस को सूचना दी, शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जमशेदपुरिया भेज दिया है। 72 घंटे तक पोस्टमॉर्टम रूम में रखा जाएगा। चंपानगर थाना इंचार्ज प्रियंका कुमारी ने बताया कि मौके पर एफएसएल की टीम को बुलाया गया था। वहां से कई साक्ष्य इकट्ठा किए गए हैं। एफएसएल की टीम ने शव के पास से चप्पल, हेयर पिन, नोज रिंग और ब्लैक मास्क बरामद किया है। दो जगह की मिट्टी भी सैंपल के रूप में अपने साथ ले गई है।

सिगरेट नहीं देने पर महिला से गैंगरेप

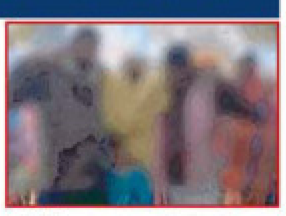

लखीसराय। लखीसराय में सिगरेट के लिए एक महिला के साथ गैंगरेप का मामला सामने आया है। बुधवार की देर रात 2 लोग एक बुजुर्ग महिला के घर का दरवाजा खटखटाने लगे। उन्हें सिगरेट चाहिए थी। महिला ने घर के अंदर से ही कहा कि 'दुकान बंद है, सिगरेट नहीं मिलेगी।' जिसके बाद बदमाशों ने जोर-जोर से दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया। वो कह रहे थे कि दरवाजा खोलो। घर में मौजूद महिला और उसकी बहू ने बिना गेट खोले बार-बार सिगरेट नहीं देने की बात कही। जिसके बाद अपराधी जबरन घर में दाखिल हुए और महिला को घसीटते हुए खेत ले गए। जहां उनके साथ दरिंदगी की गई। मामला सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र का है। जहां 65 साल की महिला के साथ गैंगरेप हुआ है। घटना के समय आरोपी शराब के नशे में थे।

किऊल महोत्सव को मिला राजकीय दर्जा

लखीसराय में डिप्टी सी.एम ने किया उद्घाटन, अगले साल और भव्य होगा आयोजन

लखीसराय। लखीसराय में किऊल महोत्सव 2025 का शुभारंभ भक्तिमय जागरण कार्यक्रम के साथ हुआ। बिहार के उप मुख्यमंत्री, कला, संस्कृति और युवा विभाग मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने दीप प्रज्वलन और फीता काटकर महोत्सव का विधिवत उद्घाटन किया। कार्यक्रम में डिप्टी सीएम सिन्हा ने किऊल महोत्सव को सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बताते हुए आश्वासन दिया कि अगले वर्ष इसे और अधिक भव्य रूप दिया जाएगा। स्थानीय विधायक प्रहलाद यादव ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि की जानकारी देते हुए बताया कि महोत्सव को राजकीय दर्जा मिल गया है। जिसकी मांग लंबे समय से की जा रही थी।जागरण कार्यक्रम में भक्तिमय माहौल के बीच 'मेरे झोपड़े के सारे भाग्य खुल जाएंगे, राम आएंगे...' जैसे भजनों की प्रस्तुति ने श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम में जिला पदाधिकारी मिथलेश मिश्र और जिला अधीक्षक अजय कुमार भी उपस्थित रहे।

जिला प्रशासन ने महोत्सव की सफलता के लिए विशेष इंतजाम किए थे।

राम लला की पहली वर्षगांठ पर विशेष कार्यक्रम आयोजित

तेलडीहा शक्तिपीठ में बनारस की तर्ज पर महाआरती, किन्नर समाज बना गवाह

मुंगेर। और बांका जिले की सीमा पर स्थित प्रसिद्ध तेलडीहा शक्तिपीठ मंदिर में राम लला की पहली वर्षगांठ के अवसर पर भव्य आयोजन किया गया। मंदिर को दीपों और आकर्षक सजावट से सजाया गया, साथ ही माता को 51 किलो लड्डू का भोग लगाया गया। बुधवार की देर शाम को सुल्तानगंज से आए सात पंडितों ने चंदन कुमार के नेतृत्व में बनारस की तर्ज पर विशेष महाआरती का आयोजन किया। मंदिर कमेटी के सदस्यों की उपस्थिति में मां दुर्गा के भक्ति गीतों के साथ महाआरती संपन्न हुई। कार्यक्रम में किन्नर समाज के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही, जिन्होंने भक्तिमय माहौल को और भी जीवंत बना दिया। आरती के दौरान एक रोचक घटना घटी जब एक नीलकंठ पक्षी मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश किया और आरती के समापन तक वहीं रहा। श्रद्धालुओं ने इसे दैवीय संकेत माना। कुछ ने इसे भक्ति का प्रभाव बताया तो कुछ ने माता के आशीर्वाद के रूप में देखा। मंदिर के मुख्य पुजारी श्याम आचार्य और कमेटी सदस्य बिक्की आनंद ने बताया कि तेलडीहा मंदिर न केवल बिहार बल्कि अन्य राज्यों के श्रद्धालुओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण सिद्धपीठ है। यहां भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया।

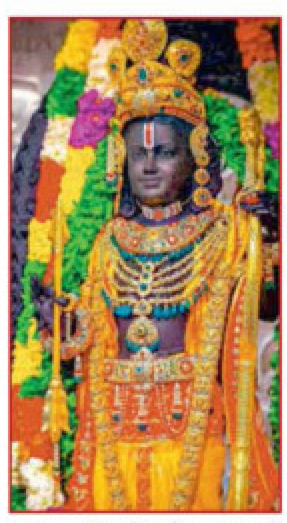

पूर्णिया में रिटायर्ड सिविल सर्जन के घर में चोरी

पूर्णिया। के हाउसिंग कॉलोनी इलाके में रिटायर्ड सिविल सर्जन डॉ. एपी शाही के घर में बेखौफ चोरों ने लाखों की चोरी की घटना को अंजाम दिया। शातिर चोरों ने घर का ताला तोड़कर सोने-चांदी के जेवरात, कैश और कीमती सामान चुरा लिया। साथ ही घर में लगे सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर भी ले गए। डॉ. एपी शाही पिछले दो महीने से इलाज के सिलसिले में परिवार के साथ पूर्णिया से बाहर थे और घर की देखरेख का जिम्मा उनके क्लिनिक के कंपाउंडर रघुनंदन मंडल को सौंप कर गए थे। वे सप्ताह भर में लौटने वाले थे, लेकिन इससे पहले ही उनका घर चोरों के निशाने पर आ गया।घटना की जानकारी मिलते ही के.हाट थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। कंपाउंडर रघुनंदन मंडल ने बताया कि बुधवार की सुबह जब वे डॉ. शाही के घर पहुंचे तो पाया कि मुख्य दरवाजे का कुंडी टूटा हुआ था और अंदर जाने पर तीनों कमरों के दरवाजे भी टूटे हुए थे। घर का सामान बिखरा पड़ा था और कीमती सामान गायब थे। चोरों ने वारदात को अंजाम देने के बाद सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर भी निकालकर ले गए।फिलहाल, रिटायर्ड सिविल सर्जन के घर लौटने के बाद ही चोरी हुए सामानों की सही जानकारी मिल सकेगी। पुलिस ने घटना की तफ्तीश शुरू कर दी है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। केहाट थानाध्यक्ष उदय कुमार ने बताया कि चोरी की घटना को लेकर सभी बिंदुओं पर जांच की जा रही है और जल्द ही मामले का खुलासा किया जाएगा।

जीजा के प्यार में पति का मर्डर, पत्नी-प्रेमी को उम्रकैद

भागलपुर। में पति की हत्या के मामले में कोर्ट ने बुधवार को पत्नी को उम्रकैद की सजा सुनाई है। महिला का उसके जीजा के साथ अवैध संबंध था। इसे लेकर ही दोनों ने प्लानिंग के तहत हत्याकांड को अंजाम दिया था। वारदात में महिला का साथ देने वाले जीजा को भी कोर्ट ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने दोनों पर 35-35 हजार रुपए का जुमार्ना भी लगाया है। जुमार्ना नहीं देने पर 3 महीने जेल की सजा भुगतनी होगी। अक्टूबर 2022 में हुए हत्याकांड में भागलपुर की अळख-2 दिनेश कुमार की कोर्ट में फैसला सुनाया। कोर्ट ने एकचारी दियारा के छोटी चटैया गांव के रहने वाले शंभू मंडल (35) की हत्या का दोषी उसकी पत्नी पुतुल देवी और प्रेमी सोनेलाल मंडल को उम्रकैद की सजा सुनाई। हत्या के वक्त शंभू मंडल और पुतुल देवी के 3 बच्चे भी थे12 अक्टूबर 2022 को हुई थी हत्या साल 2022 के अक्टूबर महीने की शुरूआत में पुतुल देवी अपने प्रेमी सोनेलाल के साथ दिल्ली चली गई थी। पुतुल जब लौटी थी, तब शंभू मंडल ने उसे डांटा-फटकारा था। इसके बाद पुतुल देवी ने अपने पति को धमकाते हुए कहा कि 'तुम मेरे और सोनेलाल के बीच में मत आओ, तुम्हारे लिए ठीक रहेगा।' जानकारी के मुताबिक, इसके बाद पुतुल देवी ने अपने प्रेमी सोनेलाल के साथ मिलकर शंभू मंडल की हत्या की साजिश रची। प्लानिंग के तहत पुतुल देवी ने अपने पति शंभू को 12 सितंबर 2022 को मिर्च की फसल की रखवाली के लिए खेत पर भेज दिया।

कब्र खोदकर काटा जा रहा कंकाल का सिर

सिर वाले हिस्से की तरफ खुदाई करते; 6 महीने पुराने महिलाओं के शव को निशाना बनाते

भागलपुर। में कब्रिस्तान में कब्र खोद कर नरमुंड की चोरी हो रही है। घटना सन्हौला थाना क्षेत्र के असरफनगर के कब्रिस्तान का है, जहां दफनाई गई लाशों (कंकाल) का सिर चोरी हो रहा है। सिर उसी कंकाल का काटा जाता है, जो 6 महीने पहले दफनाया गया हो। ताजा मामला रविवार को सामने आया है। इस कब्रिस्तान से पिछले पांच सालों में 5 कंकालों के सिर गायब किए गए हैं। 4 दिन पहले जिस कंकाल का सिर गायब मिला, वह एक महिला का था। उसकी पहचान मोहम्मद बदरूजम्मा की मां के रूप में हुई थी, जिन्हें साढ़े 5 महीने पहले सुपुर्द-ए-खाक किया गया था। यह काम रात के अंधेरे में किया जाता है, जिससे सिर ले जाने वाला कौन है, वो उसका क्या करता है, यह अब तक पता नहीं चल पाया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि कब्र में दफनाई गई लाश का सिर काटने के लिए खुदाई सावधानी से की जाती है, ताकि सिर्फ सिर को कब्र से निकाला जा सके। कंकाल के अन्य हिस्सों को छोड़ दिया जाता है।3 से 4 गांव के लोग कब्रिस्तान में दफनाते हैं शव जिस कब्रिस्तान से कंकालों के सिर काटे जाने का मामला सामने आया है, वो फाजिलपुर सकरामा ग्राम पंचायत में है। इसे असरफनगर नदियामा कब्रिस्तान के नाम से जाना जाता है, जो काफी पुराना है। यहां 3 से 4 गांव के अल्पसंख्यक समुदाय के लोग शव को दफनाने आते हैं। पिछले 5 साल में कब्र खोदकर मोहम्मद मुख्तार की सास, मोहिद की पत्नी, मोहम्मद मोहित और आशिक अली की पत्नी के कंकाल के सिर को काटा गया। सभी सकरामा गांव के रहने वाले थे। घटना को लेकर कुछ ग्रामीणों ने आशंका जताई है कि ये तांत्रिकों की करतूत हो सकती है। वहीं किसी मानव तस्करी से भी इसे जोड़ कर देखा जा रहा है। जनवरी महीने में ही गायब होते नरमुंड पूर्व मुखिया मोहम्मद एजाज ने बताया कि 'कब्रिस्तान की घेराबंदी चरवाहे अक्सर तोड़ देते हैं। ग्रामीणों ने अपने स्तर पर कई बार इस कब्रिस्तान की घेराबंदी कराई, कंटीले तार लगवाए। कुछ दिनों के बाद ही कंटीले तार को काट दिया जाता है। शव के सिर गायब होने का मामला अक्सर ठंड के मौसम में जनवरी में ही सामने आया है।जामा मस्जिद के इमाम मोहम्मद हुसैन ने बताया कि 'सोमवार को मैं बच्चों को पढ़ा रहा था, इस दौरान एक व्यक्ति ने कहा कि कब्रिस्तान से मुर्दे का सिर निकाल लिया गया है। मैं वहां गया तो बात सही निकली। पुलिस भी मौके पर आई। सिर किस काम के लिए ले जाया गया, इस पर अभी कुछ नहीं बताया जा सकता है।' लोगों का आरोप- कब्रिस्तान की घेराबंदी तोड़ दी जाती है रविवार रात की घटना की सूचना ग्रामीणों को सोमवार सुबह मिली। इस सूचना के बाद लोग कब्रिस्तान पहुंचे और नाराजगी जताई। इसके बाद मौके पर जनप्रतिनिधि, सन्हौल थाने की पुलिस पहुंची और लोगों को शांत कराया। ग्रामीणों का आरोप है कि कब्रिस्तान की घेराबंदी की गई थी, लेकिन चरवाहों ने तोड़ दिया। कई बार इस कब्रिस्तान की घेराबंदी करवाई गई, लेकिन ज्यादा दिन नहीं टिकता। कब्रिस्तान के मेन गेट को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया है। प्रशासन ने घेराबंदी और रोशनी की व्यवस्था कराने का आश्वासन दिया गया। इसके अलावा जल्दी ही आरोपियों की गिरफ्तारी की बात कही है।

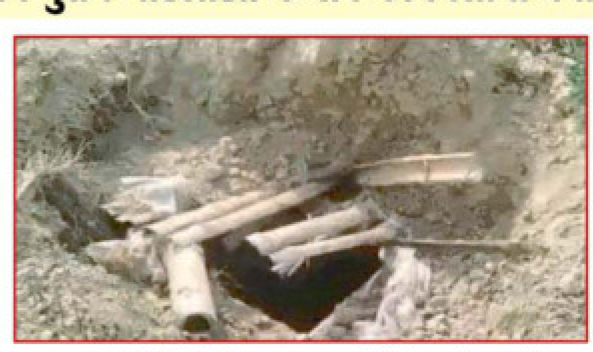

इस घटना को लेकर मंगलवार को सन्हौला थाना में एक बैठक हुई, जिसमें पंचायत के जनप्रतिनिधि शामिल हुए।

संतरे से ज्यादा इन 6 फलों में होती है विटामिन सी की मात्रा, आज ही करें अपनी डाइट में शामिल, मिलेंगे गजब के फायदे

विटामिन सी से भरपूर चीजों का सेवन करने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। वहीं अगर शरीर में विटामिन सी की कमी हो जाए तो व्यक्ति को थकान, कमजोरी, मसूड़ों से खून आना, जोड़ों में दर्द जैसे कई लक्षण महसूस होने लगते है। यूएसडीए के अनुसार, एक संतरा व्यक्ति की दैनिक खुराक को पूरा करने के लिए लगभग पर्याप्त होता है। यही वजह है कि जब कभी शरीर में विटामिन सी की कमी पूरी करने की बात होती है तो लोग सबसे सबसे पहले संतरे को एक अच्छा फल मानते है। लेकिन क्या आप जानते है, संतरे के अलावा 5 ऐसे अन्य फल भी हैं, जिनमें संतरे से ज्यादा विटामिन सी मौजूद होता है। आइए जानते हैं उनके बारे में।

अनानास

अनानास में प्रति 100 ग्राम 47.8 मिलीग्राम विटामिन सी होता है और संतरे में 45 मिलीग्राम विटामिन सी होता है।

कीवी

पोषण विशेषज्ञों के अनुसार लगभग दो कीवी में 137 मिलीग्राम विटामिन सी होता है। कीवी प्रीबायोटिक्स का एक समृद्ध स्रोत है, जो पाचन तंत्र में प्रोबायोटिक्स या अच्छे बैक्टीरिया और यीस्ट के विकास के लिए आवश्यक हैं।

जामुन

जामुन में मौजूद विटामिन सी, इम्यूनिटी बढ़ाने, घाव भरने, स्किन में कोलेजन का उत्पादन करने और आयरन के अवशोषण में मदद करती है। जामुन में विटामिन सी की अच्छी मात्रा मौजूद होती है। बता दें जामुन में प्रति 100 ग्राम में लगभग 80-90 मिलीग्राम विटामिन सी होता है, जो प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

पपीता

पपीता विटामिन सी का अच्छा स्रोत है। पपीते में विटामिन सी की मात्रा इतनी होती है कि यह दैनिक जरूरत से 1.5 गुना ज्यादा होता है। पपीते में मौजूद विटामिन सी, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर दिल की सेहत को बेहतर बनाए रखने में मदद करता है।

बेर

इस छोटे, खट्टे फल में प्रति 100 ग्राम में लगभग 90 मिलीग्राम विटामिन सी होता है, जो इसे एक हेल्दी नाश्ता बनाता है।

आंवले

आंवले में विटामिन सी की मात्रा 100 ग्राम में 500 से 700 मिलीग्राम होती है। यह विटामिन सी का एक बेहतरीन स्रोत है, जो हमेशा बना रहता है। जबकि संतरा या नींबू जैसे अन्य विटामिन सी रिच फलों में हवा या धूप के संपर्क में आने पर विटामिन सी की मात्रा कम हो जाती है।

बिना मेहनत के तेजी से बजन घटाने के लिये बेस्ट है अदरक की चाय या ग्रीन टी, जाने इस्तेमाल करने का तरीका

जब भी वेट लॉस की बात आती है तो आप क्या खाते है या क्या पीते है, यह बहुत अधिक मायने रखता है। अमूमन वेट लॉस के लिए दो बेहद ही पॉपुलर ड्रिंक है, ग्रीन टी और अदरक की चाय। ये दोनों ही ताजगी देने वाली है, जिनसे कई तरह के हेल्थ बेनिफिट्स भी मिलते है। जहां ग्रीन टी कैटेचिन और कैफीन के कारण मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करके अधिक फैट बर्न करने में मदद करती है, वहीं अदरक की चाय का थर्मोजेनिक प्रभाव होता है जो भूख को कम करने, पाचन में सुधार करने और सूजन को दूर करने में मदद करता है इस बात में कोई दोराय नहीं है कि अदरक की चाय और ग्रीन टी दोनों ही वेट लॉस मे मददगार हैं। लेकिन अक्सर लोगों को यह समझ नहीं आता कि वे इन दोनों में से किसका सेवन करें। जहां कुछ लोग ग्रीन टी की सिफारिश करते हैं तो कुछ लोगों के लिए अदरक की चाय अधिक बेहतर है। तो चलिए आज इस लेख में सेंट्रल गवर्नमेंट हॉस्पिटल के ईएसआईसी अस्पताल की डाइटीशियन रितु पुरी आपको बता रही है कि वेट लॉस के लिए ग्रीन टी या अदरक की चाय में से किसका सेवन करना ज्यादा बेहतर रहेगा

ग्रीन टी के वेट लॉस में फायदे

ग्रीन टी अपने कैटेचिन, विशेष रूप से एपिगैलोकैटेचिन गैलेट के लिए जानी जाती है। कैटेचिन मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करने में मददगार है, जिससे फैट बर्न करना अधिक आसान हो जाता है। साथ ही, इसमें थोड़ा कैफीन होता है जो आपका एनर्जी लेवल बनाए रखता है। अधिक एक्टिव रहने से भी वेट लॉस में मदद मिलती है।

कब पीएं ग्रीन टी?

आप वर्कआउट या भोजन से पहले एक कप ग्रीन टी का सेवन कर सकती हैं। यह फैट बर्न करने और पाचन को बेहतर बना सकती है। ग्रीन टी को दिन में दो से तीन कप पिया जा सकता है। आप इसमें शहद या नींबू भी मिक्स कर सकते हैं।

ग्रीन टी के नुकसान

अगर ग्रीन टी का अधिक सेवन किया जाता है तो इससे आपकी नींद खराब हो सकती है या कैफीन के कारण पेट खराब हो सकता है।

अदरक की चाय के वेट लॉस में फायदे

अदरक की चाय को वेट लॉस के लिए इसलिए अच्छा माना जाता है, क्योंकि यह एक नेचुरल थर्मोजेनिक है, जिसका अर्थ है कि यह आपके शरीर को गर्म करता है, जिससे अधिक कैलोरी बर्न करने में मदद मिलती है। साथ ही, यह अतिरिक्त भूख को कम करने के साथ-साथ पाचन को बेहतर बनाता है।

कब पीएं अदरक की चाय?

आप अदरक की चाय को सुबह या मील्स के बीच में ले सकते हैं। इसे दिनभर में एक से दो कप पिया जा सकता है। टेस्ट को बेहतर बनाने के लिए इसमें दालचीनी या नींबू निचोड़ें।

अदरक की चाय के नुकसान

अगर अदरक की चाय का जरूरत से ज्यादा सेवन किया जाता है तो इससे आपको हार्ट बर्न की शिकायत हो सकती है।

किसका करें सेवन?

ग्रीन टी और अदरक की चाय दोनों ही वेट लॉस में कारगर है। आप इनके गुणों के आधार पर इनका चयन करें। मसलन-

मेटाबॉलिज्म बूस्ट करने के गुणों और कैटेचिन की वजह से ग्रीन टी थोड़ी बेहतर है।

अदरक की चाय आपके पेट को आराम देने और सूजन को कम करने के लिए सबसे बढ़िया है।

ग्रीन टी एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है, जो ओवर ऑल हेल्थ और स्किन के लिए बहुत अच्छी होती है।

वहीं, अदरक की चाय एंटी-इंफ्लेमेटरी होती है, जो कसरत के बाद मांसपेशियों के दर्द में आराम दिलाने में मदद करती है।

बेहतर रिजल्ट के लिए आप दोनों का सेवन कर सकती हैं। अतिरिक्त फैट बर्न के लिए वर्कआउट से पहले ग्रीन टी लें और पाचन को शांत करने और फूड क्रेविंग को कमम करने के लिए भोजन के बाद अदरक की चाय ली जा सकती है।

सर्दियों में इन तरीकों से डाइट में शामिल करें तिल, मिलेंगे गजब के फायदे, तेजी से कम होगा बजन

ठंड में ज्यादातर लोग तिल या तिल से बनी चीजों को खाना पसंद करते हैं। तिल के लड्डू से लेकर तिल की गजक तक, तिल सर्दियों के सुपरफूड में से एक है। तिल में प्रोटीन, आयरन, विटामिन, ओमेगा 6, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे कई पोषक तत्व होते है। ये सभी पोषक तत्व हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते है। ये शरीर को गर्म रखने के साथ ही एनर्जी बूस्ट करने में मदद करता है। इसके अलावा पेट से जिद्दी चर्बी को कम करने के लिए भी तिल काम आ सकती है। इसे खाने से भूख को नियंत्रित किया जा सकता है। पेट की जिद्दी चर्बी और वजन कम करने की सोच रहे हैं तो तिल को खाने में शामिल करें। यहां जानिए किन तरीकों से आप तिल को डायट में शामिल कर सकते है।

1) स्मूदी में शामिल करें - तिल के बीज पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इसे आप सुबह की स्मूदी में मिला सकते हैं। स्मूदी में इसका एक बड़ा चम्मच मिलाने से पोषक तत्व बढ़ जाते है। यह आपकी स्मूदी का स्वाद और बनावट दोनों बढ़ा देगा। तिल के बीज हेल्दी फैट, प्रोटीन और फाइबर से भी भरपूर होते है, जो आपको लंबे समय तक तृप्त रखेंगे।

2) सलाद में डालें - आप अपने सलाद को तिल के बीज के साथ और भी ज्यादा पौष्टिक बना सकते है। हेल्दी फैट और फाइबर के साथ, तिल आपके सलाद में कुरकुरापन जोड़ता है। हरी पत्तेदार सब्जियों, एवोकाडो में तिल मिलाने से फैट बर्न करने में मदद मिल सकती है।

3) तिल से बनाएं बार - घर का बना ग्रेनोला बार हेल्दी स्नैक के तौर पर खाया जा सकता है। इसे बनाने के लिए ओट्स, मेवे और मुट्ठी भर तिल भून लें। थोड़ा सा शहद मिलाएं और बेकिंग ट्रे पर इसे फैला लें। इसे बेक करें और टेस्टी बार तैयार है। इसे खाकर वजन मेनेज करने में मदद मिलती है।

सर्दियों में रोज़ाना पीयें यह जूस, सेहत बनी रहेगी टनाटन, नहीं लगाने पड़ेंगे डॉक्टर के चक्कर

सर्दियों में फिट और हेल्दी रहने के कई ऑप्शन होते हैं. इस समय गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर, शकरकंद और मटर जैसी कई सब्जियां होती है, इसमें मौजूद पोषक तत्व सेहत के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित हो सकते हैं. आप इन्हें सलाद के तौर पर भी डाइट में शामिल कर सकते हैं. लेकिन अगर आपको सलाद खाना पसंद नही है तो आप इन सब्जियों का जूस बनाकर पी सकते है.ताजे फल और सब्जियों के जूस सेहत के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित हो सकता है. तरे का जूस, नींबू का जूस, और आमला जूस में विटामिन सी होता है ऐसे में ये इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने और स्किन के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है. वहीं अलग जूस की अपनी अलग विशेषता होती है. आज हम आपको कुछ ऐसी जूस के बारे में बताने जा रहे हैं जो सर्दियों के मौसम के लिए फायदेमंद साबित हो सकते है.

गाजर और चुकंदर का जूस

गाजर और चुकंदर का जूस में आयरन, विटामिन ए, विटामिन सी और कई पोषक तत्व पाए जाते हैं जो सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकते है. ये जूस आपकी स्किन और सेहत दोनों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है. आप 4 गाजर, 1 चुकंदर, हरी धनिया, 1 आंवला, अदरक, स्वाद अनुसार काला नमक और चीनी मिलाकर जूस बना सकते है. ये आपकी स्किन के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है.

आंवले का जूस

आंवला में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो इम्यूनिटी को बूस्ट करने के साथ ही स्किन और हेयर के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है. सर्दियों में आप आंवला और चुकंदर, आंवला और एलोवेरा, आंवला और लौका, गाजर और आंवला का जूस बनाकर भी सकते है.

चुकंदर, गाजर, अदरक, और सेब का जूस

चुकंदर, गाजर, अदरक, और सेब का जूस के सूज को एबीसी जूस भी कहा जाता है. इस जूस को पीने से इम्यूनिटी बूस्ट करने में मदद मिल सकती है. वहीं इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन ए, विटामिन बी6, विटामिन सी और कई पोषक तत्व मौजूद होते है, जो आपकी स्किन, हेयर और ओवर ऑल हेल्थ के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं.

संतरे का जूस

संतरे में विटामिन सी, विटामिन ए और विटामिन बी जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं. इसमें मौजूद विटामिन सी इम्यूनिटी को बूस्ट करने में मददगार साबित हो सकता है. आप गाजर, हरा सेब, और संतरा इसके अलावा संतरे, मौसंबी, आंवले का जूस भी पी सकते है. लेकिन लिवर और किडनी से जुड़ी बीमारियां, एसिडिटी की समस्या और कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स का इस जूस का सेवन करने से बचना चाहिए.

उंगलियों की ये 5 एक्सरसाइज आपको बना देंगी जीनियस, तेजी से बढ़ेगा दिमाग

बढ़ती उम्र में व्यक्ति की याददाश्त कमजोर होना एक कॉमन समस्या है। लेकिन आजकल की भागती-दौड़ती टेंशन भरी लाइफस्टाइल के चलते कम उम्र में ही लोगों को भूलने की बीमारी हो रही है। ऐसा नहीं है कि यह समस्या सिर्फ वयस्कों में देखी जा रही है बल्कि बच्चे भी इस समस्या से अछूते नहीं रह गए हैं। बच्चों के लिए भी चीजें याद रखना मुश्किल होता जा रहा है। जिसकी वजह से वो कई बार अपनी कक्षा में बाकी बच्चों से पीछे रह जाते हैं। अगर आपको भी लगता है कि आप भी छोटी-छोटी चीजें अकसर भूल जाते हैं या आपको किसी चीज को याद रखने में कठिनाई होती है तो अपनी उंगलियों का यूज करना शुरू कर दीजिए। जी हां, दिमाग तेज करने और याददाश्त बढ़ने के लिए ये 5 आसान फिंगर मूवमेंट आपकी मदद कर सकती हैं।

पहली एक्सरसाइज

दिमाग तेज करने वाली अपनी पहली फिंगर मूवमेंट में आपको एक हाथ की सभी उंगलियों को चोंच के आकार में एक दूसरे के साथ मिलाएं और दूसरे हाथ की हथेली के बीच में चिड़िया की तरह चोंच मारे। इस एक्सरसाइज को दोनों हाथों से एक-एक करके 50 बार दोहराएं। ऐसा करने से एकाग्रता बढ़ने के साथ मेमोरी बूस्ट होती है।

दूसरी एक्सरसाइज

अपने दोनों हाथों की उंगलियों को फैलाएं और दूसरे हाथ की उंगलियों में फंसा लें। इस दौरान आपकी दोनों हथेलियां एक दूसरे से जुड़ी हो। अब पहले अपने दाएं हाथ की उंगलियों को एक साथ उठाएं, फिर इस हाथ की उंगली को वापस बंद करें और दूसरे हाथ की उंगलियों को उठाएं। इस एक्सरसाइज को कम से कम 2 मिनट तक करें। ऐसा करने से तनाव कम होने के साथ एंजायटी भी कंट्रोल रहती है।

तीसरी एक्सरसाइज

दिमाग तेज करने के साथ डिसीजन मेकिंग को भी अच्छा बनाए रखने के लिए आप ये तीसरी फिंगर ऑपोजिशन एक्सरसाइज कर सकते हैं। इस एक्सरसाइज में आप एक-एक करके अपनी सभी उंगलियों से अपने अंगूठे को छूएं।

चौथी एक्सरसाइज

मस्तिष्क को शांत रखने के लिए इस चौथी एक्सरसाइज में %ज्ञान मुद्रा योग% जैसी तकनीक का अभ्यास करें। इस मुद्रा में दोनों हाथों की तर्जनी और अंगूठों का उपयोग किया जाता है।

पांचवीं एक्सरसाइज

गुस्से पर कंट्रोल और ओवरथिंकिंग की समस्या को कम करने के लिए आप ये पांचवीं एक्सरसाइज कर सकते हैं। इस एक्सरसाइज को करने के लिए सबसे पहले अपनी सभी उंगलियों को मिलाकर हथेली को सीधा रखें। इसके बाद उंगलियों को आधा मोड़ें, फिर उंगलियों को चोंक के आकार में बनाएं और इसके बाद मुट्ठी बना लें। इस फिंगर मूवमेंट को 2 मिनट तक करें।

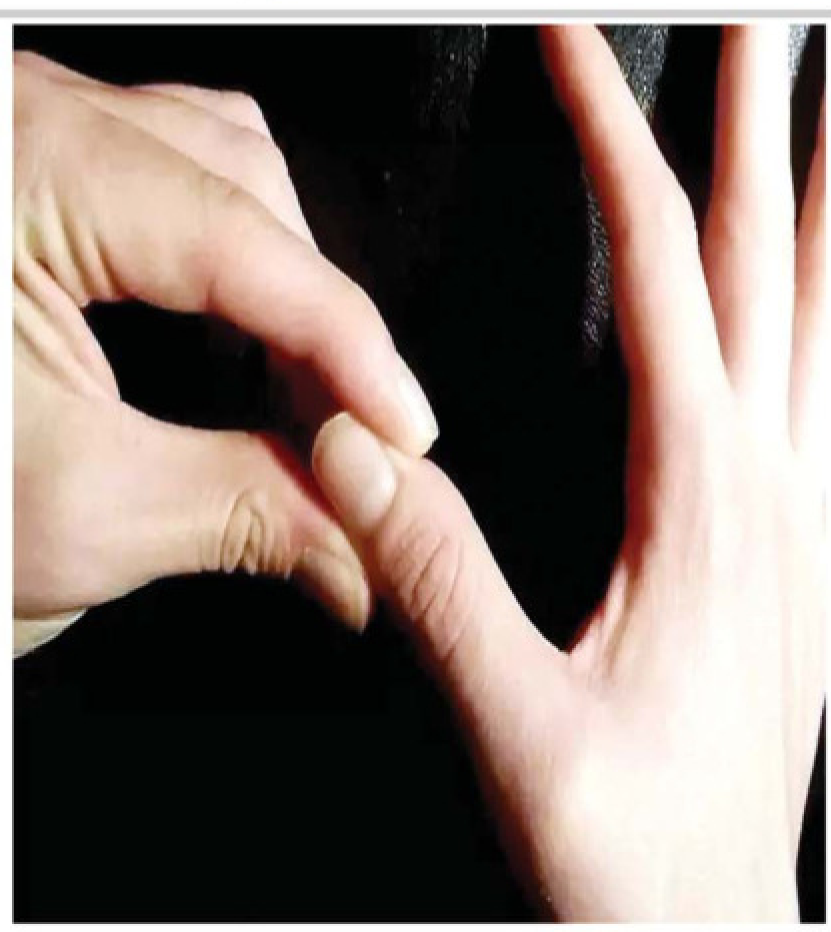

अंडर-19 विश्व कप: भारत ने श्रीलंका को हराया, सुपर सिक्स में जगह पक्की

कोलकाता (एजेंसी)। कुआलालंपुर – सलामी बल्लेबाज जी तृषा की 49 रन की पारी और तेज गेंदबाजों की नई गेंद से शानदार गेंदबाजी से भारत ने यहां श्रीलंका पर 60 रन की एकतरफा जीत के साथ ग्रुप ए में शीर्ष पर रहते हुए आईसीसी अंडर-19 टी20 महिला विश्व कप के सुपर सिक्स में प्रवेश किया।

बल्लेबाजी के लिए मुश्किल परिस्थितियों में त्रिशा ने 44 गेंदों की पारी में पांच चौके और एक छक्का लगाया जिससे भारत को नौ विकेट पर 118 रन का प्रतिस्पर्धी स्कोर खड़ा किया। मिथिला विनोद (10 गेंद में 16 रन) और वीजे जोशीथा (नौ गेंद में 14 रन) ने आखिरी ओवरों में तेजी से रन बनाए। इसके बाद तेज गेंदबाज जोशीथा (17 रन पर दो विकेट) और शबनम शकील (नौ रन पर दो विकेट) ने शुरुआती चार ओवर में दो-दो विकेट झटक कर श्रीलंका का स्कोर चार विकेट परनौ रन कर दिया।

अगले ओवर में कप्तान मनुडी नानायककारा के रन आउट होने से उसकी 12 रन तक आधी टीम पवेलियन पहुंच गई।श्रीलंका की टीम 20 ओवर में नौ विकेट पर 58 रन ही बना सकी। भारत ने ग्रुप चरण के अपने अभियान को तीन मैचों में तीन जीत के साथ खत्म किया। श्रीलंका के लिए रश्मिका सेवांडी (12 गेंद में 15 रन) ही दोहरे अंक में रन बना सकी।

वह अच्छी लय में दिख रही थी लेकिन जरूरी रन रेट को कम करने के लिए पारुणिका सिसोदिया (सात रन पर दो विकेट) की गेंद पर बड़ा शॉट लगाने की कोशिश में मिथिला विनोद को कैच देकर आउट हो गई। आयुषी शुक्ला (13 रन पर एक विकेट) और मलेशिया के खिलाफ पांच रन पर पांच विकेट लेने वाली वैष्णवी शर्मा (चार ओवर में तीन रन पर एक विकेट) ने भी श्रीलंका के बल्लेबाजों को रन बनाने का मौका नहीं दिया।

लक्ष्य सेन का अंतरराष्ट्रीय सर्किट में संघर्ष जारी, इंडोनेशिया मास्टर्स से बाहर हुए

जकार्ता (एजेंसी)। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन का अंतरराष्ट्रीय सर्किट में संघर्ष जारी है और वह बृहस्पतिवार को यहां इंडोनेशिया मास्टर्स सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जापान के केंटा निशिमोटो से हारकर बाहर हो गए।

भारत के 10वीं रैंकिंग के खिलाड़ी लक्ष्य को निशिमोटो से 16-21 21-12 21-23 से पराजय मिली। इससे पहले ध्रुव कपिला और तनीषा क्रास्टो की मिश्रित युगल जोड़ी को भी दूसरे दौर में हार का मुंह देखना पड़ा। इस भारतीय जोड़ी को बढ़त बनाने के बावजूद मलेशिया के पांग रोन हू और सु यिन चेंग की जोड़ी से 21-18 15-21 19-21 से हार का सामना करना पड़ा।

एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता और राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सेन ने मैच में खराब शुरूआत की और पहला गेम गंवा बैठे। उन्होंने दूसरा गेम जीत कर अच्छी वापसी की लेकिन तीसरे और निर्णायक गेम में कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

भारत ने 7 विकेट से जीता पहला टी-20, अभिषेक शर्मा के धुआंधार 79 रन

कोलकाता (एजेंसी)। भारत ने इंग्लैंड को पहले टी-20 में 7 विकेट से हरा दिया। कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में भारत ने बॉलिंग चुनी।इंग्लिश टीम 132 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। भारत ने तेजी से बैटिंग की और 12.5 ओवर ही 3 विकेट के नुकसान पर टारगेट हासिल कर लिया। भारत से ओपनर अभिषेक शर्मा ने 34 गेंद पर 79 रन बनाए। उन्होंने पारी में 8 छक्के और 5 चौके लगाए। उन्हें आदिल रशीद ने लॉन्ग ऑफ पर हैरी ब्रूक के हाथों कैच कराया। अभिषेक शर्मा ने जैमी ओवर्टन के खिलाफ 9वें ओवर की पहली बॉल पर छक्का लगाया। इसी के साथ उन्होंने 20 गेंद पर अपनी फिफ्टी भी पूरी कर ली। अभिषेक ने अपने टी-20 करियर की दूसरी फिफ्टी लगाई। वे एक सेंचुरी भी लगा चुके हैं। बॉलिंग में वरुण चक्रवर्ती ने 3 विकेट लिए। इंग्लैंड से जोस बटलर ने 68 रन बनाए, जोफ्रा आर्चर को 2 विकेट मिले। भारत ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली, दूसरा मैच 25 जनवरी को चेन्नई में खेला जाएगा।

रणजी ट्रॉफी में विफल रहे रोहित, यशस्वी और शुभमन

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा, युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल रणजी ट्रॉफी के अपने पहले ही मैच में विफल रहे हैं। इनका प्रदर्शन कितना खराब था, इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि ये तीनों मिलकर 11 रन ही बना पाये। रोहित और यशस्वी जहां मुम्बई की ओर से खेल रहे हैं, वहीं शुभमन पंजाब के कप्तान हैं। हाल के ऑस्ट्रेलिया दौरे में भारतीय टीम की खराब बल्लेबाजी के कारण क्रिकेट बोर्ड ने सभी खिलाड़ियों के लिए रणजी में खेलना अनिवार्य कर दिया था। रोहित करीब एक दशक बाद आजिंक्य रहाणे की कप्तानी वाली मुंबई मुम्बई की ओर से रणजी मैच में जम्मू और कश्मीर के खिलाफ खेलने उतरे। मुम्बई की । पारी की शुरुआत करते हुए यशस्वी तीसरे ही ओवर में आउट हो गए। वह तेज गेंदबाज औकिब नबी डार का शिकार बने। यशस्वी 8 गेंदों पर एक चौके की सहायता से केवल 4 रन बना पाये। वहीं कप्तान रोहित भी 19 गेंदों पर 3 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। रोहित का विकेट उमर नजीर मीर ने लिया। इसके अलावा पंजाब की ओर से कर्नाटक के खिलाफ बल्लेबाजी करते हुए शुभमन भी 8 गेंदों में केवल 4 रन ही ना पाये, ये रन उन्हें चौके से मिले थे। गेंदबाज अभिलाश शेट्टी ने उन्हें आउट किया। रोहित इंग्लैंड के खिलाफ छह फरवरी से शुरू होने वाली तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज और उसके बाद चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम की कप्तानी करेंगे। ऐसे में उनके इस कमजोर प्रदर्शन से टीम प्रबंधन की चिन्ताएं बढ़ गयी हैं। रोहित के अलावा शुभमन और यशस्वी के भी असफल होने से भारतीय टीम की बल्लेबाजी की पोल खुल गयी है।

ऑटोग्राफ लेने वाला नहीं, ऑटोग्राफ देने वाला बनने की कोशिश करो : कपिल देव की स्कूली बच्चों को सलाह

गुरुग्राम ।भारत के पूर्व महान हरफनमौला कपिल देव ने बृहस्पतिवार को यहां एक निजी स्कूल में बच्चों के साथ बातचीत में उन्हें ऑटोग्राफ (हस्ताक्षर) मांगने वाले बनने से बचने और ऑटोग्राफ देने वाले बनने पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। भारत के 1983 विश्व कप विजेता कप्तान ने इस दौरान छात्रों के साथ मैदान पर समय भी बिताया।

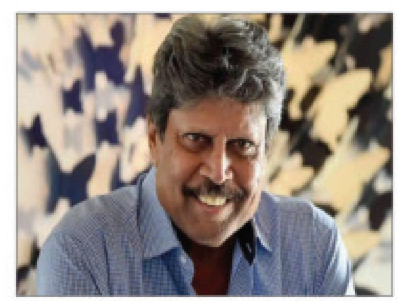

उन्होंने बल्लेबाजी में हाथ आजमाते हुए अपने अंदाज में स्क्वायर कट भी लगाए ।इस 66 साल के पूर्व दिग्गज ने छात्रों को दिए अपने संदेश में कहा, 'छात्रों के व्यक्तित्व के विकास के लिए खेल एक जरूरी साधन है लेकिन उसे पढ़ाई की कीमत पर तवज्जो नहीं मिलनी चाहिए।' उन्होंने कहा, 'आपको कभी मेरा ऑटोग्राफ नहीं मांगना चाहिए बल्कि खुद को इतना अच्छा बनाना चाहिए कि एक दिन आप खुद उस पर हस्ताक्षर कर सकें।' कपिल की इस बात पर छात्रों ने खूब तालियां बजाई। कपिल ने पत्रकारों को बताया कि वह उत्साही छात्रों से आश्चर्यचकित थे। उन्होंने कहा, 'मैं बेहद उत्साहित और खुश हूं कि मैं छोटे बच्चों और उभरते खिलाड़ियों के साथ अच्छा समय बिता सका। मुझे यह अवसर देने के लिए मैं स्कूल प्राधिकरण को धन्यवाद देता हूं।'

चैम्पियंस ट्रॉफी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तैयार हैं सभी खिलाड़ी : हार्दिक पंड्या

दुबई ।भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी को लेकर उत्साहित हैं।हार्दिक ने अन्य क्रिकेटरों मोहम्मद नबी, फिल साल्ट, शादाब खान और शाहीन शाह अफरीदी के साथ टूर्नामेंट के एक प्रमोशनल एड में कहा कि खिलाड़ी इसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने तैयार हैं।हार्दिक ने कहा कि भारतीय टीम इस टर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन कर जीत दर्ज करने उतरेगी। चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन अगले माह पाकिस्तान में किया जाएगा हालांकि भारतयी टीम अपने मुकाबले हाइब्रिड मॉडल के तहत ही दुबई में खेलेगी।भारतीय टीम ने साल 2013 में इंग्लैंड में आयोजित इस टूर्नामेंट को जीता था जबकि 2002 में वह मेजबान श्रीलंका के साथ संयुक्त विजेता रही थी।हार्दिक ने कहा कि आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी की वापसी से क्रिकेट को काफी बढ़ावा मिलेगा। यह एकदिवसीय प्रारूप को और प्रासंगिक बनाता है। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट से प्रशंसकों और खिलाड़ियों में खेल को लेकर उत्साह आता है। उन्होंने आईसीसी के एक वीडियो में कहा कि इसमें भारतीय टीम क्रिकेट के अपने विशिष्ट कौशल का प्रदर्शन करने के लिए तैयार है।इसके साथ ही अपने प्रदर्शन से हर खिलाड़ी ट्रॉफी को फिर से घर लाने के लिए प्रतिबद्ध है।इस टूर्नामेंट का शुरुआती मैच पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच 19 फरवरी को कराची में होगा। वहीं भारतीय टीम 20 फरवरी को दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ अपना पहला मैच खेलेगी। यह वीडियो चैम्पियंस ट्रॉफी और 'सफेद जैकेट हासिल करने के लिए सब कुछ दांव पर लगाने वाले खिलाड़ियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दिखाता है।

रणजी ट्रॉफी : जडेजा ने दिल्ली के खिलाफ पांच विकेट लिए

नई दिल्ली ।आज से यहां शुरु हुए रणजी ट्रॉफी सत्र में सौराष्ट्र की ओर से खेलते हुए ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने पहली पारी में घातक गेंदबाजी करते हुए दिल्ली के खिलाफ पांच विकेट लिए ।जडेजा की बेहतरीन गेंदबाजी से ही सौराष्ट्र ने दिल्ली को पहली पारी में 188 रन पर समेट दिया।दिल्ली की ओर से कप्तान आयुष बदोनी ने अर्धशतक लगाया। वहीं सौराष्ट्र की ओर से जडेजा ने फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 35वीं बार 5 विकेट ।जडेजा ने 17.4 ओवर में 66 रन देकर 5 विकेट लिए। उन्होंने सनत सांगवान, यश ढुल, आयुष बदोनी, हर्ष त्यागी और नवदीप सैनी के विकेट लिए। इस मैच में दिल्ली की टीम पहले बल्लेबाज करने मैदान पर उतरी। दिल्ली की ओर से कप्तान ऋषभ पंत भी रन बनाने में असफल रहे। ऋषभ 10 गेंद में एक ही रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। पहले दिन के खेल में जडेजा की गेंदबाजी के सामने दिल्ली के बल्लेबाज विफल रहे। पांच विकेटों के साथ ही जडेजा के अब फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 547 विकेट हो गए हैं। उनके अब 547 विकेट हो गये हैं और वह 550 के विकेट से केवल तीन विकेट दूर हैं।जडेजा ने अंतिम बार रणजी ट्रॉफी मुकाबला 2023 में तमिलनाडु के खिलाफ खेला था।

टाटा स्टील चेस: भारत के नंबर-1 शतरंज खिलाड़ी बने डी गुकेश, वर्ल्ड रैंकिंग में भी हुआ इजाफा

मुंबई (एजेंसी)। वर्ल्ड चैंपियन डी गुकेश का टाटा स्टील चेस टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन जारी है। उन्होंने पांचवें राउंड के मुकाबले में बुधवार को विजक आन जी को मात दी। इस जीत से गुकेश को डबल फायदा हुआ। इस दौरान वह न सिर्फ भारत के नंबर वन खिलाड़ी बने बल्कि उन्होंने वर्ल्ड रैंकिंग में भी चौथा स्थान हासिल किया। गुकेश वर्ल्ड चैंपियन बनने के बाद पहली बार कोई टूर्नामेंट खेल रहे हैं।

गुकेश ने पांचवें राउंड के मैच जर्मनी के विंसेंट केमार को मात दी जो कि कुछ महीने पहले तक उनकी ही टीम का हिस्सा थे। सिंगापुर में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में गुकेश का सामना चीन के डिंग लिरेन था। इस चैंपियनशिप की तैयारी के लिए गुकेश ने जो टीम तैयारी की थी उसमें विंसेंट भी शामिल थे। उन्होंने गुकेश को वर्ल्ड चैंपियन बनाने में काफी मदद की।

गुकेश ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में कोशिश की थी कि वह लिरेन के खिलाफ मैचों को लंबा खींचे। वह चाहते थे कि लिरेन थक जाएं। विंसेंट ने भी बुधवार को गुकेश के खिलाफ यही प्रयोग अपनाया। उन्होंने कोशिश की और मैच को लंबा खींचा। वह शुरू से ही मजबूत पॉजिशन में नहीं ते लेकिन वह मैच को खींचकर 72वें मूव तक ले गए। दोनों की बीच 6 घंटे लंबा मैच चला।

गुकेश को विंसेंट के बाद अपने एक और साथी का सामना करना है। पेंटाला हरिकृष्णा भी गुकेश की वर्ल्ड चैंपियनशिप टीम का हिस्सा थे। गुकेश सातवें राउंड में उनका सामना करने उतरेंगे। गुकेश के लिए हालांकि, ये कोई मुश्किल की स्थिति नहीं है। वह अपने विपक्षी को लेकर एक खिलाड़ी के तौर पर देखते हैं। उन्होंने टूर्नामेंट से पहले कहा था कि विंसेंट और हरिकृष्णा का सामना करना उनके लिए खास होगा। गुकेश ने कहा कि, एक बार जब मैं बोर्ड पर पहुंच जाता हूं तो आमतौर पर मुझे प्रतिद्वंद्वी की परवाह नहीं होती, चाहे वह एक अच्छा दोस्त हो या कोई और। ये हमेशा की तरह व्यवसाय होगा। पिछले साल के दौरान हमारे बीच एक मजबूत रिश्ता बना। मुझे खुशी है कि वे इस टूर्नामेंट में खेल रहे हैं।

दिव्यांग क्रिकेटर से मिले बटलर , बल्ले पर ऑटोग्राफ दिया

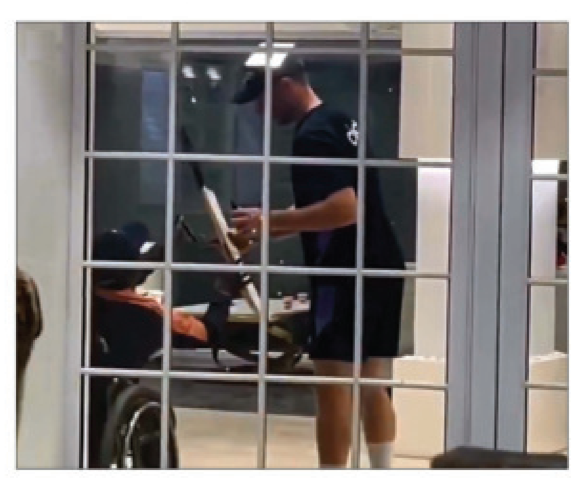

कोलकाता ।इंग्लैंड की टी20 क्रिकेट टीम के कप्तान जोस बटलर को लेकर एक विडियो सोशल मीडिया पर आया है। इसमें बटलर भारतीय क्रिकेट टीम से हुए टी20 मुकाबले से पहले एक दिव्यांग प्रशंसक से मिलते और उसके ऑटोग्राफ देते नजर आ रहे हैं। बटलर ने व्हीलचेयर पर रहने वाले इस प्रशंसक और दिव्यांग क्रिकेटर धर्मवीर पाल से बात कर उसके बल्ले पर हस्ताक्षर किए।इसके लिए लोगों ने इंग्लैंड के कप्तान की जमकर प्रशंसा की है। सोशल मीडिया पर वायरल इस वीडियो में दिखता है कि बटलर धर्मवीर के पा जाकर उससे बात करते देखते हैं। वीडियो की शुरूआत बटलर के रूम में जाने से पहले धर्मवीर की ओर मुड़ने से होती है। बटलर ने उनसे बात कर ऑटोग्राफ दिया। इससे धर्मवीर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।धर्मवीर ने अपनी हिम्मत और पदर्शन के आधार पर दिव्यांग के तौर पर भारतीय टीम में जगह बनाकर अपनी पहचान बनायी है।

भारत में स्पिन खेलना बड़ी चुनौती, इससे निपटने का तरीका ढूंढना होगा : हार के बाद बोले बटलर

कोलकाता(एजेंसी)। इंग्लैंड के कप्तान जोस बटलर ने यहां पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में भारत के खिलाफ सात विकेट से मिली करारी हार के बाद कहा कि भारतीय परिस्थितियों में स्पिनरों को खेलना चुनौती बनी रहेगी और उनके बल्लेबाजों को पांच मैच की श्रृंखला में वापसी करने के लिए इससे निपटने का तरीका ढूंढना होगा।

इंग्लैंड की टीम बुधवार को यहां पहले बल्लेबाजी करते हुए वरुण चक्रवर्ती, अक्षर पटेल और रवि बिश्नोई की स्पिन तिकड़ी के सामने 132 रन आउट हो गई। भारत ने केवल 12.5 ओवर में लक्ष्य हासिल करके श्रृंखला में शुरुआती बढ़त बनाई। बटलर ने यहां ईडन गार्डन्स में मैच के बाद कहा, 'हम उस तरह का खेल नहीं खेल पाए जैसा कि खेलना चाहते थे। उन्होंने अच्छी गेंदबाजी की।'

उन्होंने कहा, 'हमारे कुछ बल्लेबाज पहली बार उनके कुछ गेंदबाजों का सामना कर रहे थे। उनके प्रदर्शन पर गौर करना अच्छा होगा। हर कोई अच्छा खेलना चाहता है और उन पर दबाव बनाना चाहता है। हम बड़ा स्कोर बनाना चाहते हैं जिसका हम बचाव कर सकें।'

इंग्लैंड के कप्तान ने स्वीकार किया कि स्पिन भारत में लगातार चुनौती बनी रहेगी और उन्होंने अपनी टीम से इससे निपटने के लिए व्यक्तिगत रणनीति तैयार करने का अनुरोध किया। बटलर ने कहा, 'हमारे पास वास्तव में अच्छे खिलाड़ी हैं और हम जानते हैं कि भारत के खिलाफ उन्हें स्पिन का काफी सामना करना पड़ेगा। हमारा मानना है कि हमें प्रत्येक मैच में कम से कम तीन स्पिनर का सामना करना पड़ेगा। हमें उन पर दबाव बनाने के लिए अपनी व्यक्तिगत रणनीति के साथ खेलना होगा।'

हार के बावजूद बटलर ने कहा कि इंग्लैंड क्रिकेट के अपने आक्रामक ब्रांड से नहीं हटेगा जो 2015 से उनकी पहचान रही है। उन्होंने कहा, 'टी20 क्रिकेट में हम हमेशा आक्रामक खेल खेलने का प्रयास करते हैं। ईमानदारी से कहूं तो मुझे लगता है कि 2015 के बाद से हमारा सीमित ओवरों की क्रिकेट में खेलने का यही तरीका रहा है और हम वास्तव में कभी इससे पीछे नहीं हटे हैं।'

चैम्पियंस ट्रॉफी विश्व क्रिकेट में सबसे अहम टूर्नामेंट : वाटसन

सिडनी ।पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर शेन वाटसन ने कहा है चैम्पियंस इस टूर्नामेंट से विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को फार्म हासिल करने का अवसर मिल जाएगा। भारतीय टीम चैम्पियंस ट्रॉफी के अपने मुकाबले दुबई में खेलेगी।वाटसन ने कहा कि चैम्पियंस ट्रॉफी दो एकदिवसीय विश्व कप के बीच चार साल के अंतर को को कम करने का अच्छा रास्ता है।उन्होंने कहा, 'चैम्पियंस ट्रॉफी विश्व क्रिकेट में सबसे अहम टूर्नामेंट है क्योंकि एकदिवसीय विश्व कप चार साल में एक बार होता है। यह उस इंतजार को कम करता है और इससे इससे टेस्ट क्रिकेट और टी20 के बीच संतुलन बनता है। । एकदिवसीय क्रिकेट को इस तरह के टूर्नामेंट से ऊर्जा मिलती रहती है क्योंकि यह काफी अच्छा प्रारूप है।वाटसन ने कहा, 'हम टी20 के बाद भी एकदिवसीय क्रिकेट को बनाये रखना चाहते है, इसलिए चैम्पियंस ट्रॉफी अहम है।इसमें सिर्फ 8 टीमें खेलती है और हर गेंद महत्वपूर्ण होती है।इसमें आपको लगातार अच्छा खेलना होता है वरना बाहर होने का खतरा बना रहता है। भारतीय टीम ने साल 2013 चैम्पियंस ट्रॉफी जीती थी पर उस समय विराट कोहली और रोहित शर्मा अच्छे फार्म में थे। अभी होनो ही खराब दौर से गुजर रहे हैं।वाटसन ने कहा कि यह चिंता की बात नहीं है। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि खराब दौर विराट और रोहित के प्रभाव पर कोई असर डालेगा। दुबई में हालात अलग होंगे और एकदिवसीय में वे खुलकर खेल सकेंगे।कोहली वैसे भी एकदिवसीय में अन्य प्रारुपों से बेहतर खेलते हैं। ।वाटसन ने कहा, 'चैम्पियंस ट्रॉफी में रोहित के सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में होने की संभावना है।

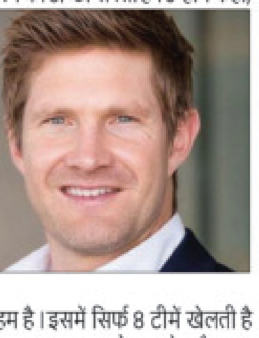

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दौरान सुरक्षा के इंतजाम, 15000 जवानों की होगी तैनाती, सड़कों पर होगी आर्मी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने 19 फरवरी से पाकिस्तान में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी का आगाज होना है। सुरक्षा के कारण टीम इंडिया इस टूर्नामेंट को हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगी। जबकि अन्य 7 टीमें अपने सभी मैच पाकिस्तान में ही खेलेगी। वहीं अब इस टूर्नामेंट में सुरक्षा तैयारियों को लेकर कई खबरें सामने आ रही हैं। पिछले दिनों पाकिस्तान इस टूर्नामेंट की तैयारियां पूरी ना होने के कारण आलोचनाओं में घिरा रहा है। ऐसी कई तस्वीरें और वीडियो सामने आती रही हैं जिनमें कराची, लाहौर और रावलपिंडी के मैदानों में दर्शकों के बैठने की व्यवस्था तक दुरुस्त नहीं हुई है। वहीं अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड सुरक्षा व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने में जुटा हुआ है।

वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार कहा जा रहा है कि, पाकिस्तान इस टूर्नामें के लिए सुरक्षा के लिए 15 हजार सुरक्षा कर्मियों को तैनात करने वाला है। एक पाकिस्तानी चैनल के मुताबिक पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पुलिस ने लाहौर और रावलपिंडी मैदानों की सुरक्षा के लिए 12,564 पुलिस कर्मियों की तैनाती का प्लान बनाया है। लाहौर में कुल 7,618 और रावलपिंडी में 4,535 पुलिस कर्मियों को तैनात किया जाएगा। इसके अलावा स्पेशल ब्रांच के 411 अधिकारी सारे सिक्योरिटी ऑपरेशन संभालेंगे। सुरक्षा व्यवस्था केवल मैदानी इलाकों के लिए नहीं बल्कि आसमान में भी आर्मी सुरक्षा व्यवस्था का खास ख्याल रखेगी। पुलिस कर्मी होटल से लेकर मैदान के रास्तों पर कैमरा फिट कर रही है। हर तरह से खिलाड़ियों की सुरक्षा का इंतजाम किया जा रहा है।

बता दें कि, पाकिस्तान 29 साल बाद किसी आईसीसी टूर्नामेंट की मेजबानी करने जा रहा है। साल 2009 में श्रीलंकाई टीम पर हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान पर सुरक्षा कारणों से लगातार सवाल उठते रहे हैं। लाहौर और रावलपिंडी के लिए सुरक्षा कर्मियों की संख्या सामने आ चुकी है लेकिन कराची को लेकर अभी तक अपडेट सामने नहीं आया है। बता दें कि, इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद भारतीय क्रिकेट टीम चैंपियंस ट्रॉफी खेलने पाकिस्तान नहीं आएगी। बीसीसीआई ने हाइब्रिड मॉडल की मांग की थी, जिसके तहत टीम इंडिया के सारे मैच दुबई में खेले जाएंगे।

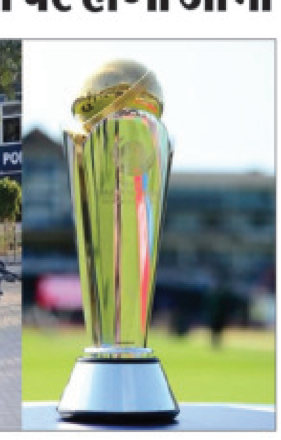

महाकुंभ ने तोड़े सारे रिकॉर्ड, संगम में डुबकी लगाने वालों का आंकड़ा 10 करोड़ के पार

महाकुम्भ नगर (एजेंसी)। महाकुंभ के अवसर पर मोक्ष की अभिलाषा के साथ देश दुनिया के विभिन्न अंचलों से आकर तीर्थराज प्रयागराज में त्रिवेणी में पवित्र डुबकी लगाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या गुरुवार दोपहर तक दस करोड़ के आंकड़े को पार कर चुकी थी। मां गंगा, मां यमुना और अदृश्य मां सरस्वती के पवित्र संगम में श्रद्धा और आस्था से ओत-प्रोत साधु-संतो, श्रद्धालुओं, कल्पवासियों, स्नानार्थियों और गृहस्थों के स्नान का यह नया रिकॉर्ड है। महाकुम्भ में प्रतिदिन लाखों की संख्या श्रद्धालु पुण्य स्नान का फल प्राप्त कर रहे हैं।

सरकार पहले ही 45 दिन तक चलने वाले महापर्व के दौरान 45 करोड़ श्रद्धालुओं के यहां आने का अनुमान व्यक्त कर चुकी है जिसमें अकेले मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर ही दस करोड़ श्रद्धालुओं के प्रयागराज आगमन के आसार हैं। गंगा की रेती पर हजारों कदम चलने

के बाद त्रिवेणी के पावन जल में डुबकी लगाने वालों के जोश और उत्साह में कोई कमी नहीं दिख रही है। गुरुवार दोपहर 12 बजे तक 30 लाख लोगों ने त्रिवेणी संगम में स्नान कर लिया। इसमें 10 लाख कल्पवासियों के साथ-साथ देश विदेश से आए श्रद्धालु एवं साधु-संत शामिल रहे। इसके साथ ही महाकुम्भ में 10 करोड़ स्नानार्थियों की संख्या भी पार कर गई। पूरे महाकुम्भ मेला क्षेत्र में भक्तों का तांता लगा रहा। देश के विभिन्न प्रान्तो और विश्व के अनेक देशों से आए श्रद्धालुओं ने पवित्र संगम में स्नान किया।

संगम के तटों पर इस समय पूरे देश की विविध संस्कृतियों की झलक देखने को मिल रही है। ऊंच नीच, जात पात, पंथ से ऊपर उठकर लोग संगम स्नान कर एकता के महाकुम्भ के संकल्प को साकार कर रहे हैं। अब तक के कुल स्नानार्थियों की संख्या का विश्लेषण करें तो 23 जनवरी तक 10 करोड़ से ज्यादा लोग संगम में आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। सर्वाधिक 3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने मकर संक्रांति के अवसर पर अमृत स्नान किया था, जबकि पौष पूर्णिमा के स्नान पर्व पर 1.7 करोड़ से ज्यादा लोगों ने पावन डुबकी लगाई थी। इसके अलावा प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु पुण्य स्नान कर रहे हैं।

सोनू-मोनू का पिता वकील नहीं डाकू है, घटना के दिन पिस्टल लिए था

-बिहार में हुई फायरिंग के बाद छोटे सरकार ने लगाए गंभीर आरोप

पटना। छोटे सरकार के नाम से चर्चित पूर्व विधायक अनंत सिंह ने गैंगवार के मामले में गुरुवार को सोनू-मोनू के पिता पर गंभीर आरोप लगाए हैं। अनंत सिंह ने कहा कि सोनू-मोनू का पिता वकील नहीं डाकू है। सिर्फ अपने बेटों का केस लड़ता है। वह भी अपराधी है। घटना के दिन वह भी पिस्टल लिए हुए था।

पूर्व विधायक अनंत से पूछा कि सोनू-मोनू के माता-पिता आरोप लगा रहे हैं कि आपने उन लोगों पर फायरिंग की है। इस पर अनंत सिंह ने कहा हम कहां कह रहे हैं कि हम पर आरोप मत लगाओ। हमको यह नही सुनना है। आप लोग सुनते रहिए कि क्या आरोप लगा रहा है। हमको फंसाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन हमको कोई दिक्कत नहीं है।

अनंत सिंह ने कहा कि कोई भी हम जुल्म करेंगे तो जेल जाएंगे ही। सोनू-मोनू से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। वह लोग चोर है। हम उन लोगों को नहीं जानते हैं। अनंत पर एफआईआर दर्ज होने की बात पर उन्होंने कहा कि एफआईआर दर्ज होगी तो होगी। मेरे जिन लोगों को गोली लगी है पुलिस उनके पास जाएगी तो वह लोग भी एफआईआर कराएंगे। अनंत सिंह ने घटना को लेकर कहा कि मोकामा मेरा क्षेत्र है। हम वहां से विधायक रहे हैं। मेरी पत्नी विधायक है।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल प्लाजा से अवैध वसूली का बड़ा रैकेट सामने आया

मिर्जापुर। नारायणपुर से हनुमना राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित अतरैला शिवगुलाम टोल प्लाजा से अवैध वसूली का बड़ा रैकेट सामने आया है। सालों से यहां लगातार अवैध वसूली की शिकायत आती रही है। लेकिन ठोस कार्रवाई के अभाव में टोल संचालक की रजामंदी पर मनमाने ढंग से वाहनों चालक के साथ वसूली का प्रकरण सामने आते रहे हैं। कई-कई बार दक्षिण भारत से आने वाले बड़े वाहनों को रोका गया। वाहनों को पास कराने के नाम पर उनका शोषण हुआ। इसकी शिकायत भी संबंधित से की गई लेकिन कार्रवाई के अभाव में टोल प्लाजा पर कभी कार्रवाई नहीं की गई। लेकिन अब लखनऊ एसटीएफ की कड़ी कार्रवाई के बाद पूरा मामला खुल गया। दरअसल, राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल प्लाजा का संचालन 2021 से प्रारंभ हुआ। मात्र तीन चार सालों में कई कंपनियां बदल गई। हालात ये है कि सभी ने अपने आपको टोल पर घाटा होना बताया। टोल वसूलने वाली पूर्व की एक कंपनी के अधिकारी ने बताया कि टोल की वसूली क्षमता प्रतिदिन की 20 लाख के पार की है। जो वर्तमान में इसमें और भी वृद्धि हुई होगी। टोल कंपनी घाटा बताकर मुनाफा कमाने का खेल करती हैं। बहरहाल, कार्रवाई से यह तय हो गया कि टोल पर किस प्रकार से वाहनों से अवैध वसूली का खेल हो रहा है। अतरैला में 2021 से शुरू हुए टोल प्लाजा के बाद अब तक कई कंपनियां टोल वसूली का कार्य कर चुकी है।

राजौरी में मौत पर केंद्रीय मंत्री का बयान, प्रारंभिक जांच में अज्ञात विषाक्त पदार्थों का सेवन बीमारी का कारण

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के राजौरी में 17 लोगों की मौत के बाद हड़कंप मचा हुआ है। सावधानी बरतते हुए जम्मू-कश्मीर सरकार ने राजौरी संभाग के सुदूर बधाल गांव को कंटेनमेंट जोन घोषित किया है। पूरे गांव की कड़ी निगरानी की जा रही है। अब तक माना जा रहा था कि इतने लोगों की जान जाने की वजह कोई रहस्यमयी बीमारी है। लेकिन अब केंद्रीय मंत्री ने इस दावे को लेकर एक बड़ी जानकारी दी है। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने राजौरी में पिछले एक माह में 17 लोगों की जान जाने की वजह रहस्यमयी बीमारी नहीं है। प्रारंभिक जांच में अज्ञात विषाक्त पदार्थों के कारण बीमारी के होने की संभावना जाहिर की गई है। शुरुआती जांच में जहरीला पदार्थ होने की बात सामने आई है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि लखनऊ की सीएसआईआर लैब की प्रारंभिक जांच के मुताबिक यह बीमारी कोई संक्रमण, वायरल या बैक्टीरियल प्रकृति की नहीं है। जहरीला पदार्थ पाया गया है। अब यह पता लगाने की कोशिश हो रही है कि यह किस तरह का जहरीला पदार्थ है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि अगर कोई साजिश मिलती है, तब उचित कार्रवाई भी की जाएगी।

पूर्व सैनिक ने पत्नी की हत्या कर शव के टुकड़े किए और प्रेशर कुकर में उबाला

हैदराबाद। एक निर्दयी पति ने अपनी पत्नी की बेरहमी से हत्या कर दी। आरोपी ने पहले शव के टुकड़े किए फिर प्रेशर कुकर में डालकर उबाल दिया। फिर एक बैग में भरकर झील में फेंक आया। बची हुई हड्डियों को पीसकर उन्हें भी ठिकाने लगा दिया। हिरासत में लिए गए व्यक्ति का कहना है कि उसने शरीर के टुकड़ों को उबालने के बाद उन्हें झील में फेंक दिया। आपको बता दें कि महिला के लापता होने की सूचना करीब एक सप्ताह पहले मिली थी और उसके माता-पिता ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी जिस व्यक्ति पर हत्या के आरोप लगे हैं वह सेना से रिटायर है। वर्तमान में सुरक्षा गार्ड के रूप में कार्यरत है। पुलिस ने बताया कि व्यक्ति पर अपनी पत्नी के साथ झगड़े के बाद अपराध को अंजाम देने का संदेह है और जांच के दौरान पूरी जानकारी सामने आएगी। बता दें कि 35 साल की पुट्टवेंकट माधवी के लापता होने की सूचना 18 जनवरी को मिली थी। उसके परिवार ने उसके पति गुरुमूर्ति से उसके बारे में पूछताछ की थी। माधवी के माता-पिता ने मीरपेट पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई थी। उसने दावा किया कि कुछ दिन पहले एक रिश्तेदार के घर जाने को लेकर उसके साथ हुई बहस के बाद वह गुस्से में घर से चली गई थी। गुरुमूर्ति को पूछताछ के लिए मीरपेट पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहां उसने कथित तौर पर गुस्से में हत्या की बात कबूल की। ? पुलिस सूत्रों ने बताया कि सबूत मिटाने के लिए उसने अपने बाथरूम में उसके शरीर के टुकड़े किए। इसके बाद चूल्हे पर कुकर में टुकड़ों को उबाला। इसके बाद हड्डियों को अलग किया। इसके बाद मूसल से उन्हें पीसकर फिर से उबाला। तीन दिनों तक मांस और हड्डियों को पकाने के बाद उसने उन्हें एक बैग में पैक किया और उसे पास की एक झील में फेंक दिया।

मणिपुर की भाजपा को जारी रहेगा जदयू का समर्थन, अपने प्रदेश अध्यक्ष को हटाया

नई दिल्ली। जनता दल (यूनाइटेड) की मणिपुर इकाई के अपने प्रदेश अध्यक्ष को हटा दिया है। मणिपुर में एन बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी सरकार से अपना समर्थन वापस लेने के कुछ ही समय बाद, जदयू ने राज्य में भाजपा से नाता तोड़ने का निर्णय लेने से पहले केंद्रीय नेतृत्व से परामर्श नहीं करने के लिए मणिपुर इकाई के अध्यक्ष को उनके पद से हटा दिया। जदयू (यू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने मणिपुर में भाजपा के साथ संबंध तोड़ने के पार्टी के फैसले की खबर को भ्रामक और निराधार बताया। राजीव रंजन प्रसाद ने कहा कि यह खबर भ्रामक और निराधार है। पार्टी ने इसका संज्ञान लिया है और पार्टी की मणिपुर इकाई के अध्यक्ष को उनके पद से मुक्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि हमने एनडीए को समर्थन दिया है और मणिपुर में एनडीए सरकार को हमारा समर्थन भविष्य में भी जारी रहेगा। मणिपुर इकाई ने केंद्रीय नेतृत्व से कोई संवाद नहीं किया, उन्हें विश्वास में नहीं लिया गया। उन्होंने (मणिपुर जेडीयू प्रमुख) खुद ही पत्र लिखा था। इसे अनुशासनहीनता माना गया है और इसके खिलाफ कार्रवाई की गई और उन्हें पद से मुक्त कर दिया गया। पार्टी प्रवक्ता ने साफ तौर पर कहा कि हम एनडीए के साथ हैं और राज्य इकाई राज्य के विकास के लिए मणिपुर के लोगों की सेवा करना जारी रखेगी। बता दें कि साल 2022 विधानसभा चुनाव में जेडीयू ने राज्य की छह सीटें जीतीं।

खराब स्वास्थ्य के चलते राहुल गांधी की मुस्तफाबाद की रैली भी हुई रद्द

*** कांग्रेस ने आप को 'अल्कोहल अफेक्टेड पार्टी बताया**

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और रायबरेली से सांसद राहुल गांधी गुरुवार को भी दिल्ली में चुनाव प्रचार नहीं कर सके। उनकी मुस्तफाबाद की रैली भी रद्द हुई है। कांग्रेस पार्टी ने कहा कि तबीयत खराब होने की वजह से राहुल गांधी चुनाव प्रचार करने नहीं आ सके। बता दें कि बुधवार को राहुल गांधी को सदर बाजार में जनसभा को संबोधित करना था, लेकिन राहुल गांधी यहां भी नहीं पहुंचे। खराब स्वास्थ्य के चलते राहुल की नई दिल्ली सीट पर प्रस्तावित कार्यक्रम भी रद्द करना पड़ा। वे 21 जनवरी को कर्नाटक के बेलगावी में कांग्रेस की जय बापू, जय भीम, जय संविधान रैली में भी शामिल नहीं हुए थे। हालांकि, सूत्रों का कहना है कि राहुल आने वाले दिनों में दिल्ली में कई जनसभाएं कर सकते हैं। वे रोड शो और पदयात्रा में भी शामिल हो सकते हैं।

कांग्रेस ने पूर्ववर्ती अरविंद केजरीवाल सरकार की शराब नीति में कथित भ्रष्टाचार को लेकर गुरुवार को आम आदमी पार्टी (आप) पर निशाना साधकर आरोप लगाया कि 'आप' का मतलब 'अल्कोहल अफेक्टेड पार्टी आप) है तथा 'शराब से पैसा बनाने की उसकी लत' ने दिल्ली को पूरी तरह बर्बाद कर दिया। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा कि एक ऑडियो भी जारी किया जो कथित तौर पर आप विधायक शरद चौहान का है। कांग्रेस द्वारा जारी ऑडियो में दावा किया गया कि उपमुख्यमंत्री रहते आप नेता मनीष सिसोदिया ने शराब नीति को मंजूरी देने के साथ कहा था कि उनकी पार्टी को चुनाव लड़ने के लिए इससे पैसा आएगा। कांग्रेस नेता द्वारा जारी ऑडियो की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है।

वहीं आप की तरफ से फिलहाल इन आरोपों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। खेड़ा ने कहा, 'शराब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और शराब की लत इंसान, उसके परिवार और समाज को बर्बाद कर देती है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन शराब से पैसा बनाने की लत से न सिर्फ इंसान और समाज बल्कि पूरा शहर खराब हो जाता है। उन्होंने आरोप लगाया, 'अल्कोहल अफेक्टेड पार्टी यानी आप ने शराब के जरिए पैसा बनाने की लत में पूरी दिल्ली को बर्बाद करके रख दिया।'

कई राज्यों में हिंदू नामों के लिबास में खुद को छिपाकर रह रहे अवैध बांग्लादेशी

*** पिछले कुछ दिनों में कई बांग्लादेशी घुसपैठिया को पकड़ा गया**

*** बंगाल और असम में सबसे ज्यादा संख्या**

मुंबई (एजेंसी)। फिल्म अभिनेता सैफ अली खान पर हमला करने वाला आरोपी शरीफुल इस्लाम शहजाद बांग्लादेशी घुसपैठिया निकला, जो बिजॉय दास नाम से मुंबई में रह रहा था। मुंबई में एक बांग्लादेशी महिला कुलसुम शेख को भी मुंबई पुलिस ने पकड़ लिया है। वह 2016 से मोहिनी के नाम से शहर में रह रही थी। इसतरह से कई बांग्लादेशी बेंगलुरु, दिल्ली, यूपी, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, असम, कर्नाटक और देश के कई राज्यों से पकड़े जा चुके हैं, जिन्होंने भारत में हिंदू नामों के लिबास में खुद को छिपाया हुआ है। दिल्ली में आए दिन बांग्लादेशियों के पकड़े जाते हैं। देश के कई हिस्से हैं, जहां अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण इलाके की डेमोग्राफी बदल गई है। पिछले दिनों पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने भी बीएसएफ पर घुसपैठ कराने के सनसनीखेज आरोप लगाए थे।

रिपोर्टस के मुताबिक, कश्मीर से कन्याकुमारी के बीच देश के करीब 17 राज्यों में करीब दो करोड़ बांग्लादेशी अवैध रूप से निवास कर रहे हैं। इस बारे में पहला आधिकारिक आंकड़ा संसद में 2007 में आया था। तब तत्कालीन गृह राज्य मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने बताया था कि भारत में 1.2 करोड़ अवैध बांग्लादेशी हैं। हालांकि बाद में उन्होंने आंकड़े के स्रोतों को गलत बताकर अपना बयान वापस ले लिया था। फिर दूसरी बार इस पर सीबीआई के पूर्व

डायरेक्टर जोगिंदर सिंह ने 2014 में एक आंकड़ा रखा। तब उन्होंने अनुमान लगाया था कि देश में करीब पांच करोड़ अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं। हालांकि इस आंकड़े की कभी पुष्टि नहीं हुई। मगर हर शहर में बनी अधिकतर अवैध झुग्गियों का कनेक्शन इन बांग्लादेशियों से रहा है।

रिपोर्टस के अनुसार, पश्चिम बंगाल में 57 लाख और असम में 50 लाख से अधिक बांग्लादेशी हैं। असम के 33 जिलों में से 9 बारपेटा, धुबरी, दरांग, नौगांव, करीमगंज, दारंग, मोरीगांव, बोंगाईगांव, धुबरी, गोलपारा और लाकांडी में मुस्लिम आबादी 50 से 80 प्रतिशत तक पहुंच गई है। बीजेपी सहित कई संगठनों का दावा है कि राज्य में 45 विधानसभा सीट पूरी तरह से मुस्लिम वोटरों के कब्जे में है, इसमें अधिकतर बांग्लादेश से पलायन कर असम पहुंचे हैं। असम के नलबाड़ी, कछार और कामरूप में भी धार्मिक जनसंख्या में बदलाव हुआ है। पिछले चार दशकों में बिहार के सीमांचल के चार जिले किशनगंज, अररिया, कटिहार और पूर्णिया में मुस्लिम आबादी बहुत तेजी से बढ़ी है। किशनगंज में मुस्लिम आबादी 67.58 प्रतिशत और हिंदू आबादी 31.43 प्रतिशत है। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ने रिपोर्ट में दावा किया है कि झारखंड के संथाल परगना क्षेत्र में बांग्लादेशी घुसपैठ हो रही है और इस कारण से क्षेत्र की जनसांख्यिकी में काफी बदलाव आया है। विधानसभा चुनावों में इस पर खूब होहल्ला मचा था।

सूत्रों के अनुसार, त्रिपुरा, असम और बंगाल में बिचौलियों की भरमार है, जो बांग्लादेशियों को भारत में अवैध तरीके से बसाने और उनके लिए फर्जी कागजात बनाते हैं। इसके अलावा बंगाल से बांग्लादेश से लगने वाले 2272 किलोमीटर लंबे बॉर्डर में कई लूप होल हैं। पश्चिम बंगाल का मालदा, दिनेशपुर, छपली नवबादगंज, मुर्शिदाबाद और 24-परगना घुसपैठ के लिए बदनाम है। इसके अलावा हुगली नदी और जंगल के रास्ते से घुसपैठ होती है। सैफ के हमलावर शरीफुल इस्लाम ने छह माह पहले बॉर्डर किनारे बहने वाली दावकी नदी को पार करके भारत में घुसपैठ की थी। 22 जनवरी को हरियाणा के रेवाड़ी में 15 बांग्लादेशी पकड़े गए, जो 15 साल पहले भारत आए थे। फरवरी 2024 में आगरा से 40 बांग्लादेश घुसपैठिये पकड़े गए थे। रिपोर्टस के मुताबिक, बॉर्डर क्रॉस कराने वाले एजेंट हर बांग्लादेशी घुसपैठिए से चार से 15 हजार रुपये वसूलता है। फिर उन्हें नकली दस्तावेज और नौकरी के लिए अलग-अलग पैसे देने होते हैं। मुंबई पुलिस ने एक रैकेट का खुलासा किया था, जिसमें पता चला कि एजेंटों ने घुसपैठ से लेकर नौकरी दिलाने तक के रेट तय कर रखे हैं।

आप और कांग्रेस ने उतार दिए मुस्लिम प्रत्याशी, त्रिकोणीय मुकाबले में फंसी बल्लीमारान सीट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की हाई प्रोफाइल सीटों में पुरानी दिल्ली की बल्लीमारान सीट भी शामिल है। कभी कांग्रेस का गढ़ रही सीट अभी आम आदमी पार्टी के पास है। सीट की एक बड़ी खासियत यह है कि इस सीट से जीत दर्ज करने वाले विधायक को दिल्ली मंत्रिमंडल में जगह मिलती है। 2015 से इस सीट पर आप का कब्जा है। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) आज तक यह सीट जीत नहीं सकी है, लेकिन इस बार भगवा दल ने कमल बागड़ी को उम्मीदवार बनाया है। बागड़ी युवा और निगम पार्षद हैं। वहीं कांग्रेस ने अपने पुराने चेहरे और पूर्व मंत्री हारुन यूसुफ पर फिर से दांव लगाया है। वहीं आप ने दिल्ली सरकार में मंत्री इमरान हुसैन को मौका दिया हैं।

इस सीट को जीतने के लिए तीनों दलों ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। जानकार मानते हैं कि सीट पर मुकाबला रोचक और त्रिकोणीय मुकाबले में फंसा हुआ है। यह सीट मुस्लिम बहुल है। मुस्लिम मतदाताओं की एकजुटता सीट पर जीत और हार तय करने में बड़ी भूमिका निभाती है। जानकारों का मानना है कि इस चुनाव में आप और कांग्रेस दोनों के उम्मीदवार मुस्लिम समुदाय से हैं। इसमें यदि मुसलमान वोटरों में बिखराव हुआ, तब इसका फायदा भाजपा को मिल सकता है। भाजपा भी मुस्लिम वोटों में सेंधमारी की कोशिश कर रही है। कहा जा रहा है कि मुस्लिम वोटर जिसके पक्ष में लामबंद होते हैं, उसकी जीत की राह आसान हो जाएगी।

बल्लीमारान सीट पर मतदाताओं की कुल संख्या 153231 है। इसमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 83202 और महिला वोटरों की संख्या 70013 है। इस सीट पर थर्ड जेंडर भी 16 हैं। पिछले 2020 के चुनाव नतीजों में सीट पर आप उम्मीदवार इमरान हुसैन विजयी हुए। हुसैन को 64.87 फीसद यानी 65,612 वोट मिले। दूसरे स्थान पर भाजपा रही। भाजपा उम्मीदवार को 29.12 फीसद यानी 28,995 वोट और तीसरे स्थान पर रहने वाली कांग्रेस को 4.75 प्रतिशत वोट यानी 4797 वोट मिले। कांग्रेस ने इस बार अपना पूरा दम-खम लगा दिया है।

बल्लीमारान सीट पर 1993 से 2013 तक कांग्रेस का कब्जा रहा। सीट से कांग्रेस के यूसुफ लगातार जीत दर्ज करते आए लेकिन 2015 के चुनाव में आप ने पहली बार इस सीट से जीत दर्ज की। तब से यह सीट उसके पास है। घनी आबादी और तंग गलियों वाले बल्लीमारान के बाजार में दूर-दूर से लोग खरीदारी और कारोबार के लिए आते हैं। यहां जाम की समस्या आम बात है। सड़क किनारे पोलों पर लिपटे और लटके बिजली के तार यहां की खास पहचान हैं। जगह-जगह कूड़ा और कचरा भी समस्या है। लोग इसका प्रबंधन चाहते हैं।

सैफ पर हमला मामले में नया मोड़, आरोपी शहजाद के पिता का बयान, सीसीटीवी फुटेज में दिखा शख्स मेरा बेटा नहीं

मुंबई (एजेंसी)। अभिनेता सैफ अली खान पर हमले मामले में एक बड़ा मोड़ आ गया है। जहां अभी तक सोशल मीडिया पर इसकी चर्चा हो रही थी, वहीं अब आरोपी शहजाद के पिता ने भी चौंकाने वाला बयान दिया है। पुलिस की गिरफ्त में आरोपी शहजाद के पिता रुहैल अमीन फकीर ने कहा है कि सैफ के घर में सीसीटीवी में जो संदिग्ध दिख रहा है वहां उनका बेटा नहीं है।

सैफ पर बीते गुरुवार की रात हुए हमले के बाद पुलिस ने कई संदिग्ध को पकड़कर दावा किया कि उन्होंने आरोपी को पकड़ लिया है। घटना के दो दिन बाद पुलिस ने ठाणे के इलाके से मोहम्मद शरीफुल इस्लाम शहजाद को गिरफ्तार किया। अब शहजाद के पिता का बयान सामने आया है, जो होश उड़ाने वाला है। शहजाद के पिता का नाम रुहैल है। उन्होंने बयान दिया है उससे पुलिस के दावे पलटते हुए दिख रहे हैं। उन्होंने कहा है कि सैफ पर हमले के बाद सीसीटीवी में जो दिखा वहां मेरा बेटा नहीं है।

एक मीडिया हाऊस ने उन्हें वॉट्सएप पर सीसीटीवी और उनके बेटे दोनों की तस्वीर भेजी, जिस पर उसके पिता ने दावा किया कि दोनों अलग-अलग हैं। अमीन का कहना ही कि पुलिस ने जो सीसीटीवी में फोटो दिखाई है वहां कोई और है। उन्होंने कहा, मैं उसका पिता हूं, अच्छे से देखने के बाद ही कह रहा हूं। सैफ के घर सीसीटीवी में दिख रहा संदिग्ध मेरा बेटा नहीं है। जो अरेस्ट हुआ है, वह मेरा बेटा है। रुहैल अमीन फकीर ने कहा, सीढ़ियो पर जो दिख रहा है वहां मेरा बेटा नहीं है। मैं उसका बाप हूं। जो सीसीटीवी में दिखा है, उसकी कद-काठी भी मेरे बेटे जैसे नहीं है। मैंने कई बार फोटो देखी है, अपने परिवार को भी दिखाया है।

हालांकि पुलिस का कहना है कि उन्होंने मामले में हर तरीके से जांच कर ली है और पूरी तरह से जांच-पड़ताल के बाद ही इस फैसले तक पहुंची है। मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच टीम ने दावा किया है कि घटनास्थल से शरीफुल के 19 फिंगर प्रिंट्स मिले, जिनकी जांच करवाई जा रही है।

भारत में मतदाताओं की संख्या बढ़कर एक अरब के करीब पहुंची

नई दिल्ली। भारत में मतदाताओं की संख्या अब 99.1 करोड़ हो गई है, जो पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव के समय 96.88 करोड़ थी। निर्वाचन आयोग ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस से पहले जारी एक बयान में कहा कि मतदाता सूची युवा और लैंगिक रूप से संतुलित दिखती है, जिसमें 18 से 29 आयु वर्ग के 21.7 करोड़ युवा मतदाता हैं और मतदाता लैंगिक अनुपात 2024 में 948 से छह अंक बढ़कर 2025 में 954 हो गया है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस हर साल 25 जनवरी को निर्वाचन आयोग के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसकी स्थापना 1950 में हुई थी। दिल्ली विधानसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के लिए 7 जनवरी को यहां संवाददाता सम्मेलन में मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार ने कहा था कि भारत जल्द ही एक अरब से ज्यादा मतदाताओं का नया रिकॉर्ड बनाएगा।

रहें सावधान... फिर आ रहा तेज सर्दी के साथ, बारिश और ओलावृष्टि का दौर

नई दिल्ली (एजेंसी)। सूरज को देखकर फिर बादल घुमड़ने लगे हैं। कई दिनों से निकल रही धूप के बाद बारिश की दस्तक से ठंड का प्रकोप बढ़ने वाला हैं। पहले ही जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में हो रही बर्फबारी के कारण मैदानी इलाकों में सर्दी बढ़ने की आहट हो चुकी है। इधर, दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा-पंजाब में शीतलहर के साथ पाला भी परेशान कर रहा है। इसमें से कई राज्यों में कोल्ड डे जैसी स्थिति बनी हुई है। अब फिर आईएमडी ने 24 जनवरी से लेकर सप्ताह के अंत तक कई राज्यों में बादल छाए रहने के साथ बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु में अगले 2 दिन तक आंधी के साथ बारिश और आकाशीय बिजली गिरने की संभावना जाहिर की गई है। आईएमडी आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से मौसम में बदलाव की बात कर रहा है। मौसम विभाग ने बताया है कि 24 से लेकर 26 जनवरी तक बादलों की आवाजाही के साथ बारिश हो सकती है। कई राज्यों तेज हवाओं के साथ बारिश और बिजली कड़कने सहित ओलावृष्टि होने का अलर्ट है। केरल और तमिलनाडु में भी आगामी 3 दिन तक तेज आंधी तूफान के साथ भारी बारिश और आकाशीय बिजली गिरने का अलर्ट है। इधर, उत्तर भारत में कोहरे की धुंध के कारण बड़ी संख्या में ट्रेन और हवाई परिवहन बुरी तरह से प्रभावित है। कई ट्रेनों के विलंब से चलने और कईयों को रद्द कर दिया गया है।

आईएमडी के मुताबिक, एनसीआर के लोगों का अब अगले एक हफ्ते तक कोहरे और तेज हवाओं का सामना करना पड़ेगा। इसकारण ठंड फिर बढ़ जाएगी। 24 जनवरी को अधिकतम तापमान 20 डिग्री और न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। 25 जनवरी को अधिकतम तापमान 20 और न्यूनतम तापमान 9 डिग्री रहने की संभावना है। 26, 27 और 28 जनवरी को एनसीआर में घना कोहरा छाया रहेगा। इस दिनों अधिकतम तापमान 20 डिग्री और न्यूनतम तापमान 8 डिग्री रहने की उम्मीद है। मौसम में बदलाव के कारण डॉक्टरों ने लोगों को सलाह दी कि वे लापरवाही ना बरतें।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह. 9334331934, 9386895799, 9507466535, RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902